केरल ज्योति

जुलाई 2025

ISSN 2320-9976
UGC Care - List

ISO 9001: 2015

केरल हिंदी प्रचार सभा

केरल हिंदी प्रचार सभा के आचार्य / बी.एड् के दीक्षांत समारोह के विविध दृश्य

आदरणीय केरल के राज्यपाल श्री.राजेन्द्र अर्लेकर को सभा के मंत्री पुस्तकें भेंट करते हैं।

केरलज्योति
केरल हिंदी प्रचार सभा की मुख पत्रिका
(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

केरल हिंदी प्रचार सभा के संस्थापक
स्व. के वासुदेवन पिल्लै
पूर्व समीक्षा समिति
प्रो (डॉ) एन रवींद्रनाथ
डॉ के एम मालती
प्रो(डॉ) आर जयचन्द्रन
प्रो (डॉ) जयश्री एस आर
परामर्श मंडल
डॉ तंकमणि अम्मा एस
डॉ लता पी
डॉ रामचन्द्रन नायर जे
प्रबन्ध संपादक
गोपकुमार एस (अध्यक्ष)
मुख्य संपादक
प्रो डी तंकप्पन नायर
संपादक
डॉ. एम एस विनयचंद्रन
डॉ. रंजीत रविशैलम
संपादकीय मंडल
अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)
सदानन्दन जी
मुरलीधरन पी पी
प्रो रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एल्सी सामुवल
आनन्द कुमार आर एल
प्रभन जे एस
डॉ नेलसन डी

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पुष्प : 62 दल : 4 अंक: **जुलाई 2025**

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

दीक्षांत समारोह-2025 - **अधिवक्ता (डॉ) मधु बी** 6

श्रीनारायणगुरुचरित महाकाव्य - **प्रो.डी.तंकप्पन नायर** 7

अमृत काल में हिंदी सिनेमा का परिदृश्य - **डॉ गोकुल क्षीरसागर** 12

गाँधीवादी आदर्श की कसौटी पर 'इन्हीं हथ्यारों से' : एक विश्लेषण
डॉ.रश्मी यू एम 16

समकालीन संदर्भ में भारतीयता - **रोषिनी एस** 19

ब्रज क्षेत्र की ग्रामीण महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने में
मीडिया की भूमिका का अध्ययन - **आशा शर्मा एवं डॉ रंजन सिंह** 21

मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में
पारिवारिक जीवन संघर्ष - **ब्रीस के रुद्धन** 25

वृद्ध जीवन के संघर्ष का बयान : गिलिगडु-**डॉ तेरेसा टिनसी टी जी** 28

रचनात्मक कल्पनाशीलता और विज्ञानः अध्ययन में समय और
श्रम की बचत - **विनोद शर्मा** 31

श्रीमद्भगवदगीता में धर्म और सनातन धर्मः एक अध्ययन-
डॉ श्रीकान्त हाजरा 35

कमर मेवाड़ी की कहानियों में आधुनिक युगबोध - **रजाक शाह कादरी** 38

'मैं पायल' उपन्यास में चित्रित किन्नर जीवन का संघर्ष - **अंजु जॉय** 42

आइए हम इस लत से मुक्ति पाएँ (कविता) - **डॉ जिनो पी वरुगीस** 47

अध्यापन पेशे की आदर्श शख्सियत : डॉ वी के हरिहरन
उण्णित्तान - **डॉ एन सुरेश** 48

देवयानम् (आत्मकथा)
मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा, अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना 50

ज़िंदगी : एक लोलक (आत्मकथा)
मूल : श्रीकुमारन तंपी अनुवाद : डॉ.पी.जे.शिवकुमार 52

प्रश्नोत्तरी - **डॉ.रंजीत रविशैलम** 54

मुखचित्र : केरल के राज्यपाल माननीय राजेन्द्र अर्लेकर जी दीप प्रज्वलित कर दीक्षांत समारोह का उद्घाटन कर रहे हैं।

लेखकों से निवेदनः

• हिन्दी और इतर भारतीय भाषाएँ, साहित्य, संस्कृति आदि पर लिखी गयी उच्च स्तरीय मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ आमंत्रित हैं। • भाषा, साहित्य, संस्कृति आदि पर आयोजित समारोहों, चर्चाओं, संगोष्ठियों के समाचारों का भी स्वागत है। इन समाचारों को प्रस्तुत करनेवाले का नाम और पूरा पता भी लिख भेजें। • भारतीय भाषाओं से अनूदित कविता, कहानी भी भेजें। उनके साथ मूल लेखक से प्राप्त अधिकार पत्र भी प्रेषित करें। • प्राकाशनार्थ रचनाएँ साफ-साफ अक्षरों में लिखकर अथवा टंकित कर या **डी.टी.पी.** करके **सी.डी.** में भेजें। कृपया कार्बन प्रति न भेजें। • स्वीकृत रचनाएँ यथासमय पत्रिका में प्रकाशित की जाएँगी। • आप ई-मेल द्वारा भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं। ई-मेल में Microsoft Word or Pagemaker फाइल में भेजिए। ई-मेल आईडी :khpsabha12@gmail.com • अपनी रचना के साथ पूरा पता (जिला, राज्य और पिनकोड सहित), लघु परिचय और फोटो भी भेजें।

संपादक, 'केरल ज्योति', केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम-695 014

सभा का मुख्यालय और उसकी गतिविधियाँ

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के वषुतक्काड़ में सभा का मुख्यालय स्थित है। सभा के मुख्य परिसर में सभा के संस्थापक मंत्री की पावन स्मृति में श्री वासुदेवन पिल्लै स्मारक हिंदी ग्रंथालय, स्नातकोत्तर अध्ययन अनुसंधान केंद्र, साहित्याचार्य महाविद्यालय, केंद्रीय हिंदी महाविद्यालय, टंकण और आशुलिपि संस्थान, परीक्षा भवन, राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, राष्ट्रज्योति पब्लिशेर्स के प्रकाशन अधिकारी का कार्यालय, हिंदी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी.एड़) और केरल विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त शोध केंद्र हैं।

विज्ञापन दर (साधारण अंक)

	मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4 (रंगीन)	रु.2500.00	25,000.00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 (रंगीन)	रु.2000.00	20,000.00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.1000.00	10,000.00
साधारण पृष्ठ 1/2	रु.600.00	6,000.00
साधारण पृष्ठ 1/4	रु.350.00	3,500.00

एक प्रति का मूल्य रु. 40/-   आजीवन चंदा : रु. 4000/-   वार्षिक चंदा : रु. 400/-

A /c No. 57022786007   IFS Code : SBIN0070033
State Bank of India, Vazhuthacaud Branch

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, वषुतक्काडु, तिरुवनन्तपुरम-695 014.
दूरभाष:0471-2321378, 2329200, 2329459. फैक्स:0471-2329200 ई-मेल : khpsabha12@gmail.com

दूरभाष : 0471-2321378, 2329200, 2329459
फैक्स : 0471-2329459
मोबाईल : संपादक : 7898515222/ 9447657301

E-mail : khpsabha12@gmail.com
Website : www.keralahindipracharsabha.in

केरलज्योति
सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
जुलाई 2025

संपादकीय

केरल में हिंदी की विकास यात्रा में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका

केरल में हिंदी की विकास यात्रा का आरंभ महाराज स्वातितिरुनाल (1813-1846) से माना जाता है। उन्होंने वैष्णव भक्तिरस पूर्ण कितने ही पद हिंदी में रचे। तो भी केरल जनसामान्य में हिंदी उस समय फैलने लगी जब स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गाँधीजी के आह्वान पर दक्षिण भारत में हिंदी का व्यापक अध्ययन-अध्यापन शुरू हुआ। पहले चेन्नै में स्थापित (1918) दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के तहत केरल में हिंदी प्रचार अभियान आरंभ हुआ और बाद में (1934) में स्थापित केरल हिंदी प्रचार सभा के तहत हिंदी का प्रचार ज़ोर पकडता गया।

केरल में हिंदी का प्रचार बढ़ाने में एक ओर जहाँ केरल की हिंदी पत्रकारिता ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है वहाँ दूसरी ओर हिंदी का विकास करने में यह पत्रकारिता बहुत सहायक रहीं।

केरल में प्रकाशित प्रथम हिंदी पत्रिका कौन-सी थी इस संबंध में मतभेद है। डॉ सी के जेइम्स ने लिखा है कि अभय देव ने 1941 में विश्वभारती नामक हिंदी पत्रिका का श्रीगणेश किया। लेकिन डॉ पी लता ने 'केरल की हिंदी पत्रकारिता का इतिहास' शीर्षक अपने ग्रंथ में लिखा है कि 1941 में जी नीलकंठन द्वारा शुरू की गई 'हिंदी मित्र' शीर्षक पत्रिका केरल में प्रकाशित प्रथम हिंदी पत्रिका थी। तदनंतर अब तक केरल में दर्जनों हिंदी पत्रिकायें निकली हैं। उनमें अधिकांश कुछ समय तक ही जीवित रही। केरल से प्रकाशित एकमात्र हिंदी दैनिक 'केरल की आवाज़' की संपादिका एस सजित कुमारी, त्रिभाषिक साप्ताहिक 'राष्ट्रवाणी' के संपादक के वासुदेवन पिल्लै, बहुचर्चित पाक्षिक युगप्रभात के संपादक एन वी कृष्णवारियर एवं के रविवर्मा, 'भाव और रूप' एवं 'केरल पत्रिका' मासिक पत्रिकाओं के संपादक पी जी वासुदेव, 'सारथी' के संपादक अप्पु मास्टर, 'प्रताप' के संपादक डी विश्वनाथ मल्लय्या, 'ललकार' के संपादक पी बालकृष्ण और पी नारायण, 'विश्व भारती' के संपादक अभयदेव तथा नारायण देव, 'अरविंद' के संपादक चित्तरंजन, 'संगम' के संपादक टी के प्रभाकरन, 'केरल ज्योति' के संपादक के नारायणन, के जी बालकृष्ण पिल्लै, के वी कृष्णनकुट्टि, डॉ एस तंकमणि अम्मा, डॉ एम एस राधाकृष्ण पिल्लै एवं प्रोफ डी तंकप्पन नायर उल्लेखनीय हैं। इसके अलावा 'संग्रथन' के संपादक पी जी वासुदेव, डॉ वी वी विश्वम, डॉ एम एस विनयचंद्रन, द्विमासिक 'आर्यकैरली' के संपादक एन वेंकटेश्वरन, त्रैमासिक 'हिंदी साहित्य मंडल पत्रिका' के संपादक डॉ एन ई विश्वनाथ अय्यर, रविवर्मा एवं टी एन विश्वंभरन, 'शोध पत्रिका' के संपादक डॉ एन चंद्रशेखरन नायर, 'ओमेगा' के संपादक डॉ तिरुमला चंद्रन, डॉ जे रामचंद्रन नायर, ए एस लता एवं सी शिवन, 'संस्थान समाचार' के संपादक डॉ एच परमेश्वरन, 'हिंदी मित्र' के संपादक जी नलकंठन नायर, चतुर्मासिक 'दर्पण' कं संपादक डॉ एन रवींद्रनाथ, डॉ एस तंकमणि अम्मा एवं डॉ राखी बालगोपाल, अर्धवार्षिक 'शोध क्षितिज' के संपादक डॉ के एस माथ्यु, वार्षिक अनुशीलन के संपादक डॉ एन ई विश्वनाथ अय्यर, डॉ एन रामन नायर, डॉ पी वी विजयन, डॉ ए अरविंदाक्षन, 'संवेदना' के संपादक डॉ पावूर शशींद्रन आदि उल्लेखनीय हैं। 'केरल ज्योति' पत्रिका के संपादक गण डॉ पी लता के आभारी हैं कि प्रस्तुत संपादकीय तैयार करने में उनके द्वारा रचित 'केरल की हिंदी पत्रकारिता' शीर्षक ग्रंथ काफ़ी सहायक रहा है।

प्रो डी तंकप्पन नायर, मुख्य संपादक

दीक्षांत समारोह - 2025

अधिवक्ता (डॉ) मधु बी

केरल हिंदी प्रचार सभा के आचार्य प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी एड् कॉलेज आफ़ टीचर एड्यूकेशन) का बिरुद दान सम्मेलन 18 जून 2025 बुधवार के पूर्वाह्न 11 बजे सभा के एम के वेलायुधन नायर प्रेक्षागृह में आयोजित हुआ।

2023-2025 वर्ष के आचार्य कोर्स की परीक्षा के प्रमाण पत्र छात्राध्यपकों को वितरित किया गया।

उक्त सारस्वत सम्मान समारोह का समुद्घाटन भद्र दीप जलाकर केरल के माननीय राज्यपाल महामहिम श्री राजेंद्र विश्वनाथ अरलेकर ने किया। केरल विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ मोहनन कुन्नुम्मल सम्मेलन के अध्यक्ष रहे।

आचार्य कॉलेज की प्राचार्या डॉ मधुबाला जयचंद्रन ने विशिष्ट अतिथियों का भव्य स्वागत किया। केरल हिंदी प्रचार सभा के मंत्री अधिवक्ता (डॉ) बी मधु जी ने अपने आमुख भाषण में केरल में हिंदी के क्षेत्र में सभा द्वारा किए जानेवाले अनेक कार्यक्रमों व पठन-पाठन कार्य-योजनाओं की संक्षिप्त सूचना दी। उन्होंने सगौरव कहा कि केरल के चौदहों जिलाओं में फैले सभा के कार्य एवं सेवा से छात्रसमूह, हिंदी प्रेमी व सेवी ज़रूर लाभ उठाते हैं। हाल ही में सभा को प्राप्त वैश्विक सम्मान-उपलब्धि का स्मरण यों दिलाया - 'इस विख्यात हिंदी संस्था को उसकी प्रदेयताओं के लिए वर्ष 2022 में फ़िजी में आयोजित 12 वें विश्व हिंदी सम्मेलन में सर्वोच्च पुरस्कार 'विश्व हिंदी सम्मान' से विभूषित किया गया।' आचार्य उपाधि प्राप्त छात्राध्यापकों का अभिनंदन उन्होंने किया।

केरल हिंदी प्रचार सभा के अध्यक्ष एस गोपकुमार जी द्वारा पढ़ित 'प्रतिज्ञा-पत्र' का प्रशिक्षार्थियों द्वारा पुनः वाचन किया गया।

डॉ मोहनन कुन्नुम्मल जी ने अपने अध्यक्ष भाषण में हर्ष प्रकट किया कि भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं संपर्क भाषा हिंदी को मज़बूत बनाने में केरल हिंदी प्रचार सभा सर्वथा श्रमरत है। दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु महात्मा गाँधी के योगदान, खासकर दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की देन, स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका आदि का उल्लेख उन्होंने किया। आचार्य उपाधि प्राप्त अध्यापक-छात्रों का अभिनंदन करते हुए कुलपति ने कहा कि इस प्रकार का सम्मान समारोह सकारात्मक एवं प्रेरणादायक है। भारतवर्ष में प्राचीन काल से उदात्त गुरु-संकल्प रहता आया है। संस्कृति की सही पहचान गुरु की पहचान है। उन्होंने ज़ोर दिया कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विस्फोटात्मक वातावरण में मानवीय मान्यताओं व मूल्यों का अपना अलग महत्व है। इस संदर्भ में शिक्षकों की महती भूमिका है।

केरल हिंदी प्रचार सभा की पाठ्य समिति की अध्यक्षा एवं पूर्व आचार्या, केरल विश्वविद्यालय, डॉ एस तंकमणि अम्मा का आशीर्वाद भाषण बहुत असरदार रहा। मंच पर कुलाधिपति और कुलपति का साथ-साथ विराजित होकर प्रशिक्षार्थियों को अभिनंदित करने के सौभाग्य पर उन्होंने साधुवाद प्रकट किया। भारतीय परंपरा और आधुनिक परिवेश के बीच की खाई की विवेचना की गई।संकेत भी दिया गया कि विज्ञान, सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्वभाषा हिंदी की उपयोगिता बढ़ रही है।

सभा के कोषाध्यक्ष सदानंदन जी ने भी अपने आशीष भाषण में कहा कि सभा द्वारा आयोजित दीक्षांत समारोह युवा पीढ़ी के लिए ज़रूर प्रेरणादायक सिद्ध होगा। हिंदी की श्रीवृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहने का संदेश भी दिया गया।

महामहिम राज्यपाल ने अपने उद्घाटन भाषण में समर्थन किया कि केरल हिंदी प्रचार सभा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं सेवा के क्षेत्र में अपनी महती कीर्ति सदा स्थापित करती आ रही है। महात्मागाँधी के अभियान से जुड़ी हिंदी की भूमिका का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भाषाएँ ही राष्ट्र की वैचारिक सभ्यता बनायी रखती हैं। भाषा संवेदनशील होने से ही संस्कृति जीवित रहेगी। हिंदी भारत की राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की भाषा है। अलगाव की भावना भाषा के संबंध में न होनी चाहिए। विरोध पीड़ा दायक है। शायद राजनैतिक कारण विरोध के मूल में हो। त्रिभाषा सूत्र के कार्यान्वयन में ठोस कदम उठाने की ज़रूरत पर उन्होंने आग्रह प्रकट किया। बिरुद-पदधारियों का अभिनंदन करते हुए राज्यपाल ने आर्षभारतीय गुरु-संकल्प के महत्व पर छात्रों का विशेष ध्यान दिलाया। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना पर भी प्रबल विचार प्रस्तुत किए। अंग्रेज़ी के वर्चस्व पर अपनी चिंता प्रकट की गई।

राष्ट्रगीत के अनंतर सम्मान समारोह- सभा समाप्त हुई।

मंत्री, केरल हिंदी प्रचार सभा

श्रीनारायणगुरुचरित महाकाव्य

प्रो.डी.तंकप्पन नायर

उनतीसवाँ सर्ग

सन्यास आश्रम

1. शिष्यगण बोले हे ज्ञानियों में श्रेष्ठ ! हमें समझाइए संन्यास
आश्रम के धर्मों के विषय में सुनकर शिष्यों की जिज्ञासा बोले
गुरुदेव कि जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य व गार्हस्थ्य विधिवत् अनुष्ठित
करने के बाद शान्त बन जाता है वह ले सकता है संन्यास।

2. नारी भी ले सकती है संन्यास यदि वह हो मुमुक्षु और
समर्थ नित्यानित्य वस्तुओं की विवेचना करने में और
की हो उसने सब प्रकार की आशाओं की उपेक्षा
तो पुरुष की भाँति वह भी ले सकती है संन्यास।

3. यदि कोई ब्रह्मचारी अथवा गृहस्थ वैराग्यपूर्वक प्रार्थना करे
संन्यास स्वीकारने की तो गुरु को उसे तुरन्त दीक्षा देनी चाहिए
संन्यास की और बिना गुरु की आज्ञा के मात्र अपनी इच्छा से
चंचल मनवाले व्यक्ति को संन्यास नहीं लेना है कभी भी।

4. संन्यासी की मृत्यु के बाद नहीं करना चाहिए दाहसंस्कार
पार्थिव शरीर का और दफ़नाना चाहिए उसे शास्त्र-विधि
के अनुसार और लगाना है समाधि-स्थल पर बरगद बेल या
आम का पेड़ और नहीं आवश्यक है कोई शुद्धि कर्म।

5. संन्यासी दूसरों के लिए करें निष्काम कर्म
जिससे होगी हृदयशुद्धि व ज्ञानवृद्धि क्रमशः और
रुष्ट मनुष्य से भी संन्यासी न हो नाराज़ और घृणा
नहीं करें अपनी भर्त्सना करनेवालों के साथ भी।

6. संन्यासी हो मितभोजी और अमित भोज बनेगा कारण
वासना आशा क्रोध व बीमारी का और मित भोजन के साथ
निर्जन स्थान में वास से उसे इंद्रिय-संयमन पाकर ध्यान का
अभ्यास करना चाहिए उत्तम रीति से नियमित निरन्तर।

7. प्रतिदिन सबेरे और शाम को शुद्ध होकर स्नान आदि से
संन्यासी को विधिवत् मूलाधार स्वाधिष्ठान मणिपूरक
अनाहत विशुद्धि व आज्ञा इन छह प्राणायामों को और
तदनन्तर जप करना है प्रणवाक्षर का एक सौ आठ बार।

8. मानवता का सब से श्रेष्ठ धर्म है संन्यास जिसे स्वीकार
करने के बाद जो किसी भ्रांति निमित्त नीच कर्म करने लगे
तो उसे बनना पडेगा दूसरों के उपहास का पात्र और
होगा अवश्य उसका पतन भी इसलिए संन्यासी हो दृढव्रती।

9. संन्यासी को रहना है धर्म के अधीनस्थ और न करनी
चाहिए दूसरों की चुगलखोरी कभी और जो करता है
ऐसा उसके तप व बुद्धि का हो जाता है नाश और इसलिए
आने न दें अपने धर्म व व्रत में कोई भी भंग।

10. एक ऐसे संन्यासी थे श्रीनारायण गुरु जिन्होंने
सौंपा था पूर्ण विश्वास हिंदू धर्म पर और लक्ष्य बनाया
भौतिक परिवर्तन पर और इस कारण वे रहे तत्पर हिंदू
धर्म के संशोधन में जिस में उन्हें मिली सफलता अभूतपूर्व।

तीसवाँ सर्ग
धर्मपरिवर्तन

1. मिलता है इसका भी कुछ प्रमाण कि कुछ लोगों ने चाहा
गुरुदेव को ईसाई धर्म में लाने को और उनके आगे एक प्रस्ताव
रखा एक पाश्चात्य धर्म-प्रचारक ने और बातचीत के दौरान
तुरन्त ही तिरस्कृत किया गुरुदेव ने इस प्रस्ताव को।

2. समाज-सुधारक सी.कृष्णन सदृश कुछ लोगों ने
रखा प्रस्ताव गुरुदेव के समक्ष बुद्ध-धर्म स्वीकारने को
इस संबन्ध में महान साहित्यकार व सांस्कृतिक
पुरोधा श्री एम.के.सानु का कथन रखता है बड़ा महत्व।

3. कहा था श्री एम.के.सानु ने कि गुरुदेव अडिग रहे
हिंदू धर्म की मलिनता के विरुद्ध लड़ने की प्रवृत्ति में
वे नहीं थे सन्नद्ध इतने श्रेष्ठ सनातन धर्म की उपेक्षा को
इसलिए वे रहे अटल सुधार कर्मों में निष्ठा से निरन्तर।

4. इन दिनों कुछ लोग जो ठीक से नहीं समझते गुरुदेव को
बात करते हैं 'श्रीनारायणधर्म' नामक नये धर्म की
एक बार गुरुदेव ने कहा अपने शिष्यों द्वारा पूछने पर स्पष्ट
शब्दों में कि आज तक जितने भी धर्म हैं वे तो हैं काफी।

5. सभी धर्म उद्घाटन करते हैं एक ही सत्य का कई
भाषाओं और कई शैलियों में मानव को लक्ष्य कर कि
भला बनना चाहिए मनुष्य को किंतु आज भी लड़ते हैं
धर्म के नाम पर और भंग करते हैं समाज में शान्ति।

6. इस कारण हमारे द्वारा आगे और एक नये धर्म की

स्थापना करना होगा इस झगड़े को बढ़ावा देने की तरह और
गुरुदेव को जितने भी अवसर मिलते थे व्यक्त करने को
जाति की निस्सारता को करते थे उनका उपयोग सशक्त वाणी में।

7. गुरुदेव की दृष्टि में एक ही जाति है वह है मानव जाति
इस कारण कोई गलती नहीं है परस्पर विवाह करने
अथवा एकसाथ भोजन करने में और उन्होंने अपने ही संघ
एस.एन.डी.पी. में देखकर बढ़ती जाति-भावना कहा यों।

8. हमको जाति-भेदभाव छोड़े बीत गये संवत्सर किंतु एक
विशेष वर्ण के लोग हमें मानकर उनके वर्ण के करते
आ रहे हैं बर्ताव और मैं नहीं हूँ किसी वर्ण या धर्म का
अंग और मैंने संबन्ध छोड दिया है इस संस्था से।

9. श्रीनारायण गुरु ने जाति-भेद की तरह खंडन किया था
धर्म-विद्वेष का भी और प्रचार किया था उन्होंने सब धर्मों से
परे अध्यात्म सत्य का जो संपन्न होता है सार्वलौकिक
अध्यात्म सत्य से जो थी एक नई आध्यात्मिक क्रांति।

इकतीसवाँ सर्ग
श्रीनारायणगुरु-रचित साहित्य

1. भारत में बोली जाती है अनेक भाषायें जिनमें है समृद्ध
साहित्य भी और इन भाषाओं में निहित है भारत वर्ष के प्राण
अपनी कई ज्ञानात्मक विचारात्मक भक्तिपरक कृतियों में
किया है प्रतिपादन विश्वजनीन भातृभावना के मूल्यों का।

2. आशानजक बात है यह कि विगत कुछ वर्षों से हो रहा है
कुछ परिवर्तन देश में और अनुवाद के माध्यम से हो
रहा है उत्तम ग्रंथों का अनुवाद जिससे मिल रहा है बढ़ावा
भारत की भावात्मक एकता को जो है शुभकर मंगलप्रद बात।

3. श्रीनारायणगुरु में थी कवि-प्रतिभा सहज रूप में जो चमक
उठी थी स्वाध्याय व संस्कृत और तमिल भाषा ज्ञान से
यद्यपि उनका लक्ष्य न था कवि बनना तदपि अपने विचारों को
अभिव्यक्ति देने को आश्रय लिया उन्होंने कविता के माध्यम का।

4. संख्या में उनकी रचनायें नहीं हैं बहुत ज़्यादा किंतु
उनका प्रभाव रहा बहुत गहरा जन-मन में और इन
रचनाओं का संपादन किया था उनके प्रिय शिष्यों ने और
कई विद्वानों ने तपस्या की है उनकी व्याख्या करने को।

5. उनकी रचनाओं के मलयालम व्याख्यताओं में हैं सर्वप्रमुख

प्रोफेसर जी.बालकृष्णन नायर एवं डॉ.टी.भास्करन और
सन् दो हज़ार में, क्रांतिकारी संत श्रीनारायणगुरु की चुनी हुई
कविताएँ शीर्षक से प्रकाशन किया है हिंदी में डॉ.जी.गोपिनाथन ने।

6. डॉ.जी.गोपिनाथन द्वारा लिखित 'श्रीनारायणगुरुदेवःआध्यात्मिक
क्रांति के अग्रदूत शीर्षक कृति में है ब्योरा गुरुदेव के जीवन
कार्यकलाप और उनकी रचनाओं का और अलावा इसके
मलयालम में प्रकाशित हुए हैं उनके कई गुरुदेव विषयक ग्रंथ।

7. गुरुदेव की प्रकृति थी लंबा भाषण नहीं देने की और
नहीं करते थे वे विस्तृत लेखन भी और बातचीत
होती थी अधिकतर सारगर्भित व दिलचस्प और होती
थी कवितायें संक्षिप्त मार्मिक एवं प्रेरणादायक।

8. गुरुदेव के परवर्ती साहित्यकारों, इतिहासकारों और
आलोचकों ने नहीं किया है उनकी रचनाओं का सही
मूल्यांकन किन्तु दार्शनिक विषयों में रुचि रखनेवाले कुछ
विद्वानों ने किया है गहरा अध्ययन और की है व्याख्या भी।

9. मलयालम के दार्शनिक साहित्य के क्षेत्र में इतनी
मान्यता गुरुदेव के अलावा नहीं मिली है और किसी को भी
वे थे बड़े विद्वान मलयालम संस्कृत व तमिल भाषाओं में
और थे सिद्धहस्त दार्शनिक विषयों को लेकर कवितायें रचने में।

10. गुरुदेव की सारी रचनाओं पर अब तक निकली हैं सौ के
करीब व्याख्यायें और उनको छोड़कर किसी को भी
इतनी लोकप्रियता मान्यता व प्रतिष्ठा नहीं मिली है और उन्होंने
नहीं की थी काव्यरचना अपनी प्रतिभा की अभिव्यक्ति को।

11. विषयवस्तु की दृष्टि से उनकी कवितायें हैं भक्तिपरक
जाति निरूपक दार्शनिक सामाजिक विचारपरक और
उनसे प्रणीत अनेक भक्तिपरक रचनायें थीं उनके युवाकाल की
और संन्यासी के रूप में साधना व तपस्या काल की।

12. उनकी प्रारंभिक कवितायें ज़्यादातर रची गयी थीं संस्कृत में
जो अपनी भक्ति को अभिव्यक्ति देने के लिए एवं अन्य
भक्तों को आलापने के लिए गणेश, श्रीकृष्ण, शिव, कार्तिकेय
आदि की स्तुतियाँ रची थीं श्री शंकराचार्य की शैली पर।

13. शिवशतक प्रमुख है गुरुदेव की भक्तिपरक कविताओं में
जिसमें उन्होंने अपनी भक्ति का निवेदन करते हुए शिव के प्रति
शब्दबद्ध किया है अपनी आत्मानुभूतियों व अन्तः संघर्ष को
और उन्होंने तमिल में भी रची हैं भक्तिपरक रचनाएँ अनेक।

14. जैसे कि नाम से सूचित है शिवशतक में हैं सौ श्लोक

जिनमें ओतप्रोत है अद्वैत का दर्शन पुष्प में सुगंधि की भाँति
दृष्टि में गुरुदेव की यह संपूर्ण जगत है शिवमय और
शिव है मंगलदायक देवता और समदृष्टि का प्रतीक भी।

15. श्रीशंकराचार्य की भाँति ब्रह्मप्रतीक के रूप में गुरुदेव को
शिव ही अत्यन्त प्रिय था और उन्होंने की थी जितनी भी
प्रतिष्ठायें उनमें अधिकतर थी शिव की ही प्रतिष्ठायें और
स्तोत्र रचना में भी गुरुदेव ने दिया प्राधान्य शिव को ही।

16. करने के बाद शिवप्रतिष्ठा अरुविप्पुरम में गुरुदेव ने की
वहीं पर शिवशतक की रचना भक्तों के लिए और यह
स्तोत्र रचना अत्यन्त सहायक है भक्तों के हृदय में
भक्ति ज्ञान और वैराग्य के भाव के दृढीकरण में।

17. शिव-तत्त्व एक संकल्पना है जाति धर्म व देश के परे
और अन्य धर्म के अनेकों लोग समर्थ नहीं हुए हैं समर्थ
लोक के मंगलदायक और अनुकंपा के प्रतीक शिव को
समझने में सही रूप में जिसे समझना चाहिए दुर्भाग्य ही।

18. श्रीनारायणगुरु-रचित देवी विषयक स्तुतियाँ भी हुई हैं लोकप्रिय
जिनमें हैं उल्लेखनीय 'भद्रकाल्याष्टक' और 'काली नाटक'
कुंडलिनी पर मलयालम में रचित एक अपूर्व गीत है 'कुंडलिनी गीत'
जिसमें स्पष्ट होती है उनकी शिवभक्ति प्रमुख रूप से।

19. कार्तिकेय या सुब्रह्मण्य पर रचित गुरुदेव के गीतों में ही
प्रकट होता है उनकी भक्ति का स्वरूप ज़्यादा इसलिए कि
कार्तिकेय थे उनके इष्टदेवता और उनके गुरुदेव अय्याव स्वामी
और सहयोगी चट्टंपिस्वामी भी बड़े भक्त थे कार्तिकेय के।

20. 'दैवदशकं' है एक सार्वलौकिक प्रार्थनागीत जो
दिखाता है गुरुदेव के भक्ति के औदात्य को जिसकी
शताब्दी मनायी गयी है हाल ही में पूरे केरल में जो
रचा गया था शिवगिरि के बच्चों को गाने के लिए।

21. इसमें हुई है भावप्रवण प्रार्थना कृपासिंधु जगदीश्वर से
भवसागर को पार कराने के लिए और सच्चिदानन्दस्वरूप
परमेश्वर से माया को हटाकर सायुज्य प्रदान करने को
और होती है इच्छा कि विश्व मुखरित हो ईश्वर के जयकार से।

22. 'गुहाष्टकं', 'षण्मुखस्तोत्रं', 'बाहुलेयाष्टकं', 'षण्मुख
दशकं''षण्मुखातुर स्तवन', 'नवमंजरी', 'सुब्रह्मण्य कीर्तन' जैसे
गीतों में कहीं-कहीं कर्तिकेय को शिव के अभेद रूप में
माना है तो और कहीं-कहीं ब्रह्मा के स्वरूप में भी।

(क्रमशः)

अमृत काल में हिंदी सिनेमा का परिदृश्य

डॉ गोकुल क्षीरसागर

(पूर्व प्रकाशित से आगे)

हिंदी सिनेमा का विकास-क्रम : हिंदी सिनेमा के विकास-क्रम को निम्नलिखित चरणों में विश्लेषित किया गया है-

1. मूक सिनेमा (1913 ई. से 1930 ई. तक)

3 मई, 1913 को दादासाहब फाळके द्वारा निर्मित 'राजा हरिश्चंद्र' का प्रदर्शन हुआ और भारतीय चलचित्र के इतिहास में एक गौरवशाली पन्ना लिखा गया। यह भारत की पहली फिल्म थी, जिसका निर्माण सिने-तकनीक के विधिवत् प्रयोग से स्वदेशी कलाकारों द्वारा किया गया था। यह फिल्म बनाने के पहले दादासाहब फाळके ने 'एक पौधे का विकास' नामक लघु फिल्म बनायी थी। इसमें 'सिंगल फ्रेम तकनीक' के द्वारा मटर के दाने को अंकुरित तथा पल्लवित होते हुए दिखाया था। 'राजा हरिश्चंद्र' के निर्माण हेतु पैसा लगानेवालों को भरोसा देने हेतु उन्होंने यह फिल्म बनायी थी। इस प्रकार दादासाहब फाळके द्वारा प्रवर्तित भारतीय चलचित्र धीरे-धीरे भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में परिवर्तित होता गया। 'भारतीय सिनेमा का आरंभिक दौर' मूक-सिनेमा का दौर था। इस काल में दादासाहेब फाल्के द्वारा लंका दहन (1917) बनाई। फिल्म रामायण पर आधारित थी और इसमें अन्ना सालुंके ने राम और सीता दोनों की भूमिका निभाई। इसके पश्चात 'कालिया मर्दन' (1919) तथा 'श्रीकृष्ण जन्म' (1918) आदि फ़िल्में बनाई। दादासाहेब तोरणे ने बनाई 'श्री पुंडलीक' (1912); जे.एफ. मदान की 'सती सुलोचना' (1921), 'राम रज्य' (1922) ; चन्दुलाल शाह की फिल्में 'गुंजन नृत्य' (1929), 'तृष्णा' (1930) ; वी. शांताराम की 'नेताजी पालकर' (1927), 'उदयकाल' (1930) ; हिमांशु राय की 'द लाईट ऑफ एशिया' (1925), 'प्रपंच पाश' (1929) ; अर्देशिर ईरानी की 'वीर अभिमन्यु' (1922), 'नल दमयंती' (1920) आदि इस समय में बनी प्रमुख फ़िल्में थीं। ईरानी ने कई मूक फिल्मों का निर्माण किया। इन प्रमुख फिल्मकारों ने भारतीय सिनेमा की नींव रखी और सिनेमा को एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में स्थापित करने में मदद की। इनके योगदान के बिना भारतीय सिनेमा का इतिहास अधूरा है।

2. सवाक सिनेमा (1931 ई. से 1940 ई. तक) :

भारतीय चलचित्र का कैनवास उसके साथ ध्वनि जुड़ने से और अधिक व्यापक हुआ। 1931 ई. में अर्देशिर इरानी द्वारा निर्मित 'आलमआरा' भारत का प्रथम सवाक् चलचित्र था। 1930 से लेकर 1940 तक का यह युग सवाक फिल्मों का था जिसमें देवकी बोस,चेतन आनंद, नितिन बोस, चेतन आनंद आदि कई महत्वपूर्ण फिल्म निर्देशकों ने टॉकी फ़िल्में बनाई। इस अवधि में बनी प्रमुख फिल्मों में अर्देशिर ईरानी की 'आलम आरा' (1931), 'किसान कन्या' (1937) ; वी. शांताराम की 'अमृत मंथन' (1934), 'धर्मात्मा' (1935), 'आदमी' (1939) देवकी बोस की 'पूर्णा सत्याग्रह' (1932), 'सीता'(1934); सोहराब मोदी की 'पुकार' (1939), सिकंदर (1941); नितिन बोस द्वारा बनाई 'चंडीदास' (1934), जवानी की हवा (1935) ; हिमांशु राय की 'कर्मा' (1933), गोल्डन आइलैंड (1934) ; वी शांताराम की 'अमृत मंथन' (1934), धरती माता (1938) आदि प्रमुख फ़िल्में थीं। इस काल के प्रमुख फिल्मकारों और उनकी फिल्मों ने भारतीय सिनेमा को एक नई दिशा दी और सवाक फिल्मों की नई धारा को स्थापित किया।

3. स्वर्ण युग (1940 ई. से 1960 ई. तक)

इस दौर में चेतन आनंद, सत्यजित राय,मृणाल सेन, ऋत्विक घटक, राज कपूर, गुरु दत्त, बिमल रॉय जैसे महान निर्देशकों ने भारतीय सिनेमा को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया। सामाजिक मुद्दों और स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित कई फिल्में बनीं। जिनमें किस्मत (1943), अनमोल घड़ी (1946), नीचा नगर (1946), अमर ज्योति (1947), आवारा (1951,दो बीघा जमीन (1953), मदर इंडिया (1957), प्यासा (1957), कागज के फूल (1959), मुगल-ए-आज़म (1960), चौधवी का चाँद (1960) आदि प्रमुख फ़िल्में थीं।

4. रंगीन फिल्मों का दौरः (1960 ई. से 1980 ई. तक)

इस दौर में रंगीन फिल्में प्रचलित हो गईं और तकनीकी दृष्टिकोण से फिल्में और उन्नत हुईं। इस दौर में राजेश खन्ना, हेमा मालिनी, संजीव कुमार, अमिताभ बच्चन, धर्मेंद्र जैसे अभिनेताओं का दबदबा रहा। इस अवधि में कई प्रमुख हिंदी फिल्में बनीं, जो भारतीय सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुईं। इस अवधि में बनी कुछ प्रमुख हिंदी फिल्में हैं-काला बाज़ार (1960) निर्देशकः विजय आनंद ; चौदहवीं का चाँद (1960) निर्देशक : मोहम्मद सादिक ; दिल अपना और प्रीत पराई (1960) निर्देशक : कन्हैया लाल; गंगा जमुना (1961) निर्देशकः नितिन बोस ; साहिब बीबी और गुलाम (1962) निर्देशकः अबरार अल्वी ; वक्त (1965) निर्देशकः यश चोपड़ा ; गाइड (1965) निर्देशकः विजय आनंद ; अराधना (1969) निर्देशकः शक्ति सामंत; बॉबी (1973) निर्देशकः राज कपूर; जंजीर (1973) निर्देशकः प्रकाश मेहरा ; शोले निर्देशक : रमेश सिप्पी ; दीवार (1975) तथा कभी कभी (1976) निर्देशक : यश चोपड़ा ; अमर अकबर एंथनी (1977) निर्देशक : मनमोहन देसाई ; डॉन (1978) निर्देशक : चंद्र बरोट आदि।

5. समानांतर अथवा कला सिनेमा (1959 ई. से 1980 ई. तक)

1969 ई. में फिल्म सोसायटी तथा पाश्चात्य फिल्मों के प्रभाव स्वरूप 'समानांतर' अथवा 'कला सिनेमा' का एक महत्वपूर्ण पड़ाव भी रहा जिसमें मणि कौल, मणि रत्नम, अडूर गोपालकृष्णन, बासु चटर्जी, श्याम बेनेगल, मृणाल सेन, सत्यजित राय आदि फिल्मकारों ने भारतीय कला सिनेमा की नींव रखी। नसरुद्दीन शाह, ओम पुरी, स्मिता पाटील, गिरीश कर्नाड, अमोल पालेकर, विद्या सिन्हा आदि नए फिल्म कलाकारों इन फिल्मों में लीड रोल देकर स्टार कास्टिंग की परंपरा को इस समय के फिल्मकारों ने नया प्रयोग किए थे। इसके अंतर्गत सिनेमा शुद्ध सिनेमा अथवा सिनेमा के सौन्दर्यशात्र पर विशेष बल दिया गया। समानांतर सिनेमा का आरम्भ 1969 ई. में प्रदर्शित बासु चटर्जी की फिल्म सारा आकाश, मणि कौल की उसकी रोटी और मृणाल सेन की फिल्म भुवनशोम के द्वारा माना जाता है। इस सिने-परंपरा में प्रमुखतः से अंकुर (1974)-निर्देशकः श्याम बेनेगल, मंथन (1976)- निर्देशकः श्याम बेनेगल, भूमिका (1977)-निर्देशकः श्याम बेनेगल, आक्रोश (1980)-निर्देशकः गोविंद निहलानी, अर्ध सत्य (1983)-निर्देशकः गोविंद निहलानी, मिर्च मसाला (1987)-निर्देशकः केतन मेहता, स्पर्श (1980)-निर्देशकः सई परांजपे, कथा (1982)-निर्देशकः सई परांजपे, पार्टी (1984)-निर्देशकः गोविंद निहलानी, उमराव जान (1981)-निर्देशकः मुजफ्फर अली, निशांत (1975)-निर्देशकः श्याम बेनेगल आदि फिल्मों को रखा जा सकता है।

6. व्यावसायिक सिनेमाः (1980 ई.से 2000 ई. तक)

इस दौर में विशेष प्रभाव (VFX), नई तकनीकों और भूमंडलीकरन का प्रभाव पड़ा। इस पड़ाव के सिनेमा में माधुरी दीक्षित, जूही चावला, काजोल, श्रीदेवी, सनी देओल, शाहरुख खान, सलमान खान, आमिर खान, अजय देवगन जैसे अभिनेताओं को स्टार के रूप में प्रसिद्धी मिली। इस समय की फिल्मों में बॉक्स ऑफिस की दृष्टि से अधिकतम मसाला फिल्में बनाई गई थीं। इस अवधि में बनी अधिकतम फ़िल्में प्रसिद्धि एवं व्यावसायिक दृष्टि से अत्यंत सफल रही।

1980 से 2000 के बीच में कई प्रमुख हिंदी फिल्में बनीं, जिन्होंने भारतीय सिनेमा पर गहरा प्रभाव डाला। प्रमुख फिल्में और उनके निर्देशक हैं-कर्मा (1986)-निर्देशकः सुभाष घई, मिस्टर इंडिया (1987)-निर्देशकः शेखर कपूर, तेजाब (1988)-निर्देशकः एन. चंद्रा, चालबाज़ (1989)-निर्देशकः पंकज पाराशर, मैंने प्यार किया (1989)-निर्देशकः सूरज बड़जात्या, कयामत से कयामत तक (1988)-निर्देशकः मंसूर खान, राम लखन (1989)-निर्देशकः सुभाष घई, अर्ध सत्य (1983)-निर्देशकः गोविंद निहलानी, मासूम (1983)-निर्देशकः शेखर कपूर, जाने भी दो यारों (1983)-निर्देशकः कुंदन शाह, हम आपके हैं कौन (1994)-निर्देशकः सूरज बड़जात्या, दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (1995)-निर्देशकः आदित्य चोपड़ा, राजा हिंदुस्तानी (1996)-निर्देशकः धर्मेश दर्शन, कुछ कुछ होता है (1998)-निर्देशकः करण जौहर, सत्या (1998)-निर्देशकः राम गोपाल वर्मा, लगान (2001)-निर्देशकः आशुतोष गोवारिकर, हम दिल दे चुके सनम (1999)-निर्देशकः संजय लीला भंसाली, दिल से (1998)-निर्देशकः मणि रत्नम, दिल तो पागल है (1997)-निर्देशकः यश चोपड़ा, हम साथ साथ हैं

(1999)-निर्देशकः सूरज बड़जात्या आदि। इस दौर में बनी फिल्मों ने हिंदी सिनेमा के न केवल भारत में बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दर्शक निर्माण किए।

7. नया सिनेमा : (2000 ई. से 2015 ई. तक)

इसके अंतर्गत सन 2000 से वर्तमान समय तक की फ़िल्में रखी गई हैं। इस दौर में मल्टीप्लेक्स और डिजिटल सिनेमाघरों का उदय हुआ। सौ करोड़ बॉक्स ऑफिस कलेक्शन करनेवाली इस समय फिल्मों ने हजार करोड़ क्लब कलेक्शन में परिवर्तित होने लगी। इस प्रकार इस समय में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय सिनेमा का विस्तार हुआ। बाहुबली (2015) और दंगल (2016) जैसी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर बहुत बड़ी हिट साबित हुईं। साथ ही मेनस्ट्रीम हिंदी सिनेमा चुनौती देने विभिन्न भारतीय प्रादेशिक भाषाओं में बनी सफलतम फ़िल्में इसी दौर की उपलब्धि कही जा सकती है। इसका नतीजा यह हुआ कि आज केवल हिंदी सिनेमा के अतिरिक्त बननेवाले प्रादेशिक सिनेमा ने राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सफलता प्राप्त की है।

सन 2000 से 2015 के बीच में कई प्रमुख हिंदी फिल्में बनीं जिन्होंने भारतीय सिनेमा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। यहाँ इस अवधि की कुछ प्रमुख फिल्मों और उनके निर्देशकों का विवरण इस प्रकार है : लगान (2001)-निर्देशकः आशुतोष गोवारिकर, दिल चाहता है (2001)-निर्देशकः फरहान अख्तर, कभी खुशी कभी ग़म (2001)-निर्देशकः करण जौहर, देवदास (2002)-निर्देशकः संजय लीला भंसाली, कल हो ना हो (2003)-निर्देशकः निखिल आडवाणी, मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस. (2003)-निर्देशकः राजकुमार हिरानी, स्वदेश (2004)-निर्देशकः आशुतोष गोवारिकर, धूम (2004)-निर्देशकः संजय गढ़वी, बंटी और बबली (2005)-निर्देशकः शाद अली, रंग दे बसंती (2006)-निर्देशकः राकेश ओमप्रकाश मेहरा, लगे रहो मुन्नाभाई (2006)-निर्देशकः राजकुमार हिरानी, ओम शांति ओम (2007)-निर्देशकः फराह खान, तारे ज़मीन पर (2007)-निर्देशकः आमिर खान, चक दे! इंडिया (2007)-निर्देशकः शिमित अमीन, गजनी (2008)-निर्देशकः ए.आर. मुरुगदॉस, रॉकक ऑन!! (2008)-निर्देशकः अभिषेक कपूर, थ्री इडियट्स (2009)-निर्देशकः राजकुमार हिरानी, लव आज कल (2009)-निर्देशकः इम्तियाज अली, कमीने (2009)-निर्देशकः विशाल भारद्वाज, जिंदगी ना मिलेगी दोबारा (2011)-निर्देशकः जोया अख्तर, द डर्टी पिक्चर (2011)-निर्देशकः मिलन लुथरिया, कहानी (2012)-निर्देशकः सुजॉय घोष, बर्फी! (2012)-निर्देशकः अनुराग बसु, पान सिंह तोमर (2012)-निर्देशकः तिग्मांशु धूलिया, पीके (2014)-निर्देशकः राजकुमार हिरानी, क्वीन (2014)-निर्देशकः विकास बहल, हाइवे (2014)-निर्देशकः इम्तियाज अली, बजरंगी भाईजान (2015)-निर्देशकः कबीर खान, तनु वेड्स मनु रिटर्न्स (2015)-निर्देशकः आनंद एल. राय आदि।

8. समकालीन सिनेमाः (2015 से अब तक)

हिंदी सिनेमा लगातार बदल रहा है। परंपरागत सिनेमा आज वेब सीरिज, शार्ट फिल्म, विडिओ रील्स आदि नए नए रूपों में ढल रहा है तथा समाज में प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा है । वीएफएक्स, डिजिटल तकनीक, एआइ आदि अधुनातन तकनीक और विचारों के साथ आगे बढ़ रहा है।साथ ही ओटीटी माध्यमों के कारण सिनेमा के प्रदर्शन और बोक्स ऑफिस की संकल्पना भी बदल रही है।

सन 2015 के बाद कई हिंदी फिल्में बनीं, जिन्होंने भारतीय सिनेमा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। यहाँ इस अवधि की कुछ प्रमुख फ़िल्में इस प्रकार हैं : दंगल (2016)- निर्देशकः नितेश तिवारी, नीरजा (2016)-निर्देशकः राम माधवानी, उड़ता पंजाब (2016)-निर्देशकः अभिषेक चौबे, सुल्तान (2016)-निर्देशकः अली अब्बास जफर, पिंक (2016)-निर्देशकः अनिरुद्ध रॉय चौधरी, कपूर एंड सन्स (2016)-निर्देशकः शकुन बत्रा, रुस्तम (2016)-निर्देशकः टीनू सुरेश देसाई, हिंदी मीडियम (2017)-निर्देशकः साकेत चौधरी, सीक्रेट सुपरस्टार (2017)-निर्देशकः अद्वैत चंदन, बरेली की बर्फी (2017)-निर्देशकः अश्विनी अय्यर तिवारी, स्त्री (2018)-निर्देशकः अमर कौशिक, राज़ी (2018)-निर्देशकः मेघना गुलज़ार, संजू (2018)-निर्देशकः राजकुमार हिरानी, गली बॉय (2019)-निर्देशकः जोया अख्तर, उरीः द सर्जिकल स्ट्राइक (2019)-निर्देशकः आदित्य धर, आर्टिकल 15 (2019)-निर्देशकः अनुभव सिन्हा, छिछोरे (2019)-निर्देशकः नितेश तिवारी, तानाजीः द अनसंग वॉरियर (2020)-निर्देशकः ओम राउत, थप्पड़ (2020)-निर्देशकः अनुभव सिन्हा, शेरनी (2021)-निर्देशकः अमित मासुरकर, शेरशाह

(2021)-निर्देशकः विष्णुवर्धन, मिमी (2021)-निर्देशकः लक्ष्मण उटेकर, सूर्यवंशी (2021)-निर्देशकः रोहित शेट्टी, 83 (2021)-निर्देशकः कबीर खान, गहराइयाँ (2022)-निर्देशकः शकुन बत्रा, गंगूबाई काठियावाड़ी (2022)-निर्देशकः संजय लीला भंसाली, कश्मीर फाइल्स (2022)-निर्देशकः विवेक अग्निहोत्री, भूल भुलैया 2 (2022)-निर्देशकः अनीस बज़्मी, डार्लिंग्स (2022)-निर्देशकः जस्मीत के. रीन, ब्रह्मास्त्रः पार्ट वन शिवा (2022)-निर्देशकः अयान मुखर्जी, डॉ. जी (2022)-निर्देशकः अनुराग कश्यप, डॉ. साईनाथ (2022)-निर्देशकः विक्रम भट्ट, बद्रिनाथ की दुल्हनिया (2017)-निर्देशकः शशांक खेतान, पठान (2023)-निर्देशकः सिद्धार्थ आनंद, टाइगर 3 (2023)-निर्देशकः मनीष शर्मा, फायटर (2024)-निर्देशक : सिद्धार्थ आनंद , आल इंडिया रैंक (2024)-निर्देशक : वरुण ग्रोवर, लापता लेडिज (2024)-निर्देशक : किरण राव, शैतान (2024)-निर्देशक : विकास बहल, योद्धा (2024)-निर्देशक : सागर ओझा, बड़े मियाँ छोटे मियाँ (2024)-निर्देशक : अली अब्बास झफर , चंदू चैम्पियन (2024)-निर्देशक : कबीर खान, महाराज (2024)-निर्देशक : सिद्धार्थ मल्होत्रा, सरफिरा (2024)-निर्देशक : सुधा कोंगरा आदि।

वर्तमान हिंदी सिनेमा का स्वरूप प्रारंभिक फिल्मों से अधिक मात्रा में बदल चुका है और समय की होड़ में निरंतर परिवर्तित हो रहा है। वर्तमान हिंदी सिनेमा पर कोविड-2019 का वातावरण, OTT माध्यम, एनिमेशन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि कई तत्वों का गहरा प्रभाव पड़ा है। अतः आज हिंदी फीचर फिल्मों के साथ-साथ वेब सीरिज, शॉर्ट्स विडिओ, शोर्ट फिल्म्स, रील्स आदि सिनेमा के कई रूप उभरकर सामने आ रहे हैं । यह वह समय है जब सिनेमा लोगों के मोबाइल फोन में बन और प्रदर्शित हो रहा है। हिंदी सिनेमा की यह समुन्नत विकास-यात्रा उत्तरोत्तर और अधिक गरिमा को प्राप्त करेगी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी सिनेमा का उद्भव और विकास एक गतिशील और परिवर्तनशील प्रक्रिया रही है, जिसने भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। लगभग सौ साल की इस कला ने आज अमृत काल तक आते-आते कई पड़ाओं से गुजरते हुए अपने स्वरूप को निखारा-संवारा है । 1913 में 'राजा हरिश्चंद्र' के साथ प्रारंभ होकर, हिंदी सिनेमा ने मूक फिल्मों के दौर से लेकर सवाक फिल्मों, स्वर्णिम युग, व्यावसायिक सिनेमा और आधुनिक डिजिटल युग तक कई महत्वपूर्ण चरण तय किए हैं। प्रत्येक चरण में तकनीकी उन्नति, सामाजिक मुद्दे और दर्शकों की बदलती पसंद के अनुसार सिनेमा का स्वरूप बदला है। 1970-1980 के दशक में अमिताभ बच्चन जैसे सुपरस्टार्स के उदय और 1990 के बाद वैश्वीकरण और डिजिटल तकनीक के आगमन ने हिंदी सिनेमा में नए आयाम जुड़ते गए। आज, ओटीटी प्लेटफार्म्स और कृतिम मेधा सिनेमा में आमूलचूल परिवर्तन लाए हैं। हिंदी सिनेमा ने न केवल भारतीय दर्शकों के बीच अपनी महत्वपूर्ण जगह बनाई है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान स्थापित की है।अतः अमृत काल में हिंदी सिनेमा के व्यापक परिदृश्य का अध्ययन उसके सांस्कृतिक, सामाजिक और तकनीकी प्रभावों को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. जगदीशकुमार निर्मल, 1967, चलचित्र- महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, पृ. 06
2. 2003, The New Encyclopaedia of Britannica, Published by-Encyclopaedia of Britanica, Volume-8, Inc. Chicago, 15th Edition, Page No.363
3. जगदीशकुमार निर्मल, 1967, चलचित्र, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, पृ. 06
4. मनमोहन चड्ढा, 1990, हिंदी सिनेमा का इतिहास, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.42
5. फिरोज रंगूनवाला, 1975, भारतीय चलचित्र का इतिहास, राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली, पृ.15
6. जगदीशकुमार निर्मल, 1967, चलचित्र, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, पृ. 07
7. Ashish Rajadhyaksha/ Paul Willemen, 1995, Encyclopedia of Indian Cinema, Oxford University Press, New Delhi.
8. इंटरनेटः https://en.wikipedia.org/wiki/Hindi_cinema

आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज
शेवगाँव, जिला-अहिल्यानगर, महाराष्ट्र-414502

गाँधीवादी आदर्श की कसौटी पर 'इन्हीं हथ्यारों से' : एक विश्लेषण

डॉ रश्मी यू एम

गाँधिजी के विराट व्यक्तित्व से प्रेरित होकर भारतीय भाषाओं में, विशेषकर हिन्दी में काफी रचनाएँ हुईं, गाँधी द्वारा प्रस्तुत सत्य-अहिंसा सिद्धांत की व्याख्याएँ कई विधाओं में ऐसे कथासाहित्य, काव्य और नाटकों में कई दशाब्दों तक निरंतर प्रतिध्वनित होती रहीं। हिन्दी में मैथिलीशरण गुप्त, पंत, महादेवीवर्मा, सियारामशरण गुप्त, दिनकर, विष्णु प्रभाकर, अमरकांत आदि साहित्यकार इस श्रेणी में आते हैं। कई साहित्यकार गाँधिजी के संपर्क में आ सके थे। इसलिए उनकी रचनाओं में युग बोल उठा था। हिन्दी के मशहूर लेखक अमरकांत का उपन्यास 'इन्हीं हथियारों से' इसी आदर्श पर सृजित है। उपन्यास दो हज़ार तीन में प्रकाशित है।

उपन्यास उन्नीस सौ बयालीस की क्रांति का दस्तावेज़ है। स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रहे अमरकांत ने स्वतंत्रता के बाद अपनी रचनाओं द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन का चित्रण किया। भारत की स्वतंत्रता संग्राम के युग में वे जीवित थे। गाँधिजी ने सन् 1942 में भारत छोडो आन्दोलन छेड दिया था। गाँधिजी के 'करो या मरो' के आह्वान पर अमरकांत ने भी दसवीं कक्षा में पढते समय आन्दोलन में भाग लेने के लिए पढ़ाई छोडी और आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

यह एक ऐतिहासिक उपन्यास नहीं बल्कि इतिहास को आधार बनाकर यथार्थवादी परिकल्पना की है। इसमें पात्र है नायक नहीं। अमरकांत ने अपने जन्म शहर बलिया को मुख्य घटना स्थल के रूप में रखा है। उपन्यास में इतिहास से लिये गये पात्र हैं। गाँधिजी आदर्श पुरुष के रूप में आते हैं। उपन्यास में केवल गाँधिजी के सिद्धांतो का समावेश है। उपन्यास में नीलेश, वीरेश, सदाशयव्रत, सुरंजन शास्त्री, ढेला जैसे काल्पनिक पात्रों के ज़रिए गाँधिजी के सिद्धांत का पालन करते हैं। बयालीस की क्रांति में बलिया के छात्र, छोकरे, डाकू, पहलवान, दूसरों के घर में चौका बरतन करनेवाली औरतें, वेश्या जैसे समाज के हर जनवर्ग ने कर्मठता से भाग लिया। बलिया के निम्न और मध्यवर्ग के लोग मिलकर विदेशियों से लडते थे। गाँधिजी के विचार और सिद्धांत प्रेरक शक्ति के रूप में है।

बलिया के वकील सीतानाथ का पुत्र नीलेश, बडे सेठ का पुत्र गोबर्धन, दयाशंकर, गरीब जुलाहे का लडका नफीस आदि नौजवान सदा देश की आज़ादी और क्रांतिकारियों की बातें करते थे। उसपर गाँधिजी की पुस्तक का गहरा असर पडा। गाँधिजी काम से दूर रहकर देह और मन की पवित्रता पर ज़ोर देती थी। लेकिन उनकी बात बहुत कुछ समझ में न आने पर भी असर करती थी, क्योंकि वह इसे देशसेवा और स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए ज़रूरी समझते थे। इसीसे नैतिक शक्ति प्राप्त होती है, जो सत्याग्रह में सहायक होती है। इसपर प्रभावित होकर आज़ादी के बीच आने का साहस उसमें हुई।

बलिया के आन्दोलन में गाँधिजी के विचार और सिद्धांत प्रबल थे। आरंभ में स्वाधीनता का पक्का ज्ञान साधारण लोगों को नहीं मिला था। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन की महान, उदात्त और क्रांतिकारी परंपराएँ खास तरह से महात्मागाँधी द्वारा बताए गए असहयोग, सत्याग्रह, कौमी एकता, सांप्रदायिक सद्भाव, अस्पृश्यता उन्मूलन, अहिंसात्मक प्रतिरोध, नारी उत्थान, स्वदेशी, सादगी, स्वाभिमान और जनसेवा के रचनात्मक विचार और कार्यक्रम सबसे बडा सम्बल है। इसलिए लोग जान गए हैं कि आज़ादी की लडाई कैसे और किन हथियारों से लडी जा सकती है। स्वतंत्रता आन्दोलन के अवसर पर कांग्रेस, कम्यूनिस्ट पार्टी तथा अन्य विचारों के लोग भी समाजवाद में विश्वास रखते थे।

आज़ादी के आन्दोलन में नेता जनता को समझते हैं।

उनमें सद्भाव, सदाचार और महिलाओं के प्रति सम्मान उत्पन्न करते हैं। स्त्रियों को अपमानित करते आइंगे पांडे को सदाशयव्रत चेतावनी देता है कि- "हम गाँधिजी के सिद्धांतों को मानते हैं, इसलिए हर चीज़ शांति से सुलझना चाहते हैं। हम इस शहर में रहते हुए ऐसे अन्याय बर्दाश्त नहीं कर सकते।"

ब्रिटिश हुकूमत हिन्दुस्तान के कंधों पर एक लाश के समान है, यह बलिया की जनता महसूस करती है। आज़ादी की अंतिम लड़ाई के लिए गाँधिजी के करो या मरो का मंत्र देश के कोने-कोने में गूंज उठा। गाँधिजी लगातार 'हरिजन' में लिखकर आज़ादी की मांग कर रहे थे। सुरजन शास्त्री जनता को आह्वान देते हैं कि- "आइए हम मिलजुलकर इसका स्वागत करे। इसको सफल बनाने में अपनी आहुति दे। अपना खून! अपनी कुर्बानी!" सभी लोग आवेश में थे। देश भक्ति के जोश से सबके चेहरे समान थे। पूरे हिन्दुस्तान की जनता जुल्म के प्रतिकार के लिए उठ खडी होती है। सदाशय व्रत ने नीलेश से कहा- "आज़ादी की लडाई है, हमें एक दूसरे का विरोध नहीं करना चाहिए। एकता की भावना से काम करने और कुर्बानी देने में जो आनन्द है, वह किसी चीज़ में नहीं। हमें तो गाँधिजी का रास्ता ठीक लगता है, सब साथ चलें सब एक-दूसरे को प्यार करें।"

आन्दोलन की घोषणा के अगले ही दिन सुबह गांधी, नेहरू, अब्दुल कलाम आदि बडे नेता गिरफ्तार कर लिये गये थे। यह खबर समाचार पत्रों के माध्यम से बलिया में देर से पहुँची। आगे इस आन्दोलन का बागडोर शहर के युवक नेताओं के हाथ में थी। नौजवानों के नारों से सारा शहर गूंज उठता था- "महात्मागाँधी ज़िन्दाबाद/सत्य-अहिंसा ज़िन्दाबाद।/ हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद/अंग्रेज़ो! भारत छोडे।"

दलित गोपालराम ग्राम स्वराज का व्यर्थ अर्थ-निकलते समय नीलेश ने समझाया कि- "गाँधिजी का ग्राम स्वराज का अर्थ मैं केवल इतना ही समझ सका हूँ कि गुलामी, नकलचीपन, आराममतलबी, स्वार्थ, आलस्य, अस्पृश्यता, अहंकारपूर्ण शान शौकत, दोमूँहे, शहरीपन, अंधविश्वास को छोडकर हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई आदि सभी धर्मों एवं जातियों के लोग मज़दूर, किसान, हरिजन, दलित, गरीब तथा अन्य सभी परिश्रम, परस्पर, प्यार और सहयोग, समानता, इन्सानियत, स्वावलंबन के रास्ते पर चलकर उन्नति करे। गाँधिजी हिन्दुस्तान की आज़ादी, एकता, स्वाभिमान और जनतांत्रिकता की आवाज़ है।"

बलिया की समूची जनता आज़ादी के लिए व्याकुल थी। उसने आज़ादी के हर आन्दोलन में आगे बढ बढकर हिस्सा लिया था। आज वह इस आखिरी लडाई में निर्णायक भूमिका निभाने को तैयार थी। इस समय न कोई धर्म, न कोई जाति, न क्षेत्र। बस पूरा हिन्दुस्तान, एक विशाल अटूट चट्टान। यह आज़ादी की आखिरी लडाई है। हर स्तर पर ब्रिटिश सरकार से असहयोग करना है। अहिंसात्मक तरीकों से ऐसा आन्दोलन करना है, जो ब्रिटिश हुकूमत के तंत्र को एकदम नकाम कर दे। रेल, परिवहन एवं संचार संबन्ध पूरी तरह भंग और निरर्थक हो जाएँ, थाने, कचहरी, कार्यालय और स्कूल सब निष्क्रिय हो जाएँ, सभी लोग स्वतंत्र मिलकर चैतन्य, स्फूर्तिमान और शक्तिशाली स्वतंत्र भारत का सपना देख रहे थे। निज कल्याण का रास्ता छोडकर सामाजिक कल्याण का रास्ता अपनाना चाहिए। आन्दोलनकारी गाँधिजी के इसी सिद्धांत पर चलते हैं। इसके लिए अपने राजनैतिक कार्यक्रम में स्वदेशी, स्वावलंबन, सत्याग्रह, एकता, अस्पृश्यता-निवारण, गरीबी उन्मूलन के सिद्धांत और व्यवहार को अपनाते हैं। लोग चर्खा कातने लगे, खद्दर पहनने लगे। आज़ादी के लिए अपनी पार्टी के कार्य में जुट गये। वह सबकी आप-आप कहते। यहाँ तक की छोटे बच्चे को भी।

लडाई को रोकने के लिए विदेशी हुकूमत बडी सख्ती से पेश आएगी, खूब लाठियाँ और गोलियाँ चलेंगी, जेलों में कोई जगह नहीं बचेगी। देश का बच्चा बच्चा अंग्रेज़ी हुकूमत के खिलाफ गुस्से से उबल रहे हैं। कई तरह की विचारधाराओं के लोग जेल में थे जो आपस में टकराते रहे

थे। परंतु राजनैतिक स्वतंत्रता और देश की एकता के मामले में वे सब एक थे। जेल में लोगों को हर प्रकार की तकलीफें देते हैं। खाने की, सोने की, पहनने- ओढने की। एक अखबार पढने को मिलता था। वह भी बन्द कर दिया था। गिरफ्तारी से जो लोग बच गए, उनकी एक मीटिंग बुलाई गई। नए नए नौजवानों, किसानें, मज़दूरों ने काफी काम किया है, आन्दोलन की असली रीढ यही है। सदारायव्रत ने ग्रामवासियों को एकत्रित कर गाँधिजी के अहिंसात्मक सिद्धांत के अनुसार आन्दोलन चलाने का आह्वान दे दिया। इस आन्दोलन में महिलाएँ भी शामिल हैं। वेश्य ढेला आन्दोलन से जुडी रहे और पूरी उम्मीद है कि गरीबी मिट सकने की। उच्च कुल में जन्मी नम्रता आन्दोलन में भाग लेने को तैयार है। इसके अलावा भागजोगिनी, कनेयी जैसी वंचित स्त्रियाँ भी आन्दोलन के नेतृत्व में हैं। यहाँ देखते हैं कि ये स्त्रियाँ अपनी नियति पर दुखित होकर नहीं बैठतीं। घर के चारदीवारों से बाहर निकालकर आन्दोलन में सक्रिय रहीं।

समस्या यह है कि लडाई शुरू होने के पहले ही हुकूमत ने प्रहार कर दिया है। बहुत से नेताओं को सींकयों में बन्द कर दिया गया है। दूसरे लोगों को भी पकडने की तैयारी हो रही है। नौजवानों ने देश की आज़ादी के लिए बडी बडी कुर्बानियाँ दी हैं। यह अहिंसात्मक लडाई है और दिखा दिया है कि अहिंसा में बडी ताकत है। लोगों ने जान लिया कि अंग्रेज़ हुकूमत एक हिंसात्मक शक्तिहै। उसका मुकाबला अहिंसा से नहीं किया जा सकता। हिंसात्मक क्रांतिकारी शक्ति ही उसे जड से उखाडकर बाहर फेंक सकती है। अहिंसा तो समझौते का रास्ता है।

यह आन्दोलन चन्द दिनों का नहीं है आखिरी दम तक या आज़ादी मिल जाने तक के लिए है। आज़ादी के लिए लोग लाठी-गोली की मार झेल रहे हैं। खुशी-खुशी जेल जा रहे हैं। लेकिन दूसरों की जान नहीं ली। देश की आज़ादी के लिए बहुत अधिक कष्ट झेलना पडा। जिले के विभिन्न थानों में सिपाही भेजने से पुलिस बल कम पड गया है। प्रशासन स्वयं डरा हुआ, इसलिए वह शहर की जनता में भय और आतंक फैला रहा है। शहर में धारा 144 लगी। सिपाइयों ने धारा 144 तोडने के जुर्म में अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलायीं। इसका वर्णन उपन्यास में इसप्रकार दिया है- "एक बाज़ार पर बिना किसी चेतावनी के तडातड गोलियाँ। कोई चावल के ढेर पर मरा है, कोई ढेरों के बीच के रास्ते में। कोई सडक के बीच में पडा है, कोई नाली के किनारे। बाज़ार तो बन्द है, दूकानदार भाग गए है, सामान जहाँ के तहाँ पडे हैं।"अनेक निर्दोष लोग विदेशी हुकूमत की बर्बरता के शिकार हुए है। लोगों का यह विश्वास है कि हिम्मत से काम करने से जल्दी ही जल्दी गुलामी की जंजीरें टूट जाए।

बलिया की जनता को थोडे-बहुत संघर्ष के बाद आज़ाद कर लिया गया। वहाँ के अधिक लोग गरीब थे, जिनको भरपेट भोजन भी नहीं मिला। उनके लिए आज़ादी की स्वाद और भी मीठा है, आज़ादी उनके लिए आशा, उत्साह, आस्था तथा भविष्य की एक कल्पना है। बलिया की आज़ादी किसी की दया या दान से नहीं, बल्कि असंख्य संघर्षशील जनता की कुर्बानी और बूते से मिली है। जनसंघर्ष के अहिंसात्मक ताकत को प्रथम मानकर भारतीयों को स्वतंत्रता देने के लिए अंग्रेज़ों को मज़बूर होना पडा।

प्रथम श्रवण में उपन्यास का शीर्षक 'इन्हीं हथियारों से' कुछ भ्रामक रहेगा। हथियार का मकसद तोप, बंदूक, चाकू, बम आदि से होगा। लेकिन यहाँ गाँधी युग के स्वदेशी, स्वावलंबन, असहयोग, सत्याग्रह, स्त्री शिक्षा, जातीय और सांप्रदायिक सद्भाव, अस्पृश्यता निवारण इन्हीं हथियारों से यह शब्द जुडा हुआ है।

प्राध्यापिका
सामूतिरी गुरुवायूरप्पन कॉलेज
कालिकट

समकालीन संदर्भ में भारतीयता

रोषिनी एस

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी संस्कृतियों में से एक है, जिसमें बहुरंगी विविधता और सांस्कृतिक विरासत है। प्राचीन काल से ही भारत अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के लिए मशहूर है। भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक व्यवस्थित रूप हमें सर्वप्रथम वैदिक युग में प्राप्त होता है। प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति अत्यंत उदात्त, सामान्वयवादी, सशक्त एवं जीवंत रही है। भारतीय विचारक आदिकाल से ही संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में मानते हैं। अपनी विशाल भौगोलिक स्थिति के समान यहाँ अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं, अलग-अलग कपड़े पहनते हैं,भिन्न-भिन्न धर्म का पालन करते हैं, भोजन करते हैं लेकिन स्वभाव एक जैसा होता है। "नानात्व में एकत्व का दर्शन भारतीयता है"[1]। चाहे कोई खुशी का अवसर हो या दुख का क्षण,लोग सच्चे दिल से इसमें भाग लेते हैं, एक साथ उसका अनुभव करते हैं। पूरा समुदाय या आस पड़ोस एक अवसर पर खुशियाँ मनाने में शामिल होता है।

"भारतीयता संस्कृतिक दृष्टि है। यह वह संस्कृति है जो हमारी मिट्टी की बनी हुई है। हमारे जल,वनस्पति और वायु से ही उसका संबंध है"[2]। भारतीय संस्कृति समस्त मानव जाति का कल्याण चाहती है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन गौरवशाली मान्यताओं एवं परंपराओं के साथ ही नवीनता का समावेश भी दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं का महासंगम है। हमारे पास वेद, उपनिषद, पुराण,रामायण, महाभारत, गीता जैसे धर्म ग्रंथ हैं। वे सब मनुष्य के सांस्कृतिक उन्नति को उद्घाटित करते हैं। भारतीय संस्कृति में विभिन्न जातियों के प्रत्येक संस्कृति के श्रेष्ठ विचार अपने में समेट लिया है। यहाँ के निवासियों के समन्वय की प्रक्रिया के साथ ही बाहर से आने वाले शाक्त, हूण, यूनानी एवं कुशाण भी यहाँ घुल मिल गए हैं। अरबों,तुर्कों और मुगलों के माध्यम से इस्लामी संस्कृति का आगमन हुआ । इसके बावजूद भारतीय संस्कृति ने अपना पृथक अस्तित्व बनाए रखा और नवागत संस्कृतियों के श्रेष्ठ विचारों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया है।

भारतीय संस्कृति इतनी व्यापक होते हुए भी आज कई कारणों से संकटग्रस्त है। आधुनिकता के पीछे भागकर आज भारतीय संस्कृति के मूल्यों पर परिवर्तन दिखाई देता है। गाँव और शहरों के सामाजिक जीवन में और जन जीवन के दृष्टिकोण में चिंताजनक परिवर्तन आया है। भारतीय समाज में भी अब समाज के स्थान पर व्यक्ति प्रमुख होता जा रहा है। इसलिए स्वार्थपरता बढ़ गई है। आपसी प्रेम और भाईचारा नष्ट हो चुकी है। भौतिकता की चकाचौक से सभी भटक गए हैं। सर्वत्र कृत्रिमता और यांत्रिकता के कारण भय, संत्रास, कुठा,आतंक आदि वातावरण का जन्म हुआ है। मानवीयता पूर्ण रूप से यांत्रिक बन गया है। स्वार्थता ने भारतीय जीवन को संकीर्ण बना दिया है। हमारी मलिन मानसिकता एवं संकीर्ण विचारों ने भारतीयता को कलुषित बना दिया। आधुनिकता के पीछे भागकर सत्य, धर्म, परिवार, कर्म आदि के प्रति हमारे विचार भी कम होती जा रही है। प्रौद्योगिकीकरण की प्रवृत्ति ने आर्थिक स्थिति को मजबूत किया लेकिन मानसिक स्थिति को कमजोर कर दिया है। 'वसुधैवकुटम्बकम' को छोड़कर एकल परिवारों की संख्या बढ़ गयी है। परिवार भारतीय समाज की सबसे छोटी और महत्वपूर्ण इकाई है। हमारे यहाँ आदिकाल से संयुक्त परिवार व्यवस्था प्रचलित थी। किंतु विकास एवं आधुनिकीकरण के परिमाणस्वरूप आये दबावों के कारण

परिवारों का विघटन बदलते समय की आवश्यकता बन गयी । मानवीय भावनाएँ जैसे एक दूसरे के प्रति अपनत्व, त्याग, प्रेम,परंपरा, संस्कार, सभ्यता आदि का नाश दिखाई पड़ रहा है।पारिवारिक संबंधों एवं मूल्यों का कोई स्थान नहीं है। परिवारवालों के बीच की आपसी रिश्ता नष्ट हो गयी। मोबाइल फोन, कंप्यूटर आदि पर समय व्यतीत करते हैं। घर में क्या हो रहा है, आसपास में क्या हो रहा है, इन सब के बारे में वे अनजान हैं। माता-पिता हमारे जीवन में शिक्षक एवं गुरु होते हैं। वे प्यार और स्नेह से हमारे जीवन को खुशियाँ भर देते हैं। लेकिन आज की स्थिति ऐसी नहीं है। बुजुर्गों के लिए परिवारवालों के पास कोई समय नहीं है। उनके प्रति प्रेम की कमी है। एकल परिवार प्रणाली के उद्‌भव का परिणाम है वृद्धाश्रम। पारिवारिक उपेक्षा, प्रौद्योगिकी,बेहतर अवसरों की तलाश में परिवारों के विघटन जैसे कारण से बड़े लोगों को वृद्धाश्रम भेजने के लिए विवश होते हैं। आज के लोग फ्लैट संस्कृति पसंद करते हैं। बड़े शहरों में लोगों के लिए रहने की जगह की कमी होती जा रही है, इसे पूरे करने के लिए अपार्टमेंट या फ्लैट बनते जा रहे हैं।इससे हमारी पारिवारिक संरचना में परिवर्तन आया है। परिवार में माँ-बाप का स्थान पालतू जानवर से भी गयाबीता है। आजकल लोगों के मन में दूसरों के प्रति कोई सहानुभूति या प्यार की भावना नहीं है। किसी चीज़ को एक बार इस्तेमाल करके फेंक देने की प्रथा या भोगो फेंको संस्कृति आज सर्वत्र देख सकती है। इसका सबसे ज्यादा असर हमारे समाज पर पड रहा है।

वर्तमान युग में वैज्ञानिक चिंतन एवं विकास के कारण मनुष्य की तार्किक एवं भौतिक चेतना का विकास हुआ है। इससे उसकी भाव संवेदना का ह्रास हो रहा है। पाश्चात्य संस्कृति, उपभोक्तावादी संस्कृति, व्यवसायवाद आदि के कारण भारतीय समाज की मूल मान्यताएँ एवं परंपराएँ खत्म होने लगी हैं। आयातीत वस्तुओं के प्रति लोगों का आकर्षण इतना बड़ा है कि भारतीय वस्तु विदेशी लेबल के साथ हमारे ही देश में सम्मान के साथ चली जाती है। बाज़ारवाद के आगमन से हमारा जीवन बाज़ार बन गया है। पैसे का महत्व भी बढ़ गया है। पैसे ही सब कुछ है। किसी के पास कुछ सोचे या समझने के लिए समय नहीं है।

भारत में अपने परिवार, समाज, विश्व और गुरु के प्रति मनुष्य के आत्मसमर्पण की भावना का पोषण प्राचीनकाल से ही होता आ रहा है। अहिंसा, क्षमा, ममता, कर्म, भाईचारा, गुरु शिष्य संबंध, पुरुषार्थ, प्रकृति प्रेम, जीवन - मृत्यु - पुनर्जन्म,अध्यात्म तथा मोक्ष आदि हमारा मूल मंत्र है। ये विशेषताएँ भारतीय संस्कृति को विश्व की अन्य संस्कृतियों से अलग करती हैं। लेकिन 21वीं सदी में भारतीय संस्कृति का मूल्य विलुप्त हो रहा है। हमें एक ऐसी दुनिया का गठन करना है जिसमें हमारे पुराने एवं सभ्य संस्कृति होना है, आधुनिकता के अच्छा गुण होना है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. भारतीयता की पहचान, डॉ. विद्यानिवास मिश्र
2. संस्कृति के चार अध्याय, डॉ .रामधारी सिंह दिनकर
3. ए. अरविन्दाक्षन, साहित्य संस्कृति और भारतीयता
4. संतोषकुमार चतुरवेदी, भारतीय संस्कृति

संदर्भ ग्रंथ

1. विद्‌यानिवास मिश्र, भारतीयता की पहचान, पृष्ठ 120
2. ए अरविंदाक्षन, साहित्य संस्कृति और भारतीयता, पृष्ठ 22

शोध निदेशक : डॉ.षाजी.एन

शोधछात्रा

एस एन कॉलेज, कोल्लम

ब्रज क्षेत्र की ग्रामीण महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने में मीडिया की भूमिका का अध्ययन

आशा शर्मा एवं डॉ रंजन सिंह

शोध सारः यह शोध पत्र उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने में मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करता है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहां अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता की कमी एक प्रमुख चुनौती बनी हुई है। इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न मीडिया माध्यमों, जैसे कि पारंपरिक और आधुनिक मीडिया, के प्रभाव और उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना है। अध्ययन में महिलाओं की स्वास्थ्य साक्षरता दर, किशोरियों में स्वास्थ्य-संवाद के प्रभावी माध्यम, और प्रभावी संचार के तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

इस शोध के लिए डेटा संग्रहण ब्रज क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों में 100 महिलाओं के नमूने के माध्यम से किया गया। शोध उपकरण के रूप में प्रश्नावली पद्धति का उपयोग किया गया है।

अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि मीडिया के माध्यम से स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने के प्रयासों के बावजूद, कई चुनौतियाँ और बाधाएँ अभी भी मौजूद हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य उन खामियों की पहचान करना और समाधान के संभावित उपायों का सुझाव देना है ।

शब्द बीजः मीडिया, स्वास्थ्य, ग्रामीण क्षेत्र, स्वास्थ्य जागरूकता, महिला स्वास्थ्य, मीडिया भूमिका

प्रस्तावनाः यह शोध पत्र उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने में मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करता है। भारत, जिसे गाँवों का देश कहा जाता है, की लगभग 70% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है(Thakare & Gore, 2023)। हालांकि शहरी भारत तीव्र गति से विकास कर रहा है, लेकिन ग्रामीण भारत अभी भी गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, कुपोषण, और सुरक्षित पेयजल की अनुपलब्धता जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। इन समस्याओं में विशेष रूप से महिलाओं की स्वास्थ्य स्थितियाँ चिंताजनक हैं(Bhandari & Dutta, 2007)। मीडिया ग्रामीण महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जैसा कि विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है। प्रस्तावित अनुसंधान इंगित करता है कि प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों किसानों के बीच स्वास्थ्य और पोषण जागरूकता फैलाने में प्रभावी हैं, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, विशेष रूप से मोबाइल और इंटरनेट प्लेटफॉर्म, अधिक पसंदीदा और उपयोगी हैं (Rahi et al., 2023)। इसके अतिरिक्त, रेडियो और टेलीविजन जैसे मास मीडिया के संपर्क में, उप-सहारा अफ्रीका में मातृ स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं के उपयोग में वृद्धि के साथ दृढ़ता से जुड़ा हुआ है, जिसमें प्रसवपूर्व देखभाल, कुशल जन्म उपस्थिति और प्रसवोत्तर देखभाल शामिल हैं(Dave, 2022)। इसके अलावा, फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग स्वास्थ्य जागरूकता शिक्षा और अनुसंधान में ग्रामीण समुदायों को शामिल करने के लिए सफलतापूर्वक किया गया है, जिसमें विशिष्ट दर्शकों को लक्षित करने वाले भुगतान किए गए विज्ञापन आबादी तक पहुँचने और स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा देने में अधिक प्रभावी साबित हुए हैं(Gautam & Kumari, 2022)। ये निष्कर्ष महत्वपूर्ण स्वास्थ्य जानकारी के प्रसार और ग्रामीण महिलाओं के बीच स्वास्थ्य परिणामों में सुधार में विभिन्न मीडिया चैनलों के महत्वपूर्ण प्रभाव को उजागर करते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की कमी शुरू से ही एक प्रमुख मुद्दा रही है। हालांकि, 20वीं सदी की शुरुआत में महात्मा गांधी ने कहा था कि 'गाँवों में भारत के जीवन की आत्मा बसती है(कुमार, 2021)।' यह कथन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, लेकिन समय के साथ गाँवों में स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, सड़क, और पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी के कारण बहुत सी चुनौतियाँ उत्पन्न हो गई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति

जागरूकता का अभाव अभी भी बना हुआ है, जिससे कई बीमारियाँ और स्वास्थ्य समस्याएँ उभरती रहती हैं(Tenhunen, 2018)।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, 'स्वास्थ्य केवल बीमारियों की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि यह शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टि से सही होने की संतुलित स्थिति है(Larsen, 2022)।' इस परिप्रेक्ष्य में, मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। परंपरागत रूप से, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य समस्याओं को दैवीय प्रकोप माना जाता था, जैसे चेचक और हैजा को देवता का क्रोध। आज, मीडिया की भूमिका इस मिथक को तोड़ने और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण है।

सरकार ने आँगनवाड़ी केन्द्रों और आशा (एक्रेडिटेड सोशल हेल्थ एक्टिविस्ट) की नियुक्तिके माध्यम से जमीनी स्तर पर जागरूकता फैलाने का प्रयास किया है(Saprii et al., 2015)। इन केन्द्रों का उद्देश्य मौखिक प्रचार, सुझाव और समस्याओं के निस्तारण तक एक प्रभावी उपकरण के रूप में कार्य करना है। इसके बावजूद, स्वास्थ्य जागरूकता के प्रसार में कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

साहित्य की समीक्षा : नागम्मा टी, अशोक एल, 2020, दक्षिण भारत की ग्रामीण महिलाओं में सर्विकल स्वास्थ्य के ज्ञान पर ऑडियो-विजुअल और प्रिंट मीडिया हस्तक्षेप की प्रभावशीलता

यह अनुसंधान उडुपी जिले, दक्षिणी भारत में, ग्रामीण महिलाओं में सर्विकल कैंसर के बारे में स्वास्थ्य साक्षरता का मूल्यांकन करने पर केंद्रित है। पूर्व अध्ययनों ने विकासशील देशों में ग्रामीण महिलाओं के लिए सर्विकल कैंसर स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों तक पहुँच की कमी को उजागर किया है, जो समुचित हस्तक्षेपों की महत्वकांक्षा को दर्शाता है। अध्ययन में ऑडियो-विजुअल सहायता और विज्ञापन पत्र के इस्तेमाल से स्वास्थ्य साक्षरता को सुधारने में मुख्य भूमिका निभाई गई है, जो कि ग्रामीण महिलाओं के बीच सर्विकल स्वास्थ्य के बारे में ज्ञान में सुधार के लिए मुकाबला करता है। मौजूदा साहित्य में समुदाय-आधारित स्वास्थ्य शिक्षा हस्तक्षेपों की महत्वपूर्णता को बल देता है, जो सर्विकल कैंसर की रोकथाम और स्क्रीनिंग विधियों के बारे में जागरूकता और ज्ञान में सुधार करने में मदद करते हैं(Nagamma et al., 2020)।

धवन डी, पिन्नामनेनी आर, 2015, भारत में विभिन्न प्रकार के मास मीडिया और गर्भावस्था परिचर्या यात्रा के बीच संबंधः राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण से एक समयखंड अध्ययन।

इस अध्ययन ने भारत के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 4 (NFHS-4) से डेटा का विश्लेषण किया, जिसमें भारत में विभिन्न प्रकार के मास मीडिया और गर्भावस्था परिचर्या (ANC) यात्राओं के बीच संबंध पर ध्यान केंद्रित था। पूर्व अनुसंधान ने दिखाया है कि मास मीडिया के प्रसार से स्वास्थ्य व्यवहार, जैसे ANC उपयोग, पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इस अध्ययन के अनुसार की जाने वाली खोज पूर्व मौजूदा साहित्य के साथ मेल खाती है जो मास मीडिया की भूमिका को उजागर करती है जो मातृ, नवजात और बाल स्वास्थ्य परिणामों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुसंधान सुझाव देता है कि खासकर टेलीविजन का व्यापक पहुँच है और यह स्वास्थ्य जागरूकता को शहरी और ग्रामीण जनसंख्या दोनों में बढ़ाने की संभावना रखता है, जिसे स्वास्थ्य अभियानों में उपयोग करने का महत्व बताया जाता है(Dhawan et al., 2020)।

शोध उद्देश्य : 1. महिला स्वास्थ्य जागरूकता में प्रभावी संचार माध्यम का अध्ययन/ 2. महिला स्वास्थ्य साक्षरता दर का अध्ययन/ 3. किशोरियों में स्वास्थ्य-संवाद के प्रभावी माध्यम का अध्ययन

शोध प्रविधिः इस शोध को पूर्ण करने के लिए वर्णनात्मक शोध प्रारूप को अपनाया गया है, जो डेटा संग्रहण और विश्लेषण की आवश्यकता को पूरा करता है। अध्ययन का उद्देश्य ब्रज क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता का मूल्यांकन करना है। इसके लिए, एक संगठित और व्यवस्थित पद्धति का पालन किया गया है ताकि सटीक और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त हो सकें।

शोध संरचना में न्यादर्श के रूप में 100 महिलाओं को शामिल किया गया है। यह चयन प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि अध्ययन में शामिल सभी प्रतिभागियों का समान

प्रतिनिधित्व हो और परिणामों की सामान्यीकरण क्षमता बढ़ सके।

अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि ब्रज क्षेत्र में महिला स्वास्थ्य जागरूकता विभिन्न संचार माध्यमों के माध्यम से फैलाई जाती है। जानकारी प्राप्त करने के प्राथमिक स्रोतों में टीवी (30%), सोशल मीडिया (25%), और अखबार (20%) प्रमुख हैं। रेडियो (15%), समुदायिक रेडियो (5%), गाँव की सभाएँ (3%), और अन्य स्रोत (2%) भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब सबसे प्रभावी संचार माध्यम के बारे में पूछा गया, तो सोशल मीडिया (30%) को सबसे प्रभावी माना गया, इसके बाद टीवी (25%), अखबार (15%), रेडियो (10%), गाँव की सभाएं (10%), और समुदायिक रेडियो (5%) आते हैं।

महिलाओं के स्वास्थ्य ज्ञान के स्तर का आकलन करने पर पता चला कि औसत (40ऽ) ज्ञान स्तर सबसे आम है, जबकि 25% अच्छा, 20% को कोई जानकारी नहीं, और 15% का ज्ञान स्तर बुरा है। यह इंगित करता है कि विशेष कार्यक्रमों का आयोजन आवश्यक है ताकि महिलाओं को बेहतर स्वास्थ्य संदेश प्राप्त हो सकें। किशोरियों के स्वास्थ्य संवाद में सबसे प्रभावी संचार माध्यम स्कूल/कॉलेज प्रोग्राम्स (40%) और सोशल मीडिया (25%) पाए गए, जबकि अन्य चैनल (25%) और रेडियो (10%) की भी अपनी भूमिका है। क्षेत्र में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रोग्राम की उपलब्धता पर प्रतिक्रिया से पता चलता है कि 60% लोगों के अनुसार उनके क्षेत्र में ऐसे प्रोग्राम मौजूद हैं, जबकि 40% ने कहा कि नहीं हैं। अधिकांश (80%) लोग मानते हैं कि महिला स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ाने के लिए अतिरिक्त कदमों की आवश्यकता है, जबकि 20% की राय है कि और कदमों की आवश्यकता नहीं है। अध्ययन और शोध की आवश्यकता पर 30% ने सामाजिक आंकड़े और शोध, 25% ने महिला स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, 20% ने स्थानीय स्तर पर संचार माध्यमों का उपयोग, 15% ने कार्यक्रमों का मूल्यांकन, और 10% ने स्वास्थ्य संदेशों के प्रभाव का मूल्यांकन जरूरी माना।

स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए लोग जागरूकता अभियान में सक्रिय भागीदारी (35%), स्वास्थ्य संदेशों का प्रसार (25%), सेवाओं की पहुँच को बढ़ाने में सहायता (20%), संगठन की तकनीकी सहायता (10%), और अन्य योगदान (10%) महत्वपूर्ण मानते हैं। संभावित सुधार के सुझावों में 30% ने संचार माध्यमों की उपयोगिता का मूल्यांकन, 30% ने समुदाय सहभागिता की नई योजनाओं का अध्ययन, 15% ने नए तकनीकी उपायों का अध्ययन, और 25% ने कार्यक्रमों की प्रभाविता का मूल्यांकन प्रस्तावित किए।

मीडिया योगदान के प्रकार में 35% ने सामाजिक मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से शिक्षा और संदेश वितरण, 25% ने डिजिटल मीडिया पर लेखों और अध्ययनों का प्रसारण, 20% ने टेलीविजन और रेडियो के माध्यम से कार्यक्रमों का प्रसारण, और 20% ने अन्य योगदान आवश्यक माने। क्षेत्र में महिलाओं के स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं का सामना करने पर, 80% लोगों ने सकारात्मक जवाब दिया, जिससे संकेत मिलता है कि क्षेत्र में महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याएँ व्यापक हैं, जबकि 20% ने कहा कि उन्हें ऐसी समस्याओं का सामना नहीं होता।

महिला स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ाने के लिए प्राथमिकता वाले कार्यक्रमों में 30% ने जानकारी और शिक्षा कार्यक्रम, 25% ने समुदाय संगठन द्वारा प्रेरित पहल, 20% ने स्वास्थ्य सम्मेलन और शिविर, 15% ने बातचीत और अवसर निर्माण, और 10% ने अन्य विकल्प प्राथमिक माने। प्रभावी समर्थन या कार्यक्रमों के लिए 20% ने स्वास्थ्य जागरूकता के लिए योग्य दूतों का नियुक्त करना और प्रशिक्षण देना, 25% ने सेवाओं की पहुँच को बेहतर बनाना, 30% ने स्कूल और कॉलेजों में कार्यक्रम लाना, 15% ने सरकारी योजनाओं की जागरूकता बढ़ाना, और 10% ने अन्य उपाय सुझाए।

महिला स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ाने में सहायता करने वाले विभाग या संगठनों में 30% ने स्वास्थ्य विभाग, 20% ने स्थानीय प्रशासन, 15% ने सामाजिक कल्याण विभाग, 25% ने स्थानीय गैर-सरकारी संगठन, और 10% ने अन्य संगठन मददगार बताए। अध्ययन से स्पष्ट है कि महिला स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रभावी संचार माध्यमों का चयन, सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों की उपलब्धता और प्रभाविता का मूल्यांकन, और समुदाय की

सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है। इसके अलावा, शोध और अध्ययन को बढ़ावा देकर स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता को सुधारने के लिए ठोस कदम उठाए जाने चाहिए।

महिला स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने में संचार माध्यमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। टीवी और सोशल मीडिया ने अपनी व्यापक पहुँच और प्रभावशीलता के कारण महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि, सामाजिक मीडिया प्लेटफार्मों के उपयोग में वृद्धि के कारण यह माध्यम सबसे प्रभावी माना गया है।

निष्कर्ष : अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि ब्रज क्षेत्र में महिला स्वास्थ्य जागरूकता विभिन्न संचार माध्यमों के माध्यम से फैलाई जाती है। टीवी, सोशल मीडिया, और अखबार प्रमुख जानकारी स्रोत हैं। सोशल मीडिया को सबसे प्रभावी संचार माध्यम माना गया है, इसके बाद टीवी, अखबार, रेडियो, गाँव की सभाएँ, और समुदायिक रेडियो आते हैं। महिलाओं के स्वास्थ्य ज्ञान का आकलन करने पर पाया गया कि अधिकांश का ज्ञान स्तर औसत है, जबकि कुछ का अच्छा, कुछ को कोई जानकारी नहीं, और कुछ का ज्ञान स्तर बुरा है। इससे पता चलता है कि विशेष कार्यक्रमों का आयोजन आवश्यक है। किशोरियों के स्वास्थ्य संवाद में स्कूल/कॉलेज प्रोग्राम्स और सोशल मीडिया सबसे प्रभावी माध्यम हैं।

महिला स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ाने में सहायता करने वाले विभागों में स्वास्थ्य विभाग, स्थानीय प्रशासन, सामाजिक कल्याण विभाग, और स्थानीय गैर-सरकारी संगठन मददगार साबित हो सकते हैं। अध्ययन से स्पष्ट है कि महिला स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रभावी संचार माध्यमों का चयन, सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों की उपलब्धता और प्रभावीता का मूल्यांकन, और समुदाय की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है। इसके अलावा, शोध और अध्ययन को बढ़ावा देकर स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता को सुधारने के लिए ठोस कदम उठाए जाने चाहिए।

सन्दर्भ सूची :

Bhandari, L., & Dutta, S. (2007). Health infrastructure in rural India. India Infrastructure Report, 2007, 265–285.

Dave, P. H. (2022). EFFECT OF MEDIA ON HEALTH AND NUTRITIONAL AWARENESS OF FARMERS. Gujarat Journal of Extension Education, 2022(1), 110–113. https://doi.org/10.56572/gjoee.2022.si.0021

Dhawan, D., Pinnamaneni, R., Bekalu, M., & Viswanath, K. (2020). Association between different types of mass media and antenatal care visits in India: a cross-sectional study from the National Family Health Survey (2015–2016). BMJ Open, 10(12), 042839. https://doi.org/10.1136/bmjopen-2020-042839

Gautam, G., & Kumari, S. (2022). A STUDY OF TV WATCHING HABITS AMONG RURAL WOMEN IN THE FARIDABAD REGION. Towards Excellence, 14(2).

Larsen, L. T. (2022). Not merely the absence of disease: A genealogy of the WHO's positive health definition. History of the Human Sciences, 35(1), 111–131. https://doi.org/10.1177/0952695121995355

Nagamma, T., Ashok, L., Konuri, A., & Chandrasekaran, V. (2020). Effectiveness of audio-visual and print media intervention on knowledge of cervical health among rural women in Southern India. Nigerian Postgraduate Medical Journal, 27(4), 343.https://doi.org/10.4103npmj.npmj_148_20

Rahi, S., Nisa, Q. un, Bhat, S., Nazir, S., & Bhat, B. A. (2023). A Study on Breast Cancer Knowledge and Awareness among Rural Women in Kashmir Region, Jammu and Kashmir. Journal of Nursing Research,Patient Safety and Practise, 31, 11–19. https://doi.org/10.55529/jnrpsp.31.11.19

Saprii, L., Richards, E., Kokho, P., & Theobald, S. (2015). Community health workers in rural India: analysing the opportunities and challenges Accredited Social Health Activists (ASHAs) face in realising their multiple roles. Human Resources for Health, 13, 1–13.

Tenhunen,S.(2018). A village goes mobile: Telephony, mediation, and social change in rural India. Oxford University Press.

Thakare, B.G., & Gore, T.S.(2023). Indian Villages: Challenges and Opportunities. Significance of Rural Development in National Progress, 153, 153.

कुमारपंकज. (2021). धनात्मक बाह्यतायें एवं मनरेगा-एक आर्थिक अनुशीलन (दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में). Journal of Ravishankar University, 27(1), 45–50.

शोधार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल

डॉ. रंजन सिंह

सह प्राध्यापक, पत्रकारिता विभाग माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल

मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में पारिवारिक जीवन संघर्ष

ब्रीस के रुद्धन

शोध सार :आत्मकथा साहित्य लेखन के भोगे हुए जीवन का ब्यौरा है। आत्मकथा में लेखक अपनी पीड़ाओं तथा अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करते हैं। जीवन की सूक्ष्मतम संवेदनाओं का यथातथ्य वर्णन होने के कारण आत्मकथा में कल्पना की कोई गुंजाइश नहीं है। हिंदी की मशहूर लेखिका मन्नू भंडारी की आत्मकथा है - "एक कहानी यह भी"। इसमें लेखिका ने अपने लेखकीय जीवन की कहानी के साथ अपने भावात्मक और सांसारिक जीवन के सभी पहलुओं पर भरपूर प्रकाश डाला है।

मुख्य शब्द : जीवन संघर्ष - संकुचित मानसिकता - अहंग्रस्त जीवन - प्रतिक्रिया - आत्मसम्मान

विषय चयन : साहित्य केवल समाज का नहीं जीवन का भी दर्पण है। लेकिन यह दर्पण सदैव जीवंत है। साहित्यकार अपने निजी अनुभवों और अनुभूतियों के संदर्भ में सामाजिक यथार्थ का चित्रण करता है। परिवार एक सामाजिक संस्था है जो सामाजिक संगठन का आधार है। इसके सदस्य पारस्परिक संबंधों के आधार पर आपसी प्रेम और विश्वास की रस्सी में बंधे रहते हैं। परिवार की सत्ता बनाए रखने के लिए आपसी समझ और सौहार्द की ज़रूरत है। जब परिस्थितियाँ इसके विपरीत हो जाती है तो पारस्परिक संबंधों में तनाव आ जाता है। यह तनाव व्यक्तितथा समाज में विद्रोही स्वर उत्पन्न करता है। जीवन में विद्रोही चेतना का आरंभ अपने को हाशिए पर होने के अहसास से आरंभ होता है। यह हाशिया मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में उत्पीडन की कई तहों के रूप में नज़र आता है। बचपन से ही लेखिका को हाशिए कृत ज़िंदगी से लड़ना पड़ा। काले रंगवाली होने के कारण अपने पिता का मन सदा उनकी तरफ़ से उदासीन रहा "मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। पिता का बात-बात पर अपने अन्य संतानों से मन्नू की तुलना ने उनमें एक प्रकार की हीनग्रंथि का विकास कर दिया था।"[1]

अपने समय में लेखिका को खेलने तथा पढ़ने की आज़ादी तो थी लेकिन अपने पिता द्वारा निर्धारित सीमा के भीतर रहना पड़ता था। बचपन में अपने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा तथा पतंग उड़ाने जैसे खेल खेलती थी। किंतु लड़की होने के कारण दायरा घर की चहारदीवारी तक सीमित था। स्त्री की पीड़ा त्रासदी एवं घुटन भरी मानसिकता का यथातथ्य वर्णन मन्नू भंडारी जी ने अपनी आत्मकथा में किया है। मन्नू बचपन से ही पिता के अतिरिक्त स्नेह के कारण ज़िद्दी बनी। अपने भीतर आज़ादी की लड़ाई लड़ना शुरू कर दी। गलत स्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्तकरना उनका स्वभाव बन गया। यह स्वभाव स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा है कि "इसका प्रभाव मेरे नेचर पर भी हुआ, मैं हमेशा गलत बात के प्रति 'रिएक्ट' होती थी। व्यक्तिगत जीवन में हो अथवा सामाजिक संदर्भ में जहाँ कहीं गलत है, मेरी बहुत तीखी प्रतिक्रिया उसको लेकर हुआ करती थी।"[2]

प्रतिभाशाली मन्नू भंडारी संवेदनशील भी थी। पारिवारिक परिवेश, विविध स्थानों में भ्रमण और उच्च शिक्षा ने उन्हें ज्ञान का भंडारा भी दे दिया। उनके जीवन की सबसे बड़ी विडंबना है कि बचपन से ही वे जिस मानसिक संघर्ष का शिकार बनी रहीं। एक ख्यातनामा लेखक की जीवन संगिनी बनने पर भी खत्म नहीं हुई। इसी संदर्भ में लेखिका लिखती है, "लेखन के कारण ही हमने विवाह किया था.. हम पति-पत्नी बने थे। उस समय मुझे लगता था कि राजेंद्र से विविह करते ही लेखन के लिए तो जैसे राजमार्ग खुल जाएगा और उस समय यही मेरा एकमात्र काम्य था। उस समय कैसे मैं यह भूल गई कि शादी करते ही मेरे व्यक्तित्त्व के दो हिस्से हो जाएँगे.. लेखक और पत्नी। इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरे लेखकीय व्यक्तित्त्व को राजेंद्र ने ज़रूर प्रेरित और प्रोत्साहित किया... इनके साथ मिलनेवाला साहित्यिक वातावरण, होनेवाली गप्प-गोष्ठियाँ मेरे बहुत बड़ा प्रेरणास्रोत भी रहे। लेकिन मेरे व्यक्तित्त्व का पत्नी-रूप? इसपर राजेंद्र निरंतर जो और जैसे प्रहार करते रहे उसका परिणाम तो मेरे लेखक ने ही भोगा। निरंतर और खंडित होते आत्मविश्वास से लेखन में गतिरोध का जो सिलसिला शुरू हुआ अंत में वह उसके पूर्ण विराम पर ही समाप्त हुआ।"[3]

पारिवारिक जीवन की कुछ समस्याओं को मन्नूजी

अनदेखा नहीं कर पाई। विवाह के बाद कुछ ऐसे अवसरों का भी उन्हें सामना करना पड़ा, जिसके कारण मन्नूजी का व्यक्तित्व कई स्तरों में विभाजित हुआ। विवाह को वे एक ऐसा बंधन मानती है जिसे आदमी स्वेच्छा से अपनाता है पर यदि उसे यह बंधन कष्टकर लगे, तो उससे बच निकलने का कोई रास्ता नहीं रह जाता। मन्नूजी के अनुसार "विवाह एक ऐसा बंधन है जिसमें बंधा हुआ आदमी छटपटाए और न बंधा हुआ भी छटपटाए।"

पारिवारिक जीवन में पत्नी को केवल ज़िम्मेदारियों को निभाना पड़ता है। उसे अधिकार नहीं दिए जाते। ज़िम्मेदीरियों को निभाने में असफल नारी से जीने का अधिकार छीन लिया जाता है। इसी कारण दांपत्य-जीवन में दरारें निर्मित होती हैं। दांपत्य-जीवन पति-पत्नी के प्रेमपूर्ण संबंधों पर निर्भर होता है। अगर पुरुष का अहं, प्रतिष्ठा के झूठे मानदंड, नारी की बेबसी आदि विवशता के कारण बनते हैं तो स्त्री पत्नी की जगह बंदिनी, आश्रिता, पति से हीन, स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं आत्मसम्मान से कट कर अत्याचारों का शिकार बन जाती है। परिणामस्वरूप दांपत्य जीवन में दुख एवं निराशा का उदय होता है। अहं में डूबा पति पत्नी को बेजान वस्तु समझकर उसपर अत्याचार और अन्याय करता है।

'एक कहानी यह भी'आत्मकथा की लेखिका मन्नू भंडारी से राजेंद्र यादव की शादी की आदर्शमय स्थिति जल्दी ही छिन्न-भिन्न हो गई। क्योंकि गृहस्थी की ज़िम्मेदारियों से पलायन करनेवाले अहंग्रस्त पति के अमानवीय व्यवहार से दुखी मन्नूजी तीस वर्षों के उपरांत ही विवाह विच्छेद कर पाई। यहाँ लेखक पति ने अपनी पत्नी के समक्ष 'समानांतर' ज़िंदगी का आधुनिक पैटर्न पेश कर दिया। "देखो छत ज़रूर हमारी होगी लेकिन जिंदगियाँ अपनी-अपनी होंगीं, बिना एक दूसरे की ज़िंदगी में हस्तक्षेप किए बिलकुल स्वतंत्र, मुक्तऔर अलग।"[4] मन्नूजी के लिए यह बहुत बड़ा आघात था। यह सब बात सुनकर मन्नूजी को लगा कि सिर पर छत का आश्वासन देकर जैसे पैरों के नीचे की ज़मीन ही खींच ली गई हो। पति राजेंद्र यादव द्वारा प्रस्तुत समानांतर ज़िंदगी की अवधारणा के सूत्र उसकी प्रेमिका मीता से जुड़ा था। यह रिश्ता मन्नूजी के पारिवारिक जीवन में ज़हर घोलनेवाला साबित हुआ। मन्नूजी से शादी के बाद राजेंद्र यादव कहता है- "शादी मैंने ज़रूर मन्नू से कर ली है, पर हमारा-तुम्हारा संबंध तो जैसा है, वैसा ही रहेगा। शादी में वैसे भी मेरा कोई विश्वास नहीं।" मन्नूजी का पारिवारिक जीवन कई वर्षों तक शिकायत, शक, दुख, घृणा एवं शोषण का शिकार बना रहा। पति राजेंद्र अपनी पत्नी के प्रति कभी भी संवेदनशील नहीं रहे। इसी वजह से मन्नूजी का पारिवारिक जीवन असफल बना रहा। एक स्त्री के संबंध में अपने पति से सहानुभूति, सहयोग एवं एकजुटता न मिले तो दांपत्य जीवन की क्या सार्थकता होती है? ऐसा जीवन उसके लिए एक बंधन ही है। आत्माभिमान से युक्त नारी ऐसे बंधन से जल्द ही छुटकारा पाती है। मन्नूजी एक आत्माभिमानी एवं आत्मबल से युक्तनारी है।

मन्नूजी अपने पति राजेंद्र यादव के विकृत मानसिकता और अनैतिक संबंधों के कारण अपने पारिवारिक जीवन को सफलतापूर्वक जी नहीं पाई और अकेली पड़ गई तो वे अपनी साहित्यिक वृत्ति को जगाकर सृजन कार्य में जुट गई। मन्नूजी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर पारिवारिक समस्याओं का हल ढूँढती हैं। उन्हीं के शब्दों में "धन की आवश्यकता हर व्यक्तिको होती है। लेकिन मन्नूजी उसके पीछे नहीं भागी। पैसे का संकट चाहे जितना रहा हो.. ज़रूरत भी रही हो, पर पैसे की लालच तो आज तक कभी नहीं रही। पैसे के लिए मैंने कभी भी किसी भी तरह का समझौता नहीं किया। न अपने लेखन में न ही व्यक्तिगत ज़िंदगी में। कभी किसी से उधार नहीं माँगा। म घर बनाते समय, न टिंकू की शादी के समय और न ही अपनी हारी बीमारी के दौरान।"[5]

एक स्त्री के संबंध में आर्थिक पराधीनता सबसे बड़ी चुनौती है। औरतों के किसी लिबास में जेब नहीं होती क्योंकि औरत हमेशा खाली रहती है। पति की जेब में ही सब कुछ भरा रहता है। स्त्री की सेहत पर भी उसकी आर्थिक गुलामी के कारण कोई ध्यान नहीं देता। औरत यूँ ही खटती-मरती रहती है और बच्चे पैदा करते-करते एक दिन इस दुनिया से चली जाती है।

मन्नू भंडारी ने अपने पारिवारिक जीवन के अनुभवों के माध्यम से एक नारी की ज़िंदगी में आनेवाली चुनौतियों को स्पष्ट किया है। उन्होंने यह दिखाने की कोशिश की कि कैसे एक औरत को अपने व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में संतुलन बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, और संतुलन बनाना कितना चुनौतिपूर्ण हो सकता है। "मुझे इनकी नौकरी करने से न कोई शिकायत न तकलीफ। तकलीफ थी तो केवल इस बात की जब आप नौकरी कर ही नहीं सकते.. करना ही नहीं चाहते तो कम से कम फिर मेरे नौकरी करने और घर चलाने पर इतनी-इतनी कुंठाएँ पालकर मेरा और अपना जीवन तो इतना असहज और तकलीफदेह

मत बनाइए। पर अपने अहं और सामंती संस्कारों से लाचार राजेंद्र करें भी तो क्या करें? बस, मैं ही अपनी दुखती रगों और खील कोनों के अपने लेखन से पूरा करने की कोशिश करती रहती थी।"[6]

मन्नू भंडारी ने पारिवारिक और सामाजिक दबावों के बीच अपनी साहित्यिक यात्रा को ज़ारी रखा। उन्होंने इस आत्मकथा के माध्यम से यह महसूस कराया कि एक औरत होने के नाते उन्हें अपने अधिकारों और अस्तित्व के लिए हमेशा प्रतिरोध करना पड़ा। विवाह के बाद एक स्वतंत्र लेखिका के रूप में अपनी पहचान बनाए रखना लेखिका के लिए चुनौतीपूर्ण रहा। उन्होंने पारिवारिक ज़िम्मेदारियों के साथ-साथ साहित्यिक जगत में अपनी जगह बनाना भी चुनौती के रूप में स्वीकार किया।

उनके शब्दों में "मैं तो भोगने के लिए अभिशप्त थी ही और अपनी इसी तरह के कुकर्मों को राजेंद्र विशिष्ट जीवन पद्धति की आड़ में.. रचनात्मकता की आड़ में तर्कसंगत ही नहीं जायज़ भी ठहराते थे।"[7]

मन्नूजी की यह आत्मकथा न केवल उनके जीवन के संघर्षों का दस्तावेज़ है, बल्कि यह एक औरत के आत्मसमर्पण और स्वाभिमान की कहानी भी है। इसमें उनके पारिवारिक जीवन, व्यक्तिगत अनुभव और साहित्यिक दृष्टिकोण को बखूबी उकेरा गया है। इसमें उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के उन आयामों, परिस्थितियों और पहलुओं का विवरण है, जिसने उनकी रचना-यात्रा में निर्णायक भूमिका निभाई। मन्नू भंडारी के ही शब्दों में, "अपनी कहानी लिखते समय सबसे पहले तो मुझे अपना कल्पना के परे ही कतर कर एक और सरका देने पड़े, क्योंकि यहाँ तो निमित्त भी मैं ही थी और लक्ष्य भी मैं ही - यह शुद्ध मेरी ही कहानी है और इसे मेरा ही रहना था, इसलिए न कुछ बदलने-बढ़ाने की आवश्यकता थी, न काटने छाँटने की यहाँ मुझे केवल उन्हीं स्थितियों का ब्योरा प्रस्तुत करना था, वो भी जस-का-तस जिनसे मैं गुज़री दूसरे शब्दों में कहूँ तो जो कुछ मैंने देखा, जाना, अनुभव किया, शब्दश उसीका लेखा-जोखा है यह कहानी।"[8]

संघर्ष और चुनौतियाँ हर जीवन का हिस्सा होता है, लेकिन इनसे उभरकर अपनी पहचान बनाना ही सच्ची सफलता है। उनका मानना था कि पारिवारिक जीवन में संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि समाज की संरचना और मान्यताओं का भी प्रतिबिंब होता है। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया है कि साहित्यिक जगत में पुरुष प्रधान मानसिकता के चलते महिलाओं को अपने लेखन को गंभीरता से स्थापित करने में कठिनाई होती है। मन्नूजी ने औरत के अधिकारों और उसकी स्वतंत्रता की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने अपने अनुभवों के माध्यम से दिखाया है कि एक स्त्री के लिए अपने विचारों और इच्छाओं को व्यक्त करना कितना महत्वपूर्ण है, चाहे उसे कितनी भी पारिवारिक रुकावटों का सामना करना पड़े। वह कभी भी आत्मसम्मान से समझौता नहीं करती। उन्होंने अपनी ज़िंदगी से यह दर्शाया कि स्त्री को किसी भी हालत में अपने सम्मान और अधिकारों के प्रति सजग रहना है। लेखिका लिखती है, "गनीमत यही है, बल्कि कहूँ कि संतोष की बात है कि मैं अपनी सीमा के प्रति हमेशा सचेत रही हूँ, कुछ ज़्यादा ही सचेत, तो अपनी सीमा और सामर्थ्य के बाहर कभी भी कुछ अनर्गल रचने हिम्मत नहीं की मैंने।"[9] एक माँ के रूप में अपनी ज़िम्मेदारियाँ और एक लेखिका के रूप में अपनी पहचान बनाए रखने के बीच उन्होंने कई बार खुद को अकेला और असहाय महसूस किया। लेकिन उन्होंने सभी चुनौतियों को आत्मबल से सामना किया।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि मन्नूजी अपनी अस्मिता की तिलांजली देतकर पति या परिवार की खोखली प्रतिष्ठा बचाना नहीं चाहती थी। इस आत्मकथा में लेखिका सजग, जागृत एवं अपने अधिकार प्राप्ति के लिए हमेशा संघर्षरत रही हैं। हम निस्संदेह कह सकते हैं कि मन्नू भंडारी की यह आत्मकथा, स्त्री-चेतना का पुरुषवादी चेहरे का पोल खोलने के साथ-साथ, यह प्रेरणा भी देती है कि स्त्रियों के हक में किए जाने वाले संघर्षों में कभी भी अपनी जिजीविषा, अपनी सादगी, आदमीयता और रचना-संकल्प न टूटें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 मन्नू भंडारी, एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण 2009, पृ.18

2 सारिका (अगस्त अंक) (1), 1978, पृ.16

3 मन्नू भंडारी : एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2007, पृ.10

4 वही, पृ.56

5 वही, पृ.130

6 वही, पृ.67

7 वही, पृ.99

8 वही, पृ.8

9 वही, पृ.130

शोध निर्देशिकाः डॉ हेमा.जी

शोधार्थी, परास्नातक हिंदी विभाग एवं शोध केंद्र

सरकारी आर्ट्स व साइन्स कॉलेज, कालिकट

वृद्ध जीवन के संघर्ष का बयान : गिलिगडु

डॉ तेरेसा टिनसी टी जी

हिन्दी साहित्य की सुपरिचित कथाकार चित्रा मुद्‌गल एक प्रतिभा सम्पन्न तथा बहुचर्चित लेखिका है। चित्रा मुद्‌गल ने अपनी रचनाओं में सामाजिक समस्याओं को ही प्रस्तुत किया है। लेखिका ने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक ,पारिवारिक विघटन आदि विभिन्न समस्याओं को उकेरा है। उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू साहित्य में प्रतिबिंबित होते हैं। अनुभवों की बहुलता के कारण ही परिवेश की यथार्थता का जीता जागता लेखा जोखा उनके साहित्य के माध्यम से हमारे सामने उपस्थित होता है। अपनी रचनाओँ में जो संवेदनशीलता है उसके कारण ही हिन्दी साहित्य में उन्होंने अपनी अलग पहचान बनायी है। 'जागरण' जैसी संस्थाओं से जुड़कर उन्होंने स्त्री समाज के लिए प्रेरणादायक कार्य किया । उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - आवां, गिलिगडु, पोस्टबॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा (उपन्यास) लाक्षागृह ,अपनी वापसी (कहनी संग्रह)। चित्रा मुद्‌गल कई पुरस्कारों से से भी सम्मानित व्यक्तित्त्व है।

समकालीन साहित्य में दलित, स्त्री, आदिवासी, परिस्थिति जैसे कई विमर्श उभरकर आए है। आजकल वृद्धविमर्श भी ज़ोरों पर है। समकालीन समय में सब व्यस्त है। इसलिए बच्चों के पास अपने माता पिता के लिए समय नहीं है। इसलिए् बुजुर्गों का मानसिक और शारीरिक अवस्था दर्दनाक है। उनके पास बैठनेवाला या बात करनेवाला कोई नहीं है। आजकल यह एक सामाजिक समस्या है। हर साल अक्तूबर 1 को हम वृद्ध दिवस मनाते हैं। लेकिन इससे वृद्ध-जीवन में कोई सुधार है क्या? साल में सिर्फ एक दिन अपने माता पिता के लिए रखना कहाँ तक जायज है? ज़िंदगी भर उनकी देखभाल करना हमारा कर्तव्य है । हमारे समाज में दिन ब दिन उनके साथ अत्याचार हो रहे हैं। वृद्ध सदनों की संख्या बढ़ रही है। कुछ लोग माँ बाप को सड़कों पर छोड़ देते है । वृद्धों की ज़िंदगी में निराशा,अवसाद ,तनाव ,बढ़ रहा है। आर्थिक तंगी ,खाने की कमी ,सबसे ज्यादा प्यार और इज्जत की कमी उन्हें खलती है ।समकालीन हिन्दी साहित्य में वृद्धविमर्श पर लिखे गये उपन्यास है चित्रा मुद्‌गल का गिलीगडू, निर्मल वर्मा का अंतिम अरण्य, अज्ञेय का अपने अपने अजनबी ,कृष्ण सोबती का समय सरगम आदि । इन उपन्यासों में लेखकों ने अकेलापन, पीढ़ियों का दरार, मूल्य विघटन आदि विषयों पर विचार किया है। बदलते परिवेश में बदलते मूल्यों को ही लेखकों ने दिखाने की कोशिश की है।

चित्रा मुद्‌गल का चर्चित उपन्यास है गिलीगडु। इसमें लेखिका ने वृद्धविमर्श को ही केंद्र बनाया है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । समाज में रहकर ही उसका विकास होता है। लेकिन हर समाज में मूल्य विघटन हो रहा है। गिलीगडु उपन्यास में लेखिका ने परंपरागत जीवन मूल्यों के विघटन को ही उजागर किया है। समकालीन वृद्ध जीवन का दस्तावेज़ है गिलीगडु। इस उपन्यास की मूलसंवेदना वृद्धों का अकेलापन ही है। समकालीन दौर में वृद्धावस्था तक पहुँचते पहुँचते लोगों की ज़िंदगी दर्दनाक बन जाती है। क्योंकि उन्हें संभालनेवाला उनके साथ बैठनेवाला कोई नहीं है। बड़े होने के बाद बच्चे बड़ों की जिम्मेदारी लेना नहीं चाहते हैं। उन्हें यह अनावश्यक बोझ लगने लगता है। एक से अधिक बच्चे है तो वे माँ बाप को इधर उधर भटकने के लिए छोड़ देते हैं । माता पिता की इच्छाओं का मान नहीं रखा जाता है। उनके लिए पसंदीदार खाना या कपड़ा नहीं देते हैं। उन्हें कहीं बाहर ले जाने के लिए बच्चों को शर्मिंदगी महसूस होता है। इस उपन्यास में लेखिका ने वृद्ध जीवन की त्रासदी के साथ उनका प्रतिरोध भी व्यक्तकिया है। और यह प्रतिरोध एक प्रेरणादायी कदम है। लेखिका ने बहुत सराहनीय दृष्टिकोण को पाठकों के सामने रखा है।

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है सेवनिवृत्त बाबू जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी। इन दोनों के जीवन के चित्रण से ही उपन्यास की कहानी आगे बढ़ती है। कानपुर के रहनेवाले बाबू जसवंत सिंह की पत्नी की मौत के बाद वह अकेला था। उसके बाद उसके दोस्त का भी निधन हुआ और वह अकेला पड़ गया। उनका दुख और अकेलापन बढ़ने की वजह से उनकी शारीरिक तकलीफें भी बढ़ने लगीं। डॉक्टर ने उन्हें सलाह दी कि अकेले रहने से अच्छा है अपने बच्चों के साथ रहे। इसलिए वह कानपुर छोड़कर दिल्ली आ जाता है। लेकिन बेटे के घर में उन्हें ठीक से रहने के लिए जगह भी नहीं है। पोतों को तो इनसे बात करने तक की फुरसत नहीं है। बहु सुनैना को ससुर का वहाँ रहना भी पसंद नहीं

था। धीरे धीरे इनका स्वास्थ्य और बिगड़ने लगा। मानसिक और शारीरिक तौर पर वह बहुत तकलीफ में था। सुबह की सैर में बाबू जसवंत सिंह की मुलाकात स्वामी से हुई। दोनों में दोस्ती हुई। तेरह दिनों के इनकी कहाने ही इस उपन्यास का केन्द्रबिन्दु है। उस घर में सेवनिवृत्त बाबू जसवंत सिंह का जीवन किस प्रकार कट रहा था और अपने ही घर में अपरिचित की तरह जीना एक आदमी के लिए कितना दर्दनाक है इसका बयान वह स्वामी से करता है। यहाँ पर लेखिका ने वृद्ध जीवन की मानसिक तनाव और पीढ़ियों के संघर्ष को दिखाने की कोशिश की है। पहले जमाने में परिवार में बच्चों द्वारा माता पिता का आदर सम्मान किया जाता था। लेकिन आजकल इस मूल्यविघटन के समय में नौजवानों के पास इनके लिए समय ही नहीं है। दिल्ली आने के बाद सेवानिवृत्त बाबू जसवंत सिंह अपने पोते मलय और निलय के साथ समय बिताना चाहता है। लेकिन पोते तो अपने कमरे में कंप्युटर के साथ व्यस्त रहते हैं। उनका जन्मदिन जसवंत उनके साथ मनाना चाहता है। लेकिन पोतों ने मना किया। क्योंकि बच्चों के लिए बड़े बोरियत की चीज़ बन गई है। बच्चों को मूल्य देना बड़ों का काम है। जब बड़े ही अपने माँ बाप से दूरी बनाकर रखते है तो वे अपने बच्चों को क्या सीख दे सकते हैं। लेकिन वे यह नहीं सोचते हैं कि एक दिन वे भी बूढ़े हो जाएंगे। उनके बच्चे भी उनके साथ यही सलूक करेंगे। ज्यादातर नौजवानों की नजर तो माता पिता की संपत्ति पर है। जसवंतसिंह का बेटा नरेंद्र ,बहू सुनैना ,और बेटी शालिनी सब पैसों के बारे में ही सोचते हैं । इसलिए वे चाहते थे लॉकर बंद कर दे। बहू भी सांस की जेवरात के बारे में चिंतित है। लेकिन जसवंत सिंह लॉकर बंद करने के लिए तैयार नहीं था।

जसवंत और स्वामी घनिष्ट मित्र बन गए। दोनों एक दूसरे की मदद करते थे। अपने परिवार और बच्चों के बारे में एक दूसरे से हर बात बाँटते थे। जसवंत सिंह अपने परिवार से बहुत नाखुश था। लेकिन स्वामी ने हमेशा यही दिखाने की कोशिश की कि वे एक ऐसे परिवार के साथ रहते हैं जिसमें सब एक दूसरे से प्यार करते है। लेकिन वास्तविकता कुछ और ही है। स्वामी के घर में कोई नहीं था। वह अकेला रहता था। उनके 'बेटे और बहुएँ' उन्हें अकेला छोड़कर अलग रह रहे थे। लेकिन उन्होंने कभी भी अपना दुख दूसरों को नहीं दिखाया। शायद अपने दुख के कारण ही उन्होंने जसवंत सिंह के दुख को पहचाना था और हमेशा जसवंत को खुश रखने की कोशिश भी की थी। स्वामी ने अपनी पोतियों कात्यायनी और कुमुदिनी को ही गिलीगड्डु नाम दिया था। गिलीगड्डु का अर्थ है किलिकल्।

बुढ़ापे में शारीरिक हालत बहुत बिगड़ जाती है। याददाश्त कमजोर हो जाती है। इससे उन्हें बहुत तकलीफ होती है। लेकिन इनके साथ रहनेवाले उनको समझने के बगैर उनपर उंगली उड़ाते है। तब उनकी ज़िंदगी और भी बदत्तर बन जाती है। जसवंत सिंह बत्ती बुझाना भूल जाता है , लिफ्ट बंद करना भी भूल जाता है। एक बार ऐसा होता है कि वे बैल्कनी में खड़े होकर धोती ठीक कर रहे थे और सामने वाली बैल्कनी में रहनेवाली औरत ने उसपर नारी शोषण का आरोप लगाया। दरअसल जसवंत सिंह ने इस बारे में सोचा तक नहीं था। इस विषय को लेकर सुनयना ने उसे बहुत डांटा। जसवंत के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचा। यहाँ पर जसवंत को अपना पक्ष रखने का मौका नहीं दिया जा रहा है। सभी लोगों ने मिलकर उसे गलत ठहराया। हमेशा हमारे समाज में कमज़ोरों पर ही अत्याचार किया जाता है। कोई भी उनकी तरफ से बोलनेवाला नहीं है। जब भी जसवंत अपने बेटे नरेंद्र से बात करता है तो बेटा पिता को ही अडजस्ट करने की सलाह देता है। क्योंकि वह अपनी सोसाइटी या अपनी पत्नी से नाराज होना नहीं चाहता। लेकिन वह यह नहीं सोचता है कि एक दिन वह भी बूढ़ा हो जाएगा।

इस उपन्यास में बूढ़ों के प्रति नौजवानों की मानसिकता का एक और उदाहरण है उनके द्वारा बूढ़ों का लैफिंग क्लब बंद करवाना। जब वृद्धों ने मिलकर अपनी खुशी के लिए यह क्लब बनाया तो नौजवानों को यह शोर मचाने जैसे लगा। इसलिए न चाहते हुए भी बूढ़ों को यह क्लब बंद करके उसे सत्संग में बदलना पड़ा। जिस उम्र में उन्हें खुशी के साथ आराम करना होता है उसी उम्र में उन्हें तनाव भरी माहौल में ज़िंदगी गुजारनी पड़ती है। बुढ़ापे में लोग जीवन से ज्यादा मौत के बारे में सोचने के लिए मजबूर हो जाते है। उनकी ज़िंदगी में न प्यार बचता है और न जीवनसाथी। निराशा और हताशा से ये लोग आगे बढ़ते हैं। इस उपन्यास में जब तक जसवंत की पत्नी जिंदा थी तब तक वह बहुत खुश था। उनका सारा काम पत्नी ही करती थी । जबसे पत्नी की मौत हुई तबसे उनका जीवन नरक बन गया। कर्नल स्वामी हमेशा जसवंतजी को ज़िंदगी के प्रति प्रतीक्षारत होने की सलाह देता था। मौत तो एक न एक दिन आनी है लेकिन उसकी प्रतीक्षा में वर्तमान समय की खुशी नष्ट करना कहाँ तक जायज है और इसलिए कर्नल साब

उसे प्रेरणा देता था। कर्नल स्वयं भी खुश रहता था और जसवंत को भी खुश रखने की कोशिश करता था । इस उपन्यास में इनके अलावा मिस्टर भट्ट और अणिमा का भी जिक्र है। अणिमा अपनी वृद्धावस्था में अकेली है इसलिए वह एक साथी खोजती है। स्वामी को उसका विज्ञापन अच्छा लगता है और दोनों में पत्राचार शुरू हो जाता है।

नरेंद्र अपने पिता को वृद्धाश्रम में छोड़कर विदेश जाने की तैयारी में है । वह खुद पिता से इसके बारे में नहीं बात करता है वह अपनी बहन से कहता है कि पिता से बात करें। पिता को यह खबर सुनकर धक्का लगता है। वह निराश और हताश हो जाता है। जिन बच्चों को पाला पोसा और अंतिम पड़ाव में जिनके साथ रहना चाहा वे ही उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ने को लालायित हैं। जसवंत बच्चों पर बोझ बनना नहीं चाहता है। बच्चे लोग पैसों के पीछे है। स्वामी के घर में भी बेटा पैसों के लिए पिता पर हाथ उठाता है। नई पीढ़ी की सोच में बहुत बदलाव आयी है। लेकिन स्वामी बेटे पर केस करने को तैयार नहीं है। वह अपने बच्चों से बहुत प्यार करता है । समकालीन दौर में हम अखबारों में कितनी घटनायें देखते हैं जहाँ बच्चे वृद्धों को घर से निकाल देते हैं या किसी मेले में लाकर छोड़ते हैं। कुछ लोग वृद्धों को भूखा प्यासा रखते हैं। लेकिन ज्यादातर बूढ़े बच्चों के खिलाफ कोई शिकायत नहीं करते हैं। लेकिन जसवंत इससे भिन्न है। वह तंग आकर अपना विरोध कर ही लेता है। जब जसवंत को पता चलता है कि स्वामी ने अपने परिवार के बारे में जो भी बताया था वह सब झूठ था तो उन्हें बहुत बुरा लगता है। स्वामी के घर जाने पर ही जसवंत को सच्चाई मालूम पड़ती है। पड़ोसियों ने ही स्वामी का हाल बताया था। अपना घनिष्ट मित्र मर चुका है यह सुनकर जसवंत टूट जाता है । बहु के कारण दोनों एक दूसरे से बात तक नहीं कर पाते थे। जब भी फोन करता बहू डाँटने लगती। वे दोनों एक दूसरे के घर भी नहीं जा पाते थे। अपने जीवन परिस्थितियों ने जसवंत को नया फैसला लेने के लिए मजबूर करता है। जसवंत अपने बच्चों से अलग होकर अपना गाँव वापस जाने का फैसला करता है। वहाँ पर नौकरानी सुनगुनिया और बेटा रहते थे। पत्नी की मौत के बाद उसीने ही जसवंत की देखभाल की थी। दिल्ली जाने के बाद भी जसवंत उसके बेटे रामरतन को पढने के लिए पैसा भेजता था। अंतिम समय जसवंत उसके साथ रहने का फैसला करता है। सारी संपत्ति उसके नाम कर दिया और दाह संस्कार का अधिकार रामरतन को दे दिया। रिश्ते का नाम देने हक भी सुनगुनिया को दिया। जसवंत अपना अंतिम समय अपनी मर्जी से खुशी खुशी जीना चाहता था। यहीं पर चित्रा मुद्गल ने उपन्यास को समाप्त किया है।

इस उपन्यास में लेखिका ने हमारे बदलते परिवेश में वृद्धजीवन को उकेरा है। नयी पीढी किसी न किसी तरह वृद्धों से अपना पीछा छुड़ाना चाहता है। पैसेवाले लोग आराम भरित शानदार वृद्धसदनों में रहते है और गरीब लोग आम वृद्धसदनों में रहते है। लेकिन दोनों की जो मानसिक पीड़ा है उसमें ज्यादा फर्क नहीं है। आजकल हर कोई विदेश जाने की ओर उत्सुक है और अपने बूढ़े परिवार को यहीं पर छोड़ जाते है। चाहे जितने भी पैसा हो बंगला हो गाड़ी हो पर बुढ़ापे में प्यार और सम्मान मिलना नसीब की बात है। अपने बच्चों और नाती पोतों के साथ रह पाना भी तकदीर है। आजकल हमें भी इस बात पर सोचना चाहिए। बूढ़ों की मृत्यु होने के बाद भी बच्चे दाह संस्कार के लिए नहीं आते है । उनके पास समय नहीं होता है। आजकल पैसे दे तो दाहसंस्कार भी शान से करने के लिए सेवा मिल जाती है।

इस उपन्यास का शीर्षक भी सार्थक है। इस उपन्यास में स्वामी अपनी पोतियों को गिलीगड्डु नाम से बुलाता है। यानि कि उसका अर्थ है मलयालम में किलिकाल्। हिन्दी में चिड़ियाँ। बच्चियाँ जो है चिड़ियों की तरह चहकती हैं और उड़ती रहती हैं। हमेशा खिलखिलाती रहती है। जिस प्रकार हमें चिड़ियों को देखकर खुशी मिलती है उसे तरह बच्चों के साथ भी हमें खुशी महसूस होती है। इस और लेखिका ने इशारा किया है। प्रकृति का भी जिक्र इस उपन्यास में है । प्रकृति हमारी मां है। जिस प्रकार वृद्ध लोग हमारे जीवन की जड़ है उसी तरह प्रकृति भी हमारी जड़ है। जड़ से अलग होकर हमारा कोई अस्तित्व नहीं है। उनके अनुभवों और उनके द्वारा दी गई सीखों से ही हमारी ज़िंदगी आगे बढ़ती है। बुजुर्गों के बगैर हम बिना जड़ के पेड़ जैसा है। लेखिका ने इस उपन्यास के जरिए हमें सोचने पर मजबूर किया है। जन्दिगी भर उन्हें प्यार और सम्मान देना हमारा कर्तव्य है। हम जो बोते है वही हम भी पाते है। हमने अपने मां बाप के साथ जो किया वही हमारे साथ आगे होगा। इसलिए हमें नयी पीढ़ी के लिए एक मिसाल बनना चाहिए और वृद्धों का सहारा बनकर उनका आदर सम्मान करना चाहिए।

सहायक आचार्या, हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, एरणाकुलम

रचनात्मक कल्पनाशीलता और विज्ञानः अध्ययन में समय और श्रम की बचत

विनोद शर्मा

शोध सारांश : इक्कीसवीं सदी को वैश्वीकरण, दूरसंचार और डिजिटल प्रौद्योगिकी का युग माना जाता है। विज्ञान, सूचना और प्रौद्योगिकी में ये प्रगति कई क्षेत्रों में वरदान साबित हुई है (उदाहरण के लिए - मोबाइल फोन, कंप्यूटर आदि जैसे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट) और इसने जीवन की जटिलताओं (उदाहरण के लिए - इंटरनेट की लत, मोबाइल फोन की लत आदि) में भी योगदान दिया है। ये जटिलताएँ पहले से मौजूद समस्याओं के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में नई समस्याओं के समाधान की मांग करती हैं। इनमें से कई समस्याएँ इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे मानव जाति के अस्तित्व से जुड़ी हैं। यहीं पर रचनात्मकता की भूमिका प्रासंगिक हो जाती है क्योंकि यह समस्याओं के लिए अद्वितीय समाधान प्रदान करने में मदद करती है। दिमाग़ मे स्मृति (मेमोरी) किन्हीं दो सूचनाओ का आपसी संयोजन होता है, इसे ही हम साहचर्य कहते है। इसी साहचर्य को यदि किसी मैथड की तरह इस्तेमाल करे तो हम वे सब कुछ याद रख सकते है जिसे याद रखना चाहते है। कुछ भी याद करने का महत्व तभी है जब वे समय पर याद आ जाए आप के दिमाग़ मे जो कुछ भी मेमोरी के तौर पर है उसे याद आने के लिए हम क्या करते है उससे जुड़ी किसी सूचना को सवाल के तौर पर पूछते है।

शब्द कुंजी- रचनात्मक कल्पनाशीलता, विज्ञान, शिक्षा, सूचना और प्रौद्योगिकी इत्यादि।

पृष्ठभूमिः- क्या कभी आपने किसी कुत्ते को मोबाइल पर बात करते हुए देखा है? या बकरी को ब्यूटी पार्लर जाते हुए, या घोड़े को कार चलाते हुए , या गधे को गणित की ट्यूशन पढ़ते हुए? ये पढकऱ के आपको हँसी आ रही होगी, अजीब लग रहा होगा? लेकिन यहाँ जो बात समझने वाली है, वह ये है कि ये सारे काम हमारे आस पास होते रहते हैं, हम लोग करते रहते हैं और हमें कोई आश्चर्य नही होता क्योकि हमारे लिए यानी इंसानो के लिए ये सब आम बात है, जबकि ऐसा जानवर या अन्य प्राणी नही कर सकते। लेकिन आप ये ज़रूर जानते होंगे कि आज से लाखों वर्ष पूर्व ये जानवर और हम एक जैसे ही थे और एक ही जैसा जीवन जीते थे, जंगल मे रहते थे गुफाओं में। और मुख्यतः एक ही काम सब करते थे भोजन ढूँढने का, भोजन मिलने पर पुनः अपनी गुफा मे लौट आते थे। आज इतने वर्षो बाद , ये जानवर आज भी ऐसे ही है, बस पूरे दिन भोजन की तलाश और फिर अपनी जगह पर। लेकिन हम इंसान बदल गये। इतने निर्माण किए, इतने आविष्कार किए, पूरी दुनिया का नक्शा ही बदल डाला, जंगल से शहर और गुफाओं से आलीशान इमारतों का सफर इंसान ने अपने दिमाग़ के बलबूते पर तय किया। लेकिन क्या आप जानते है, कि दिमाग़ की कौन सी विशेषता और कौन सी शक्तिके सहारे इंसान ऐसा कर पाया? वह है, कुदरत ने हर प्राणी को कोई ना कोई ख़ासियत दी है शारीरिक रूप से, जो इंसान को मिली शारीरिक शक्ति से कहीं ना कहीं ज़्यादा विशिष्ट और ताकतवर है, जैसे शेर को तीखे दाँत और पंजे दिए, हाथी को असीम शक्ति दी, चिड़यिा उड़ सकती है, मछली पानी के अंदर तैर सकती है, यानी जानवरों को शारीरिक विशेषताएँ मिली हैं, जबकि इंसान को शारीरिक रूप से इस प्रकार की ख़ासियते नही मिली हैं, फिर भी इंसान पूरी दुनिया

पर इन जानवरों से ज़्यादा बड़े पैमाने पर राज करता है, बल्कि इन पशुओं को भी अपने नियंत्रण में रख लेता है, इसका कारण है इंसान की सबसे बड़ी ख़ासियत , उसका दिमाग़। यह ख़ासियत ही उसे एक शक्तिशाली प्राणी बनाती है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि दिमाग़ मे जो चीज़ दिमाग़ को ये शक्ति देती है वो चीज़ है क्रिएटिव इमेजीनेशन। यानी इंसान का दिमाग़ कल्पना कर सकता है, वह भी रचनात्मकता के साथ। अर्थात इंसान जो उसने नही देखा है, उसकी भी कल्पना करके उसके सृजन के बारे में सोच सकता है। और इसी शक्ति के बूते इतने आविष्कार हुए है। इतना बदलाव हुआ है। अल्बर्ट आइंस्टाइन ने भी कहा है कि इंसान का इमाजीनेशन इस दुनिया की सबसे ताकतवर चीज़ है। बस इस शक्ति को हमे पढ़ाई में और जीवन के किसी भी काम को करने में इस्तेमाल करना चाहिए। यही है जो असम्भव को संभव कर देता है। किसी एक विषय या अध्याय को पक्का और पूरा याद करने में समय निर्भर करता है। विषय या सूचना के प्रकार पर सबसे आसान होता है चीज़ों को याद करना जो दिखाई देती है, जिनका त्रि-आयामी चित्र बनता है। जैसे छोटे बच्चों कि प्ले- स्कूल में चीज़ें दिखाई जाती है और बच्चे उन्हें देख कर सीखते हैं। उससे मुश्किल होता है शब्दों को याद करना। उससे मुश्किल होता है राइमिंग यानि तुकबंदी वाली विषय वस्तु जैसे पोएम या कवितायें । उनसे मुश्किल होता है शब्द समूह यानि वाक्यों को याद करना , उससे मुश्किल होता है वाक्य समूह यानी थ्योरी याद करना। और सबसे मुश्किल होता है, संख्याओं को याद करना। क्योंकि संख्याएँ अमूर्त होती हैं। असल में दिमाग की नज़र में वो सूचनाएँ सरल और जल्दी याद होने वाली होती है जिनके वास्तविक अर्थ के साथ साथ कोई चित्रात्मक सूचना भी प्रकट हो जाती है। संख्यात्मक सूचनाओं का कोई सहायक चित्र नहीं होता इसलिए संख्या रूपी सूचनाएँ कंफ्यूसिंग होती है और देर से बार बार दोहराने पर याद होती है। कौन से बैंक में अकाउंट है , ये सुनते ही आपके दिमाग में बैंक दिखने लगेगा लेकिन बैंक अकाउंट नंबर याद नहीं आता , दोस्तों के नाम पते चेहरे फिर भी याद आ जाते है लेकिन उनका फ़ोन या मोबाइल नम्बर फ़ोन में या डायरी में नोट करके ही रखना पड़ता है। और समय बचाने का श्रेय जाता है, विज्ञान को। विज्ञान हमारे जीवन में किसी काम में लगने वाला समय, श्रम और थकान को कम करता है और काम को आसान करके उसकी गति बढ़ाता है। लेकिन पढाई में आज पहले से ज्यादा वक्त और ज्यादा एफर्ट्स यदि अच्छे अंक लाने के लिए लगाने पड़ते हैं तो ये इंगित करता है कि हम विज्ञान पढ़ते तो है लेकिन उसका उपयोग पढाई में नहीं करते। जिस तरह आवागमन में किसी दूरी को तय करने के लिए पैदल, साईकिल, बस, रेल, कार और हवाई जहाज जैसे विभिन्न तरीके है, और अलग अलग तरीके से दूरी तय करने का समय और गति भी अलग अलग होगी उसी तरह से पढ़ाई में और याद करने में भी यदि तरीके बदले जाएँ तो उसमें भी लगने वाला समय और श्रम बदलेगा और बचेगा।

रचनात्मकता और कल्पना को बढ़ावा देने की रणनीतियाँ : यहाँ कई रणनीतियाँ दी गई हैं जिन्हें इन महत्वपूर्ण कौशलों को विकसित करने के लिए नियोजित किया जा सकता है:[1]

कहानी सुनाना और भूमिका निभाना शामिल करें: बच्चों को अपनी कहानियाँ बनाने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें। यह मौखिक कहानी सुनाने, लिखित आख्यानों या भूमिका निभाने वाली गतिविधियों के माध्यम से किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण न केवल उनकी रचनात्मक सोच को बढ़ाता है बल्कि उनकी भाषा और संचार कौशल को भी बेहतर बनाता है।

खुले संसाधन प्रदान करें: ऐसी सामग्री का उपयोग करें

जिसका उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जा सके। बिल्डिंग ब्लॉक, कला की आपूर्ति और पुनर्चक्रित सामग्री जैसी वस्तुएँ बच्चों को अपनी कल्पना का उपयोग करके कुछ अनूठा बनाने की अनुमति देती हैं। इस प्रकार का खेल समस्या-समाधान और नवीन सोच को प्रोत्साहित करता है।

प्रेरक वातावरण बनाएँ: कक्षा का भौतिक स्थान आमंत्रित करने वाला और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने वाला होना चाहिए। कला का प्रदर्शन, विभिन्न प्रकार के रंग होना और शांत चिंतन और सहयोगात्मक कार्य के लिए अलग-अलग स्थान प्रदान करना सभी एक रचनात्मक वातावरण में योगदान दे सकते हैं।

पूछताछ-आधारित शिक्षा को लागू करें: छात्रों को प्रश्न पूछने और उन विषयों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करें जिनमें उनकी रुचि है। यह दृष्टिकोण जिज्ञासा और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा देता है। शिक्षक जांच प्रक्रिया के मार्गदर्शन कर सकते हैं, लेकिन उन्हें छात्रों को अपने स्वयं के सीखने को निर्देशित करने की स्वतंत्रता देनी चाहिए।

बुद्धिमानी से तकनीक का प्रयोग करें: जबकि तकनीक को सीखने के माहौल पर हावी नहीं होना चाहिए, यह रचनात्मकता के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है। ड्राइंग, संगीत रचना और डिजिटल कहानी कहने के लिए ऐप रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए नए रास्ते खोल सकते हैं।[2]

जोखिम लेने और प्रयोग करने को प्रोत्साहित करें: ऐसा माहौल बनाएँ जहाँ नई चीज़ें आज़माना और गलतियाँ करना सुरक्षित हो। यह केवल अंतिम परिणाम के बजाय प्रयास और रचनात्मक प्रक्रिया की प्रशंसा करके किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण लचीलापन और प्रयोग करने की इच्छा बनाने में मदद करता है।

पाठ्यक्रम में कला को एकीकृत करें: कला, संगीत, नाटक और नृत्य को अन्य विषयों में शामिल करें। यह न केवल सीखने को और अधिक मनोरंजक बनाता है बल्कि बच्चों को विभिन्न तरीकों से समझ और विचारों को व्यक्त करने की अनुमति भी देता है।

मनन और चिंतन को बढ़ावा दें: बच्चों को मनन तकनीक सिखाने से उनकी रचनात्मक सोच बढ़ सकती है। इससे उन्हें अपने दिमाग को साफ करने, ध्यान केंद्रित करने और नए विचारों के लिए खुले रहने में मदद मिलती है।

रचनात्मकता को बढ़ावा देने में शिक्षकों की भूमिका: शिक्षक रचनात्मकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसकी शुरुआत इस बात को स्वीकार करने से होती है कि हर छात्र में रचनात्मक क्षमताओं का एक अनूठा समूह होता है जिसे विकसित किया जा सकता है। शिक्षकों को एक ऐसा कक्षा वातावरण बनाने की ज़रूरत है जो न केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए सुरक्षित हो बल्कि उसे सक्रिय रूप से प्रोत्साहित भी करे। इसमें नए विचारों के लिए खुला होना, सवाल पूछने को प्रोत्साहित करना और गलतियों को विफलताओं के बजाय सीखने के अवसर के रूप में देखना शामिल है।[3]

इस प्रक्रिया में शिक्षकों की कुछ प्रमुख भूमिकाएँ इस प्रकार हैं:

सहायक वातावरण बनाना: शिक्षक एक ऐसा कक्षा वातावरण बनाने के लिए ज़िम्मेदार हैं जहाँ रचनात्मकता को प्रोत्साहित किया जाता है और उसे महत्व दिया जाता है। इसमें एक ऐसा स्थान प्रदान करना शामिल है जहाँ छात्र अपने विचारों को व्यक्तकरने, जोखिम लेने और निर्णय या नकारात्मक नतीजों के डर के बिना विफलता से सीखने के लिए सुरक्षित महसूस करें।

संसाधन और सामग्री प्रदान करना: शिक्षकों को रचनात्मक सोच को प्रेरित करने वाली सामग्री और संसाधनों की एक

श्रृंखला प्रदान करनी चाहिए। इसमें कला की आपूर्ति, तकनीकी उपकरण, विविध पठन सामग्री और अन्य व्यावहारिक संसाधन शामिल हो सकते हैं जो कल्पनाशील अन्वेषण को प्रोत्साहित करते हैं।

अन्वेषण और जांच को सुविधाजनक बनानाः शिक्षकों को छात्रों को अन्वेषण करने, प्रश्न पूछने और जांच-आधारित सीखने में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। छात्रों को उत्तर खोजने और विभिन्न संभावनाओं का पता लगाने के लिए मार्गदर्शन करके, शिक्षक आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल विकसित करने में मदद करते हैं, जो रचनात्मकता के आवश्यक घटक हैं।

रचनात्मक सोच का मॉडल बनानाः शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों, समस्या-समाधान दृष्टिकोणों और चुनौतियों से निपटने के तरीके के माध्यम से रचनात्मक सोच का मॉडल बना सकते हैं। लचीलापन, खुले दिमाग और नए विचारों का पता लगाने की इच्छा का प्रदर्शन छात्रों के लिए एक शक्तिशाली उदाहरण स्थापित करता है।[4]

व्यक्तिगत अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करनाः प्रत्येक छात्र अद्वितीय है, और शिक्षक व्यक्तिगत प्रतिभाओं और अभिव्यक्ति के तरीकों को पहचानने और पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसमें सीखने के अनुभवों को वैयक्तिकृत करना या छात्रों को अपनी समझ और विचारों को व्यक्त करने के लिए विभिन्न विकल्प प्रदान करना शामिल हो सकता है।

निष्कर्ष :- छात्र तब अधिक रचनात्मक होते हैं जब वे अपनी कक्षाओं में जो अनुभव करते हैं उसे कक्षा के बाहर की स्थितियों में शामिल करते हैं। इस अध्ययन के परिणाम दृढ़ता से संकेत देते हैं कि शिक्षण को बदलने के लिए डिज़ाइन किए गए व्यावसायिक विकास कार्यक्रम भी छात्र सीखने में सुधार करते हैं। शिक्षक छात्रों को रचनात्मकता के उपयोग और समझ में अधिक शामिल करके उन्हें विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। रचनात्मकता 'सक्षम करने वाले डोमेन' में से एक है जो विज्ञान शिक्षकों को सुधार प्रयासों को पूरा करने में मदद करता है । ऐसे शिक्षण सुधारों को सभी कक्षाओं में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, न कि केवल विज्ञान में ![5]

जब छात्रों को केवल विज्ञान के बारे में पढ़ने और दूसरों ने क्या हासिल किया है, इसके बजाय विज्ञान को 'करने' के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो वे अपनी रचनात्मकता कौशल को दर्शाने और सुधारने में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं। छात्र रिपोर्ट करते हैं कि रचनात्मकता समस्याओं को हल करने के साथ-साथ अन्य अध्ययनों में उन्हें प्रेरित करने के लिए उनके दैनिक जीवन को भी प्रभावित करती है। यह शोध पत्र प्रयास इस बात की पुष्टि करता है कि रचनात्मक शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए एक अधिक व्यक्तिगत सीखने का अनुभव बन जाती है। हमें अन्य शिक्षकों के साथ अन्य तरीकों से रचनात्मकता के उपयोग का विस्तार करने की आवश्यकता है।

संदर्भ-सूची-

1. जैन, एम.के.व दीक्षित, के.सी., (1992) : 'विज्ञान शिक्षण' राजस्थान प्रकाशन, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर, पृष्ठ संख्या-122
2. फाउलर, एच. सेमुअर (1996): 'माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान-शिक्षा की पद्धतियाँ' आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृष्ठ संख्या-25
3. अरोड़ा, रीता एवं मारवाह सुदेश, 2008: 'शिक्षा एवं अधिगम के मनो समाजिक आधार', शिक्षा प्रकाशन पृष्ठ सं. 234-248
4. पाण्डे, रामशक्ल 2008: 'शिक्षा की दार्शनिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि', विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, पृ.स. 311-320
5. बघेला, डी.एस. 200: 'मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन', विनोद मन्दिर आगरा पृष्ठ सं. 78-93

अनुसंधान एवं प्रशिक्षण उपाध्यक्ष
ब्रेनीवुड फाउंडेशन, भीलवाड़ा
राजस्थान

श्रीमद्‌भगवदगीता में धर्म और सनातन धर्मः एक अध्ययन

डॉ श्रीकान्त हाजरा

प्रस्तावना

वर्णे तु यस्मिन् मनुजः प्रजातस्तत्रत्यकार्यं कथितः स्वधर्म।/ शास्त्रेण तस्मान्नियतं हि क्रम कर्तव्यमित्यत्र विधानमस्ति।।

'धर्म' शब्द संस्कृत के धृ धातु से आया है। अर्थात जो धारण करता है वही धर्म है। जैसे मां गर्भ में बच्चे को धारण करती है, अनुशासनों से बांधती है और नियंत्रित करती है, वैसे ही धर्म मानव जाति को एक काल्पनिक क्रम तथा नियम में शासन करता है, आत्मशृड्खला से बांधता है और नियंत्रित भी करता है। ऐसा ही एक धर्म ग्रंथ है श्रीमद्‌भगवद्‌गीता। गीता में मूलतः धर्म का वर्णन प्रमुख है। यदि गीता के आरंभ और अंत अक्षर अर्थात् आरंभ 'धर्मक्षेत्रे' पद से 'ध' और अंतिम 'मतिर्मम' पद से 'म' ले लिया जाए तो 'धर्म' प्रत्याहार हो जाता है, इसलिए संपूर्ण गीता धर्म से आधारित है। गीता में जाति की पारंपरिक कुलमर्यादा, स्थिति, रीति-रिवाजों को भी 'कुलधर्मः सनातना?' (1/40), 'जातिधर्मा?' (1/43) जैसे शब्दों से 'धर्म' कहा गया है, और धर्मसम्मूढचेताः (2/7) 'स्वधर्मम् धर्म्यात्' (2/31), 'धर्म्यम्, स्वधर्मम्' (2/33) 'स्वधर्मः' (3/35 ;18/47) आदि को भी 'धर्म' या 'स्वधर्मः' कहा जाता है। तथा वैदिक अनुष्ठान को 'त्रयीधर्मम्' (9/21) श्लोक द्वारा 'धर्म' भी कहा गया है। यदि व्यक्ति यानि साधना इन सभी धर्मों का कर्तव्य के रूप में ईमानदारी और प्रभावी ढंग से पालन करता है तो उसे परमात्मा यानि परमपुरुष की प्राप्ति हो जाती है। इस सन्दर्भ में गीता में कहा गया है - स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।/ स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु।।[1]

गीतानुसार स्वधर्म और परधर्म : व्यक्ति जिस वर्ण में जन्म लेता है, शास्त्र उस वर्ण के अनुरूप कर्तव्य-कर्म आदि निर्दिष्ट करते हैं। वह कर्म ही उस व्यक्ति का 'स्वधर्म' है। और जिस कार्य के लिए शास्त्रों ने निषेध किया है, वह दूसरी जाति के व्यक्ति (जिसके संबंध में यह वर्जित है) के लिए 'परधर्म' है। यहाँ तक कि निम्न कोटि का अपना धर्म भी उचित ढंग से संचालित 'परधर्म' से बेहतर है। यदि वह अपने धर्म का पालन करते हुए मृत्यु के मुख में भी पड़ जाए तो भी उसका कल्याण होता है। लेकिन यदि आप अनैतिक आचरण करेंगे तो और परधर्म में सामिल हो जाए तो मनुष्य खतरे में पड़ जा सकता , अधर्म हो सकता है । इस सन्दर्भ में गीता के विशेष वचनों का उल्लेख है- श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात्।/ स्वधर्मे निधनं श्रोय परधर्मो भयावहः।।[2]

ध्यान देने योग्य बात यह है कि वर्णाश्रम कर्म के बिना भी परिस्थिति के अनुसार कर्तव्य एवं कर्मों का पालन करना भी मानव स्वभाव है। उदाहरण के लिए मन लगाकर पढ़ाई करना विद्यार्थी का स्वभाव है। अध्यापक छात्र को अपना देना धर्म हैं, गृह का कर्तव्य कर्म करना गृहस्थ का धर्म है। पुरोहित अपना पौरहित्य करना उसका स्वधर्म है। साम, दम, तप, क्षमा आदि ब्राह्मण के स्वधर्म हैं यथा- शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च। ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजनम्।।[3] साथ ही अध्ययन-अध्यापन, दान लेना और देना आदि भी ब्राह्मणों का स्वधर्म है। शौर्य, तेज आदि क्षत्रियों के स्वधर्म हैं। यथा - शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम। दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं क्रम स्वभावजम्।।[4] इसके अलावा परिस्थिति के अनुसार दिये गये कर्तव्यों का भी ठीक से पालन करना क्षत्रिय का स्वधर्म है। खेती, पशुपालन और व्यापार वैश्यों का स्वधर्म है। यथा - कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यक्रम स्वभावजम। परिचर्यात्मकं क्रम शूद्रस्यापि स्वभावजम।।[5] इसके अलावा परिस्थिति के अनुसार जब कोई कार्य सामने आता है तो उसे निर्विघ्न पूरा करना भी वैश्य का स्वधर्म है। शूद्र का 'स्वधर्म' सबकी सेवा करना है।यथा- कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यक्रम स्वभावजम। परिचर्यात्मकं क्रम शूद्रस्यापि स्वभावजम्।।[6] इसके अलावा

परिस्थिति के अनुसार अन्य कार्य करना भी शूद्र का स्वधर्म है। भगवान श्रीकृष्ण ने कृपापूर्वक अर्जुन के माध्यम से समस्त मानव जाति को एक विशेष संदेश दिया कि 'तुम (ऊपर वाले) सभी धर्मों को छोड़कर केवल मेरी शरण में आओ, तो मैं तुम्हें सारे पापों से मुक्त कर दूँगा, इसके बारे में चिंता मत करो । यथा- सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।/

अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः[7]

तात्पर्य यह है कि अपनी जाति और आश्रम में सम्मानपूर्वक रहने के लिए, अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए उपरोक्त सभी धर्मों का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। भगवान श्रीकृष्ण गीता में **'स्वल्पमाप्यस्य धर्मस्य'** (2/40) श्लोक द्वारा समत्व को, 'धर्मस्यस्य' (9/3) श्लोक द्वारा ज्ञान को और 'धर्मयामृतम' (12/20) श्लोक द्वारा सिद्ध भक्तों के लक्षणों को भी 'धर्म' कहते हैं। 'धर्म' शब्द का अर्थ यह है कि परमात्मा का स्वरूप होने के कारण समता ही सभी प्राणियों का स्वधर्म है। गीतानुसार परमात्मा को प्राप्त करने के लिए ज्ञान भी साधक का स्वधर्म है और सिद्ध भक्तों के लक्षण भी स्वयं सिद्ध होने के कारण सभी का स्वधर्म है।

गीतानुसार सनातन धर्म : दुनिया में विविध धर्मों की स्थिति मिलती है। इसके बावजूद दुनिया में चार प्रमुख धर्म हैं- सनातन धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म। विश्व में इन चार धर्मों में से किसी एक को मानने वाले करोड़ों लोग हैं। ज्ञातव्य, इन चारों धर्मों के अंतर्गत कुछ अन्य उप-धर्म भी हैं। सनातन धर्म के अलावा, पिछले तीन धर्म एक एक व्यक्ति में निहित हैं; उदाहरण के लिए, इस्लाम पैगंबर मुहम्मद पर आधारित है, बौद्ध धर्म गौतम बुद्ध पर आधारित है और ईसाई धर्म यीशुख्रीष्ट पर आधारित है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि सनातन धर्म किसी व्यक्तियों में आधारित नहीं है। क्योंकि सनातनधर्म किसी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रवर्तित धर्म नहीं है। यह धर्म अनादि काल से चलता रहा एक सत्य एवं शाश्वत प्रवृत्ति है। जैसे भगवान शाश्वत है, वैसे ही सनातन धर्म भी शाश्वत है। गीता में सनातनधर्म को भगवान श्रीकृष्ण ने अपना ही स्वरूप बताया है- ब्राह्मणो हि प्रतिष्ठाऽहममृतस्याव्ययस्य च।/शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य।।[8]

उल्लेख्य जिस किसी भी समय और जिस युग में इस सनातनधर्म का पतन हुआ या संकट में आया। भगवान स्वयं विभिन्न अवतारों के रूप में प्रकट हुए है। यथा - यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।/अभुत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

प्रसंगवश, अर्जुन ने भगवान को सनातनधर्म का रक्षक भी कहा - त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।/ त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगुप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे।।[10] '

क्या है सनातन और सनातन धर्म ? : एक वस्तु उत्पन्न होती है और एक वस्तु की खोज की जाती है। जो पहले से अस्तित्व में नहीं है उसका उत्पादन या सृजन किया जाता है और जो पहले से मौजूद है उसकी केवल जाँच ही की जा सकती है। यह धर्म अनादि, नित्य-सत्य एवं शाश्वत है। उल्लेख्य अन्य सभी धर्म एवं मत-मतान्तर इसी सनातन धर्म से निकले हैं। इसलिए वे सभी धर्म जो मनुष्य के कल्याण के लिए कियेगा या किये जाने वाले हैं, उन्हें सनातन धर्म से प्रवर्तित मानना चाहिए। इसलिए, यदि उन सभी धर्मों में वर्णित अनुष्ठानों को कर्तव्य के रूप में मनाया जाए तो मोक्ष के बारे में कोई संदेह नहीं है। सनातन धर्म में मनुष्य के कल्याण के लिए जितना विचार और चिंतन किया गया है, उतना किसी अन्य धर्म में नहीं मिलता है । सनातन धर्म के सभी निर्णय पूर्णतः वैज्ञानिक एवं कल्याणकारी हैं। सनातन धर्म में सभी प्रकार की प्रथाओं, नियमों और विनियमों का वर्णन है, ये सभी पारंपरिक हैं, अनादि काल से चले आ रहे हैं। उदाहरण स्वरूप-

भगवान कृष्ण कर्मयोग को अव्यय कहाँ है - इमं बिवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।/विवस्वान् मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ।।[11]

शुक्ल और कृष्ण के मार्ग को भी सनातन भी कहा गया है

- शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते।/एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः।[12]

गीता में परमात्मा को भी सनातन कहा गया है - त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।/त्वम्व्ययः शाश्वतधर्मगुप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो में।।[13]

गीता में जीवात्मा को भी सनातन कहा गया है - ममैवांशो जीव लोके जीवभूतः सनातनः।/मनः षष्ठनीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।।[14]

गीता में धर्म को भी सनातन कहा गया है - ब्राह्मणो हि प्रतिष्ठाऽहममृतस्याव्ययस्य च।/शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य।।[15]

परमात्मा को भी सनातन कहा गया है - सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।/मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमवयम्।[16]

आश्चर्य् की बात यह है कि सनातन धर्म में अनादिकाल से सब कुछ सनातन है। सभी धर्मों और उनके नियमों में कभी एकरूपता नहीं हो सकती, उपर से मतभेद तो रहेंगे ही। परंतु इनसे प्राप्त सिद्धांत कभी भी भिन्न नहीं हो सकते। अर्थात् जब तक साधक का संसार से सम्बन्ध रहेगा, तब तक मतभेद एवं विवाद बने रहेंगे। लेकिन जब सिद्धांत प्राप्त हो जाएगा तव, सिद्धांत में कोई अंतर नहीं रहेगा ।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति अपने सिद्धांत के अनुसार स्वयं को स्वकृति देने का प्रयास करता है, वह सच्चा धर्मशास्त्र-जिज्ञासु नहीं है। और स्वयं को आश्रय देने से उसकी महानता किसी भी तरह से नहीं बढ़ती है। इसलिए, जो सत्य और शाश्वत है वह स्वीकार्य है, अन्य सभी चीजें इससे बाहर हैं। गीता में व्यक्तिवाद को प्राथमिकता नहीं दी गई है, बल्कि जो परोपकारी मानव कल्याण के लिए अनुकूल है उसे प्राथमिकता दी गई है। गीता के अनुसार यदि किसी भी धर्म को मानने वाला व्यक्तिनिस्वार्थ भाव से अपने कर्तव्य का पालन करता है, स्वधर्म में लीन रहता है तो उसका कल्याण अवश्यंभावी है। गीता सनातन धर्म का सम्मान करती है, लेकिन किसी भी धर्म में प्रकृष्ट रूप से रुचि नहीं दिखाती और न ही किसी धर्म के विरुद्ध कार्य करती है। अर्थात् सनातन एक एवं शाश्वत और अनन्त जैसा गीता एक, अनादि, शाश्वत और अनन्त ग्रंथ है। श्री अरविन्द ने कहा-"The Gita is not a book of practical ethics , but of the spiritual life।" अथ कहा जा सकता है- वरिष्ठेऽखिलधर्मेषु धर्म एव सनातनः।/ जायन्ते सर्वधर्मास्तु शाश्वतो हि सनातनः।।

सन्दर्भ सूची-

भट्टाचार्य, वामदेव.(2015). श्रीमद्भगवदगीता,ललिता प्रकाशन, कलकता।

दास.रामसुख.(2022). गीता-दर्पन, गीता प्रेस, गोरखपुर।

चट्टोपाध्याय,मिहिरकुमार.(2018). शिक्षादर्शन,रीता पावलिकेशन, कलिकाता।

भट्टाचार्य, विमानचन्द्र.(2006). संस्कृत साहित्येर रूपरेखा,वुक ओयार्लड, कलिकता।

वन्द्योपाध्याय, धीरेन्द्रनाथ.(2015).संस्कृत साहित्येर इतिहास,

दास, देवकुमार.(2012). संस्कृत साहित्येर इतिहास.सदेश, कलिकाता।

न्यायतीर्थ,सुनितावसु.(2006).धर्म-अर्थ-नीतिशास्त्रसमीक्षा, वलराम प्रकाशनी,कलिकता।

www.researchgate.net
www.livingvalues,net
www.edifyschoolbengaluru.com
www.shodhaganga.com
www.inflibnet.org
www.archive.com
www.worldpress.com
www.namami.com
www.academia.com

गवेषक,शिक्षाशास्त्र विभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

कमर मेवाड़ी की कहानियों में आधुनिक युगबोध

रजाक शाह कादरी

सारांश - समकालीन कथाकारों में कमर मेवाड़ी का विशिष्ट स्थान है। इनकी कहानियों का एक अलग ही कथा संसार है, जो अन्य रचनाकारों से अलग पहचान दिलाती हैं। वस्तुतः कमर मेवाड़ी ऐसी प्रकृति के कथाकार हैं, जो वाणी के द्वारा नहीं, बल्कि अपनी लेखनी के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्तकरते हैं। वर्तमान जीवन की विसंगति, विषमतापूर्ण स्थितियाँ और उनमें व्याप्त स्वार्थ से वशीभूत अमानवीय षडयंत्र आम आदमी को जीवन जीने के अधिकार से दूर कर रहे हैं। इस प्रकार की असहनीय स्थितियाँ रचनाकार को सृजन के लिए प्रेरित करती हैं। यही विशेषता कमर मेवाड़ी की कहानियों में देखी जा सकती है। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्तिही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज की पहचान कराना चाहते हैं। इनकी कहानियों में सूक्ष्मता, गहनता और अन्तर्मन की गहराइयों की पड़ताल है, आन्तरिक संघर्ष का चित्रण है। जो आज की यथार्थ जिन्दगी के बहुत करीब है। अपनी कहानियों में आधुनिक और परम्परागत जीवन मूल्यों के बीच संघर्षों, विघटित होते जीवन मूल्यों एवं स्त्री - पुरुष सम्बंधों के मध्य बनते - बिगड़ते रिश्तों को चित्रित किया है। तथा वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के प्रति सचेत और जागरूक किया है। सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदनाओं को कहानियों के माध्यम से उकेरना उनकी कहानी की खूबी है। कमर मेवाड़ी की व्यक्ति, समाज और रचना के प्रति गहरी अभिरुचि है जो इन्हें समाज के एक सजग प्रहरी के रूप में प्रतिस्थापित करती है।

मुख्य शब्दः सृजनात्मकता, युगबोध, जीवनानुभूति, प्रौद्योगिकी, दृष्टिकोण, अजनबीपन, परिवर्तनशील, आधुनिकता, मूल्य संक्रमण।

कमर मेवाड़ी का कथा साहित्यः समकालीनता के परिप्रेक्ष्य में - समकालीन कथा साहित्य में मानव और उसके जीवन यथार्थ को नए धरातल पर अभिव्यक्तकिया गया है। इसमें जीवन की भयावह स्थितियों व समस्याओं के बीच जूझते सामान्य जन को चित्रित कर युगबोध का अंकन किया है। आधुनिक और वैज्ञानिक तार्किक जीवन दृष्टि को स्वीकार करने से जहाँ एक ओर मानव - जीवन तेजी से बदल रहा है, वहीं दूसरी ओर जीवन जटिलता की ओर अग्रसर होता नजर आ रहा है। ऐसी स्थिति में मनुष्य की अस्मिता और अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगना स्वाभाविक है। समय के साथ - साथ सारे संदर्भ और स्थितियाँ बदलती जा रही हैं, जिससे मनुष्य के लिए राह बनाना कठिन होता जा रहा है। वर्तमान जीवन की गति और स्थिति को रचनात्मक पृष्ठभूमि पर अभिव्यक्ति देने का अद्वितीय और सार्थक प्रयास जिन कथाकारों ने किया है, उनमें कमर मेवाड़ी का नाम अग्रगण्य है। समकालीन कथाकारों में अपनी अलग पहचान बनाने वाले कमर मेवाड़ी समृद्ध जीवनानुभूति के धनी हैं, जिसे वे अत्यन्त सूक्ष्मता से परखते हुए रचना धरातल पर उतारते हैं। उनकी कहानियाँ समाज के किसी एक वर्ग से संबंधित नहीं हैं, बल्कि वे व्यक्ति, समाज और उसके जीवन के वृहद रूप से संबंधित हैं। उनमें मानव जीवन के अनेक पक्ष उद्घाटित होते हैं।

वर्तमान बदलते परिप्रेक्ष्य में उनमें कहीं तो स्त्री - पुरुषों के बनते - बिगड़ते रिश्तों की व्याख्या मिलती है तो कहीं व्यक्ति के अन्तर्मन एवं अन्तर्विरोधों का चित्रण मुखरित होता है। उनकी कहानियों का पात्र कहीं जीवन से जूझता दिखाई देता है, तो कहीं विषमताओं, विसंगतियों, संत्रास, अकेलेपन और घुटन से आहत व पीड़ित दिखाई देता है। उनकी कहानियाँ पुरातनता और आधुनिकता, भारतीय और पाश्चात्य मूल्य संक्रमण, नगर और महानगर, उच्च वर्ग तथा निम्न व मध्यवर्ग के बीच कश्मकश आदि का सशक्त चित्र प्रस्तुत करती हैं। वस्तुतः समकालीन कहानी का परिदृश्य अत्यंत दीर्घ और विस्तृत है। अतः इसे सहेजने के लिए एक बड़ी योजना की आवश्यकता है। कमर मेवाड़ी की कहानियों में चित्रित आधुनिक युगबोध को निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है -

कमर मेवाड़ी का सामाजिक सरोकारः एक दृष्टि - कमर मेवाड़ी का सृजनात्मक कृतित्व बहुआयामी रहा है। उनकी प्रथम लेखकीय दृष्टि कहानी से मिलती है। कमर मेवाड़ी की प्रथम कहानी साप्ताहिक हिंदुस्तान में 1959 में छपी। उसके बाद की कहानियाँ मधुमति, अभिनव

संबोधन तथा अनेक चर्चित व प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। उन्होंने तकरीबन सौ से भी अधिक कहानियाँ लिखी हैं जो विभिन्न कथा संग्रहों में संग्रहीत हैं । साथ ही कुछ कहानी संग्रह से बाहर नियमित रूप से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। उनके कहानी संग्रहों के नाम हैं - रोशनी की तलाश में, लाशों का जंगल, ऊँचे कद का आदमी, जिजीविषा और अन्य कहानियाँ तथा चुनी हुई कहानियाँ आदि।

अपने लेखन के साथ अंतर्मुखी होकर भी एक बड़े विस्तृत उद्देश्य से अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करते चले जाते हैं जो उनकी कथा साहित्य में स्पष्ट दिखाई देता है। वे अपनी कहानी लेखन के बारे में लिखते हैं "कि आज से पचास साल पहले जब मेरी कहानी साप्ताहिक हिंदुस्तान में प्रकाशित हुई उसके बाद तो मेरे पर ही निकल आए, मैं निरंतर लिखता और छपता रहा। दैनिक साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाओं में मेरी कविताएँ कहानियाँ और लेख प्रकाशित होते रहे और मैं खुशबू सनी हवाओं में तैरता रहा।"[1] सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध कमर मेवाड़ी का मानना है कि "मेरी कहानियां आज के विकसित युग के पाठकों का न केवल मनोरंजन कराती है अपितु उनके अनुभव को विस्तार भी देती है।" उनकी कहानियाँ घटना मात्र न होकर जीवन के विरोधाभासों, विसंगतियों, अंतर्द्वंद्व एवं अंतर्विरोध के गुण की सामाजिक सरोकारों के परिप्रेक्ष्य में रचनात्मक अभिव्यक्तिहै। उनकी कहानियों का कथ्य बहुत सशक्तहै जो पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। मानव जीवन को समझने के लिए कमर मेवाड़ी की कहानि ऐसा माध्यम है जो पाठक के अंतजर्गत और अंतर्मन में व्यापकता लाता है। वे न तो बोध कथाएँ प्रतीत होती हैं और नहीं पंचतंत्र की कहानियाँ। अपितु उनमें मानव के अंतजर्गत की गहरी रचनात्मक अभिव्यक्ति के दर्शन होते हैं।

कमर मेवाड़ी की कहानियाँ आधुनिकः युगबोध के संदर्भ में - आधुनिकता को हम अंग्रेजी शब्द 'मॉडर्निटी' के संदर्भ में समझ सकते हैं। इसका शब्दकोषीय अर्थ है - आधुनिक होने का भाव; एक ऐसा दृष्टिकोण जो मनुष्य की नियति को पूर्व परंपरा से संबंद्ध न मानकर नए युग की स्थितियों के अनुसार परिभाषित करें। डॉ नरेंद्र मोहन के अनुसार "इसे आप आधुनिक युग की खास मानसिकता, खास दृष्टि कह सकते हैं। खास इस माने में कि यह मध्यकालीन मानसिकता और दृष्टिकोण से अलग है, क्योंकि इसके मूल में वैज्ञानिकता, टेक्नोलॉजी और औद्योगीकरण की संस्कृति है। इसलिए आधुनिकता आधुनिक जिंदगी के दबावों, आधुनिक आदमी की सोच और चिंतन उसके अस्तित्व, उसकी द्वंद्वपूर्ण, प्रश्नानुकूल और संघर्षशील मानसिकता से बना एक दृष्टिकोण है."[2] आज वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के विकास ने व्यक्ति के जीवन को बदला है। जिससे महानगरीय जीवन की जटिलता तथा परिवेश की तनाव भरी स्थिति व्यक्ति के अंतर व बहिर्जगत प्रभावित कर रही है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आज के आधुनिक जीवन को नए अर्थ में यथार्थपरक दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति आधुनिकता बोध है। जिसमें मानवीय मूल्यों के टूटने से जीवन की दशा व दिशा को देखा जा सकता है।

कमर मेवाड़ी अपनी सृजनात्मक प्रक्रिया में अपनी कथा लेखन के प्रति सजग रहे हैं। वे सूक्ष्म परीक्षण से अपनी रचनाओं में विस्तृत जीवन अनुभवों से विषयों का चयन करते हैं। और उनमें सजीवता लाने के लिए अपने पात्रों, स्थितियों और घटनाओं से लगातार जुड़े रहते हैं। वे खुद अपनी कहानियों की मौलिकता के संदर्भ में लिखते हैं कि "कहानी के लिए मैं काल्पनिक पात्रों का सृजन नहीं करता, न कहानी लिखने के लिए कोई रूपरेखा बनाता हूँ। मेरी सारी कहानियाँ यथार्थ के धरातल पर खड़ी हैं। कहानियाँ मेरे आस-पास से गुजरती रहती हैं। कई चेहरे इर्द-गिर्द मंडराते रहते हैं। मैं किसी की परवाह नहीं करता, न कहानियों की, न चेहरों की।"[3]

माधव नागदा कमर मेवाड़ी की कहानियों के संदर्भ में लिखते हैं कि "आजादी के बाद की मोहभंग की स्थितियाँ, आपातकाल की आहट, संपूर्ण क्रांति आंदोलन और उसका भटकाव, श्रमिक चेतना, पूंजीवाद के फैलते डैने, अमीर और गरीब के मध्य चौड़ाती खाई, सांप्रदायिक विद्वेष, भ्रष्टाचार के बोझ तले दूभर होती जा रही ईमानदार आदमी की जिंदगी, मनुष्य का बढ़ता एकाकीपन एवं तत्जन्य मानसिक अस्थिरता आदि अंडरकरंट की तरह इन कहानियों में मौजूद है।"[4]

इस प्रकार उनकी कहानियों में विषय वस्तु की दृष्टि से सामाजिक आर्थिक विषमता राजनैतिक नौकरशाही आधुनिक युग को मानवीय भोग तृप्ति आदि समकालीन

प्रवृत्तियों की चर्चा हुई है। कमर मेवाड़ी अपनी कहानियों में आधुनिक युग बोध को निम्नांकित तथ्यों के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

आधुनिक बनने की अंधी दौड़ -आज का मानव आधुनिक बनने की दौड़ में इतना अंधा हो गया है कि वह अपने मानवीय मूल्यों को भी तार-तार होने से रोक नहीं पाता। कमर मेवाड़ी का कथा साहित्य मानव की आधुनिक बनने की इस दौड़ को बेनकाब करता है। आधुनिकता के इस बदलते जीवन में बच्चों को अपने माता-पिता का ख्याल रखने का भी समय नहीं मिलता। वे अपनी जिंदगी में इतने व्यस्त हैं कि खुद के बारे में उनको सोचने के लिए भी समय नहीं है। कमर मेवाड़ी की कहानी बदलते रिश्ते में सोमेश जब दस साल बाद पिताजी से मिलने आता है काम की व्यस्तता के कारण उसे अपने पिता से मिलने का समय तक नहीं मिलता है। कहानी के अंत में टैक्सी से उतरकर प्लेन पर सवार हुआ तो वह कुछ हल्का हो चुका था। उसे इस बात की खुशी थी कि उसके माता-पिता दोनों जिंदा है और वह उनसे मिलकर अपने नियुक्ति स्थान पर जा रहा है । प्लेन में बैठे-बैठे ही उसने प्लान बनाया कि अबकी बार जब दिवाली की छुट्टियाँ होंगी तब वह अपने माता-पिता के पास अधिक दिन रुकेगा। उसने अपना सूटकेस खोला, उसमें से नए साल की डायरी निकाली और गिनने लगा कि दिवाली की छुट्टियों में अब कितने दिन शेष हैं।"[5] आधुनिक बनने की दौड़ में धन का महत्व इतना बढ़ा दिया है कि आर्थिक स्तर पर ही मुख्य रूप से पारिवारिक संबंध बदल रहे हैं एक व्यक्ति जो नौकरी करता है तथा अचानक उसकी नौकरी छूट जाने से उत्पन्न स्थिति जिसमें बेकारी के साथ पेट की आग शायद वह सबसे बड़ी आग है । धीरे-धीरे सब कुछ छीन लेती है।

'उनकी जीत' कहानी मूल्य संक्रमण को रेखांकित करती है। कहानी में इलाही बक्स अपने आप को आधुनिक मानते हैं। इस आधुनिकता के चक्कर में उन्होंने अपनत्व को छोड़ दिया है ऐशो आराम ही उसकी जिंदगी का मूल रह गया है। "जहाँ पहले एक ट्रक माल चार- पाँच हजार रुपए में बिकता था उतना ही माल अब पचास - साठ हजार रुपयों में बिकने लगा। इलाही बख्श के हाथ से पुरानी साइकिल छूट गई और उसकी जगह मारुति कार ने ले ली। उन्होंने अपने पुराने दबडेनुमा घर को गिराकर एक आलीशान इमारत में बदल दिया। जिसमें सारे आधुनिक उपकरण मौजूद थे। वह अक्सर बीड़ी पिया करते थे। अब उनके होठों के बीच कीमती सिगार दबा रहता। गंदे चीकट कपड़ों की जगह अब खादी के धवल वस्त्र शरीर की शोभा बढ़ा रहे होते।"[6]

अकेलापन अजनबीपन एवं खालीपन - 'नीली झील की गहराई' कहानी में परिवर्तित सामाजिक मूल्य दृष्टि से उत्पन्न अकेलापन और व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से जीवन में आई रिक्तता को व्यक्त किया गया है। नीरा और दिनेश का मित्र अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए कॉफी हाउस में मिलते हैं। यहाँ पर उनका सूनापन और अकेलापन पीछा नहीं छोड़ता। कॉफी हाउस में नीरा कॉफी समाप्त कर खाली प्याले की ओर संकेत करते हुए कहती है। "मुझे कभी-कभी अपनी जिंदगी कॉफी के इस खाली प्याले की तरह लगती है। रिक्त और सूनी - सूनी। देखना एक दिन सब यूँ ही समाप्त हो जाएगा और हम आश्चर्यचकित हो देखते रह जाएँगे।"[7]

'दस साल बाद' कहानी अकेलापन और खालीपन को मानवीय जीवन के धरातल पर अभिव्यक्त करती है। इस कहानी में प्रेम संबंधों में आये अलगाव से उत्पन्न त्रासदी का अंकन है कहानी की नायिका शीरी के खालीपन की स्थिति का वर्णन लेखक इस प्रकार करता है "उसे विश्वास था कि एक दिन वह लौट कर वापस आएगा पर आप जानते ही हैं, भला शहर से ही वापस लौट कर आया है? वह उसकी याद में बावली हो गई। उसे खाने पीने का होश नहीं रहा। वह इधर से उधर दौड़ती फिरती। अपने आम्रकुंज में जाकर गीत गाती और अकेले में खुद से बातें करती रहती। एक दिन उसे भी यह विश्वास हो गया कि शायद अब वह कभी लौटकर नहीं आएगा और उसी दिन रात के समय वह इस जलकुंड में कूद पड़ी।"[8]

महानगरीय जीवन बोध - महानगरीय परिवेश आधुनिकता से जुड़ा एक महत्वपूर्ण पहलू है। महानगरीय परिवेश और जीवन की अभिव्यक्ति ही महानगरीय बोध है। कमर मेवाड़ी की कहानियों में आधुनिक नगरीय जीवन की अनेक विसंगतियां एवं विद्रूपताएँ बड़े ही मार्मिक ढंग से व्यक्त हुई हैं। कमर मेवाड़ी की एक और कहानी शहर की जिंदगी से ऊबे हुए पति-पत्नी की कहानी है। जो अंत में एक दूसरे से मुक्त होना चाहते हैं। और वे हो भी जाते हैं। "सुबह जब

पत्नी उठी, उसने चाय बनाकर मेज पर सजाई और पति की तरफ देखा तो वह देखती ही रह गयी। पति का निर्जीव शरीर पलंग पर पड़ा था और पत्नी को चिढाती हुई पास ही लुढ़की पड़ी थी नींद की गोलियों की खाली शीशी।"[9] इस तरह शहर के अनात्मीय होते हुए रिश्तो के अंतिम नतीजों में सिर्फ मौत या खुदकुशी ही नजर आती है।

बेरोजगारी की भयावह स्थिति - आधुनिक जीवन बोध का एक बहुत ही अहम पहलू बेरोजगारी है। कमर मेवाड़ी की 'लाशों का जंगल' कहानी गरीबी, बेबसी और बेरोजगारी की अन्तर्व्यथा को उकेरती एक सशक्त कहानी है। इसमें पिता की आर्थिक मजबूरियों को ताडकर नन्हा गुड्डू असमय ही बुजुर्ग हो गया है। दूसरी और रोजगार की तलाश में घर से भागा डेविड असाध्य बीमारी को गले लगाए लगभग विक्षिप्त अवस्था में घर वापस आता है। अंततः उसकी जिंदगी की नाव मझधार में ही डूब जाती है। कमर मेवाड़ी की 'धुंध में फंसे लोग' कहानी मजदूरों की मजदूरों की दयनीय स्थिति, उनकी व्यवस्था के प्रति लाचारी, विवशता और बेरोजगारी आदि के प्रति पुरजोर प्रहार करती है।

विवाह का विरोध - कमर मेवाडी की कहानियों में ऐसे चरित्र विद्यमान हैं जो विवाह संस्था का विरोध करते हैं। जिसे परिवार नाम की संस्था लगभग अनुपस्थित है। अधिकांश स्त्री पात्र अपने पुरुष मित्र के साथ बिना किसी अपराधबोध के उन्मुक्त भाव से परस्पर यौन - संबंध रखते हैं। इनकी बावजूद कहानी में नायिका किसी अन्य से विवाह करके भी सुहागरात मनाने अपने प्रेमी के पास पहुँचती है और कहती है- "अजीत! शादी हो जाने के बावजूद भी मैं तुम्हारे लिए आई थी। सिर्फ तुम्हारे लिए। मैं चाहती थी शादी की यह रात अविस्मरणीय बन जाए और अगली बार जब हम मिलें इस रात की याद को ताजा करते रहें।"[10]
हजार आंखों वाला चेहरा कहानी में साठ साल के सेठ की युवा पत्नी सलमा अपने पति की मृत्युकामना मन में लिए कथा नायक से प्यार करती है। इसी तरह 'बिस्तर में धँसा दिन' कहानी की नायिका मौका पाकर पति के दोस्त से शारीरिक संबंध स्थापित कर लेती है। 'इतने सारे सुख' कहानी में अपने प्रेमी से नहीं बल्कि एक धनाढ्य से विवाह करके आधुनिक सुख- सुविधाओं के उपादानों में सुख ढूंढने का प्रयास करती है। लेकिन सच यह है कि इन सब बाहरी तड़क भड़क के बीच उसे अपनी प्रेमिका का अभाव बुरी तरह खलता है। और वह अभिशप्त की तरह पगलायी सी इधर उधर फिरती रहती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि कमर मेवाड़ी समकालीन कथाकार के रूप में मानव और समाज के कई अनुगूढ रहस्यों और अनखुली परतों को उजागर करते हैं, जिसकी अपेक्षा मेवाड़ी जैसे रचनाकार से स्वाभाविक रूप से ही की जा सकती है। आधुनिकता बोध के संदर्भ में उनका मानना है कि आधुनिकता किसी एक तत्व से नहीं बनी है, अपितु इसका निर्माण अनेक बाह्य तत्वों के समावेश से हुआ है। उसमें तात्कालिकता अधिक है । अतः इसे फैशन भी कहा जा सकता है। आधुनिकता की प्रकृति परिर्वतनशील है अतः समय, देशकाल और वातावरण के अनुरूप इसमें बदलाव आता रहता है। आज जो आधुनिक है, कल वह आधुनिक न कहलायी जाए। आधुनिकता के इसी स्वरूप को अपनी कहानियों में मानवीय संवेदनाओं के आधार पर प्रस्तुत किया है। वे अपनी कहानियों में व्यक्ति को सावचेत करते हैं कि आधुनिकता के चक्कर में इतने भी मत फँस जाओ कि स्वत्व को ही भूल जाओ।

संदर्भ -

1. मेवाडी, कमर (1999)राजस्थान साहित्यकार प्रस्तुति उदयपुर, पृष्ठ -09,
2. मोहन, नरेन्द्र (1982) आधुनिकता के संदर्भ में हिन्दी कहानी, जय श्री प्रकाशन, पृष्ठ -13
3. सृंजन कुंज, (संस्करण 2019) त्रैमासिक पत्रिका, अंक 23, पृष्ठ -22, गंगानगर,
4. जनपथ पत्रिका, (जुलाई -2016) पृष्ठ -85,
5. मेवाडी, कमर (संस्करण 1990) उसका सपना, सम्बोधन प्रकाशन, कांकरोली, पृष्ठ - 15,
6. मेवाडी, कमर (2017) चुनी हुई कहानियाँ, अमन प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ - 52,
7. मेवाडी, कमर (संस्करण 2012) जिजीविषा और अन्य कहानियाँ, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ -20,
8. मेवाडी, कमर (संस्करण, 2000) उँचे कद का आदमी, आदर्श प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर, पृष्ठ -76,
9. मेवाडी, कमर (संस्करण, 1990) उसका सपना, सम्बोधन प्रकाशन, कांकरोली, पृष्ठ - 68.
10. मेवाडी, कमर (1986) रोशनी की तलाश, सम्बोधन प्रकाशन, कांकरोली, पृष्ठ -18.

शोधार्थी, राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय
अलवर (राजस्थान)

'मैं पायल' उपन्यास में चित्रित किन्नर जीवन का संघर्ष

अंजु जॉय

साहित्य, सामाजिक स्तर पर होनेवाले किसी भी समस्या को अनावृत करने के साथ साथ समाज से उपेक्षितों के प्रति जागरूकता भी रखता है। हमारे समाज में स्त्री और पुरुष जाति के अलावा एक अन्य लिंग का भी अस्तित्व है, वह है किन्नर। सामाजिक एवं मानव अधिकारों से वंचित किन्नर अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। "एक लिंग में जन्म लेकर दूसरे लिंग की इच्छाएँ और चेष्टाएँ प्रकट करने वाले व्यक्तित्वों को ट्रांसजेंडर कहते हैं। पुरुष रूप की स्त्रैणता और स्त्रीरूप की पुरुषता के कारण इनको समाज जल्दी पहचानता है।"[1] लेकिन यह पहचान उनके अभिशाप बन गए, क्योंकि भारतीय समाज उन्हें न मर्द मानता है ना औरत। उच्चतम न्यायालय इन्हें तीसरे लिंग के रूप में मान्यता देने के बाद भी किन्नरों की स्थिति दयनीय है। भारतीय न्याय व्यवस्था के अनुसार उन्हें कई प्रकार के अधिकार प्राप्त है, लेकिन वास्तविकता यह है कि आज भी किन्नर वर्ग समाज से और मानवीय अधिकारों से वंचित है। आज की सामाजिक परिदृश्य में किन्नर जैसे हाशिए कृत समाज को मुख्य धारा में लाने की कोशिश भी हो रही है। न्यायालय और सरकार ने भी इन्हें स्त्री और पुरुषों के साथ तीसरे लिंग के रूप में स्वीकार करने के बाद भी लोग किन्नरों पर हेय एवं नकारात्मक दृष्टि डालती है।

प्रसिद्ध उत्तराधुनिक साहित्यकार महेंद्र भीष्म सामाजिक सरोकारों के प्रति प्रतिबद्धता रखनेवाले कथाकार है। उन्होंने समाज में उपेक्षित विस्थापित,उपहास के पात्र किन्नर को अपने उपन्यास का मुख्य विषय बनाया। महेंद्र भीष्म द्वारा रचित उपन्यास 'मैं पायल' किन्नर जीवन की त्रासदी और जीवन संघर्षों को केंद्र में रखकर रचित है। किन्नर जीवन की सामाजिक,आर्थिक,पारिवारिक विसंगतियों को उपन्यासकार ने बडी संवेदनशीलता से प्रस्तुत की है। 'मैं पायल' नामक उपन्यास किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन संघर्ष पर आधारित है। "मैं पायल....बहुत वस्तूपरक ढंग से बेहद गहराई से, और पूरी पारदर्शिता के साथ किन्नरों के जीवन की दुखमय,त्रासद,पीड़ादायक और अमानवीय यातनाओं को बेबाक ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत करता है। चूंकि यह जीवनी परक उपन्यास है, अतएव कल्पना के इंद्रजाल इसके कथ्य में नहीं हैं,वहां तो एक किन्नर का भोगा हुआ कटु यथार्थ ही वर्णित है।"[2] इस जीवनीपरक उपन्यास में लेखक ने किन्नर जीवन के अस्तित्व और विस्थापन से संबंधित समस्याओं को उजागर किया है।

1.परिवार से उपेक्षित किन्नर जीवन :'मैं पायल' नामक उपन्यास समाज से और परिवार से उपेक्षित एक किन्नर की कहानी है। बहराजमउ के एक मध्यवर्गीय क्षेत्रीय परिवार की चौथी लड़की के रूप में पायल का जन्म हुआ। इसके जन्म से ही उपन्यास का प्रारंभ होता है। उसके पिता राम बहादुर एक बेटे के उम्मीद में थे, क्योंकि उनका पहला बेटा राकेश के जन्म के बाद लगातर तीन पुत्रियाँ जन्मीं है। इस समय एक अप्रिय सच की तरह एक स्वर सुनाई जाती है, राम बहादुर के एक और लड़की हुई लेकिन इस पाँचवीं संतान एक हिजड़ा बच्चे के रूप में जन्म लेती है। किन्नरों के प्रति लोगों का विश्वास है कि घर में किन्नर बच्चा पैदा होता तो कुल कलंकित हो जाएगा। पायल के जन्म के समय उस पर पिताजी ने एक नजर भी न डाली, शायद वो भी विश्वास रखता है कि उसके क्षत्रिय परिवार को कलंकित करने के लिए ही उसका जन्म हुआ है। इसलिए पायल ने खुद ही कहा- "मैं उनकी पाँचवीं संतान एक हिजड़ा बच्चे के रूप

में संसार में जन्म लेते ही उन्हें तमाम दुख, कष्ट, और संताप देने के लिए आ चुकी थी।[3] लैंगिक विकृति से जन्मी बच्चे घरवालों के लिए अवांछनीय बोझ ही नहीं शाप भी है।

पिताजी एक ट्रक ड्राइवर था। वे दारू के नशे में अपनी बच्चियों को निर्दयता से मारते थे। पायल अपने पिता के भयावह चहरे को देखने से भी डरते थे,क्योंकि पायल को पीटने का कोई ना कोई बहाना वे ढूँढ ही लेते हैं। पायल को अपने बचपन में कई कष्टताओं का सामना करना पड़ा था। किन्नर बच्चे के जन्म से संबंधित मिथ्या धारणाएँऔर बच्चे की लैंगिक विकृति के कारण समाज के द्वारे होनेवाले अपमान का भय पिता और बच्चे के पवित्र संबंध को खराब करते है। उसने सबसे पहले हिजडा शब्द अपने पिता से ही सुन लिया, "यह जुगनी, हम क्षेत्रीय वंश में कलंक पैदा हुई है, साली हिजड़ा है...."[5] जब अपने पिता से उनके जन्म की असलियत के बारे में सुनने पर भी जुगनी को कुछ भी ना समझ पाया, वो सोचती है कि,पिताजी हमेशा दारू के नशे में करंजली, हारामज़ादी, नासपीटी जैसे शब्दों से गालियाँ देती थी, हिजड़ा भी इस प्रकार की गाली है ।

जुगनी के पिता उसे अपनी आन-बान पर पड गए एक धब्बे की तरह समझते है। उसकी हिजड़ा जन्म के असलियत को छिपाने के लिए और सामाजिक अपमान से बच पाने के लिए राम बहादुर जुगनी को लड़के की तरह देखना चाहते थे। जुगुनी लड़कियों की तरह रहना चाहती थी, लेकिन पिता अपनी कुल महिमा और मान प्रतिष्ठा पर चिंतित और सामाजिक व्यवहार के प्रति व्यथित भी थे। जब पिता घर में होता तो जुगनी लड़के के रूप में और उनकी अनुपस्थिति में जुगनी बनकर ही रही। लेकिन पिता पत्नी को डाँटते हुए निर्देश देते थे, "कान खोल कर सुन लो कमलेश की अम्मा! अगली बार जब मैं आऊँ और यह साला हिजड़ा लड़की के कपड़े पहने मिला और घर के बाहर निकला तो मैं अपने ही हाथों से इस साले का ख़ून कर दूँगा।"[5]

पिता की अनुपस्थिति में सभी बहनों का नियंत्रण राकेश पर सौंप जाते थे।पिता की तरह वह भी दारू पीता था। जुगनी पिता से ही नहीं, अपने भैया की भी नफरत का शिकार बन गई। किसी दोस्त ने जब राकेश भैया से जुगनी की असलियत के बारे में पूछा तो उसने गुस्से में उस दोस्त को मारा, इन दोनों के बीच खूब लड़ाई भी हुई। अपने ही परिवार एवं रिश्तेदार भी किन्नरों को नकारात्मक एवं हीन दृष्टि से देखते हैं। समाज क्यों इनके प्रति इस प्रकार की अमानवीयता का व्यवहार करता है? हिजड़े के रूप में जन्म लेना इनकी कोई गलती नहीं, फिर भी वे इस सामाज से तिरस्कृत एवं उपेक्षित है।

पिता की उपेक्षा से त्रस्त जुगनी की ज़िंदगी पर एक और अप्रत्याशित घटना भी हुई। पिता के आदेश के विरुद्ध स्त्रियोचित कपड़ा पहनकर साज- संवारकर खडी जुगनी को देखकर पिता नाराज़ हुए और अपने हाथों पैरों से उसे मार पीटकर बेहोश कर दिया। यही नहीं, जुगनी को हमेशा के लिए समाप्त करने की इच्छा में उसके गले में फंदा डालकर टांग दिया। "मुझे पूरी तरह से होश नहीं आया था पर अंदाजा तो हो ही रहा था कि मयारी से रस्सी का एक छोर बांधकर मुझे मारने के लिए रस्सी के दूसरे छोर का फंदा मेरी गर्दन में बांध पिताजी ने मुझे फांसी दे दी थी।[7] अपने पिता से होने वाले इस प्रकार के क्रूर व्यवहार से जुगनी के मन को धक्का लगा। पिता की निर्दयता से उसकी माँ ने उसे बचाने की कोशिश की फिर भी पिता का डर उसे सताने लगा। बेबस होकर जुगनी अपने आपसे पूछती है, "मैं ही तो उनका निशाना थी, कुल कलंकिनी। क्षत्रियों के ख़ानदान में हिजड़ा पैदा होने का जैसे सारा श्रेय मेरा ही हो,मैं हिजड़ा हूँ... ठीक है ,पर इसमें मेरा क्या क़सूर? हिजड़ा होने में मेरी अम्मा बल्कि पिताजी का भी तो कोई दोष नहीं,फिर मेरे साथ ही ऐसा दुर्व्यवहार क्यों?[7] लोग अपने विकलांग बच्चे को पालते हैं, लेकिन हिजड़े बच्चे को नहीं, यह सब सोचने के

बाद वह मरने की तीव्र इच्छा में पड गया और अपनी अभिशप्त देह को विनाश करने के लिए घर से निकलती है।

2.मरने की तीव्र इच्छा और विस्थापन का दर्द : हर किन्नर को एक संघर्षमय अतीत होता है। उसे स्वयं इस संघर्ष को झेलना पड़ता है। समाज में अपूर्ण घोषित किन्नर को अच्छे परिवार में जन्म लेने पर भी अपने सामाजिक परिवेश के कारण अपने घर परिवार को छोड़कर विस्थापित होना पड़ता है। घर, परिवार, समाज से बहिष्कृत, तिरस्कृत एवं पीड़ाओं से त्रस्त जुगनी का विस्थापन उसकी यातनाभरी ज़िंदगी का दूसरा चरण था। सबसे पहले उसने कुएँ में कूदकर अपने आपको समाप्त करने का निर्णय लिया, फिर इस विचार को स्थगित कर दिया। फिर उसने तय कर लिया कि ट्रेन के सामने कूदकर अपने को समाप्त कर दूँ। उसने सोचा कि अपनी मृत्यु से सारे परिवार की कष्टताएँ दूर हो जाएँगी, पिताजी का मानसिक कष्ट भी दूर हो जाएँगा। अम्मा और बहिनों को उसके प्रति जितना संताप झेलना पड़ता है उससे भी मुंक्ति मिलेगी।

मरने की तीव्र इच्छा से वह तेजी से भागने लगी, लेकिन पैर के तलवे में बबूल का कांटा घुसने के असह्य दर्द से उसका ध्यान कहीं खिंचा गया और ट्रेन भी गुजर गया। इसलिए वह ट्रेन की आखिरी डिब्बे में चढ़ गयी, और उसकी दिशाहीन यात्रा को प्रारंभ कर दिया। इस यात्रा के दौरान उसकी ज़िंदगी की सारी घटनाएँ अपनी आखों के सामने से गुज़रने लगी। वह दुख और खबराहट से रोने लगी, अपने घर परिवार को छोड़कर कहीं अनजाने देश में चलाने की त्रासदी कितनी दयनीय है। "जब परिवार से बिछोह होता है, मिट्टी से विस्थापन होता है। यह दारुण दुख पृथ्वी में मानव मात्र के लिए ही नहीं सारे जीवधारियों के लिए सबसे बडा संताप होता है।"[9] किन्नर बच्चे इतनी कम उम्र में अपनी बेबसी के कारण घर से विस्थापित होता है, और अपने घरवालों की याद से तड़पते हुए ज़िंदगी भर जीते रहते हैं।

3.यौन शोषण : स्त्री या पुरुष के साथ किये जाने वाले यौन संबंधी अत्याचार और दुर्व्यवहार है यौन शोषण या उत्पीडन। पुरुषसत्तात्मक समाज में पुरुष अपने से कम उम्र की लडकियों को यौन शोषण का शिकार बनाता है। स्त्री या पुरुष ही नहीं बच्चे भी इस यौन शोषण का शिकार बनते है। 'मैं पायल' उपन्यास में भी यौन शोषण का खुले चित्रण को अभिव्यक्त किया है।

जुगनी अपने घर परिवार से विस्थापित होकर कहीं दूर जाते वक्त रेल गाड़ी में उसके सामने उपस्थित एक दुष्ट अधेड़ पुरुष ने उसके साथ गलत व्यवहार करने की कोशिश की। उसने उसे खींचकर चूम लिया और उसके सामने बीस रुपये का नोट बढ़ाते हुए उसको बाथरूम की तरफ आने की इशारा की। लेकिन जुगुनी उसके गलत इरादों को समझकर वहाँ से बच गयी। इसके बाद उन्नाव स्टेशन के प्लेटफार्म पर पुलिसवालों द्वारा भी पायल के साथ यौन शोषण का प्रयास हुआ, वह तो एक ट्राली वाले की दखलअंदाजी से बच जाती है। इन दोनों घटनाएँ सार्वजनिक स्थल पर भी असुरक्षित नारी जीवन को प्रस्तुत करती है। यौन शोषण का तीसरा प्रयास भी उसके साथ हुआ, जब वह अप्सरा टांकिज़ में काम करते समय वहाँ का चौकीदार प्रमोद ने उसका शोषण करने का प्रयास किया। लेकिन पायल ने अपनी सारी शक्तियों से उसको मारा और उससे बच पाया। इन तीनों संदर्भों से नारी को अपने शिकार बनाने में विवश पुरुष की विकृत मानसिकता को स्पष्ट करती है।

4.नारी शोषण : पुरुष प्रधान समाज में स्त्री उपेक्षा, उत्पीडन और शोषण का शिकार है। बेटी को अभिशप्त मानने वाले लोग उसके जन्म पर नकारात्मक दृष्टि डालते हैं। बेटी को बच्ची नहीं बोझ की तरह देखते हैं, लेकिन बच्चा बेटा तो उनको बड़े प्यार से पालन पोषण करता है। पायल के घर में

लगातार पाँच बेटियाँ जन्म लेती हैं, इसलिए माँ की कोख को गालियाँ मिलने लगी थीं। जब पिता दारू के नशे में आता तो सारी बेटियाँ उनके ग़ुस्से का शिकार बनती है। पिता ने अपना सारा प्यार पहले बेटा राकेश को दे दिया। यहाँ बेटा और बेटी के बीच का भेदभाव दृष्टव्य है।

पुरुष सत्तात्मक समाज में स्त्री उपेक्षित ही नहीं बल्कि असुरक्षित भी है। इस उपन्यास में मर्द लोगों के शोषण से स्वयं बच पाने के लिए पायल लड़का बनकर अपनी असलियत को छिपाकर रही। और उसने अपने आप से कहा, घर परिवार से दूर होते ही बाहर के समाज में लड़की का रूप लिए रहना असुरक्षित है.. देह के नरभक्षी भेड़ियों की चुभती नजरों को बड़ी शिद्दद से महसूस किया होगा,जो मादा गंध के उठते ही खूंखार हो उठते है। और मौका मिलते ही दबोच लेने के लिए उतावले बने रहते हैं।"[10] यहाँ नारी जीवन के प्रति होने वाली उपेक्षा, भेदभाव और शोषण का खुला चित्रण मिलता है। सामाजिक परिवेश में इस स्थिति पर बदलाव होना चाहिए।

5. भूख, गरीबी और देह व्यापार : घर से दूर चले जाने के बाद भूख, गरीबी, अकेलापन और अमानवीयता की अनेक समस्याएँ पायल के सामने उभरती थीं। भूख के कारण कुछ खाने को मिलने की प्रतीक्षा में उसने भीख मांगी लेकिन यात्रियों ने उसे हिकारतों से देखा और उसको वहाँ से भगाया। लेकिन भूख से त्रस्त पायल कुछ न कुछ मिलने की उम्मीद में वहीं खड़ी और यात्रियों द्वारा फेंके दुर्गंधपूर्ण भोजन को खाकर अपनी भूख मिटाया। इसके बाद जुगनी की दोस्ती अनवर नामक एक दातून बेचने वाले हमउम्र लड़के से हो जाती है, वे दातून बेचने के साथ छोटी मोटी चोरियां भी करता था। लेकिन उनकी अप्रत्याशित मृत्यु उसको वहां से चलने को विवश कर दिया।

मैं पायल उपन्यास में भूख और गरीबी के साथ देह व्यापार का चित्र भी प्रस्तुत किया गया है। अनवर की माँ की देह व्यापार और हिजड़े लोगों का देहव्यापार की संलिप्तता का कारण भी गरीबी है। अन्वर रेलवे कांलेनी में अपनी माँ , तीन भाई और एक छोटी बहन के साथ रहते थे। भूख और गरीबी से लड़ने के लिए और अपने बच्चों की पेट की आग बुझाने के लिए अनवर की माँ ने इस मार्ग को चुन लिया। प्रस्तुत उपन्यास में देह व्यापार की समस्या को भूख, गरीबी और बेरोजगारी के साथ जोड़कर अभिव्यक्तकिया है।

6. मानवता की भावना : 'मैं पायल' उपन्यास में मानवीय मूल्यों से युक्त लोगों को देख सकता है। भूख से त्रस्त जुगनी पर पहली बार एक ममतामई माँ की दृष्टि पड़ी, वह पायल को उसकी भूख मिटाने के लिए दो रोटियाँ दीं, जिस क्षण वह उस माँ के प्यार को महसूस कर लिया। प्लेटफॉर्म पर जुगनी अपना अधिकांश समय भिखारियों के साथ बिताया, भिखारी बाबा ने अपने डिब्बे से उसे भोजन दिया, और उसको ओढने को उनकी कंबल का एक हिस्सा भी दिया। गरीब लोगों के बीच मानवता और करुणा का भाव मौजूद है। ये भिखारी लोग शारीरिक रूप से विरूप, विकलांग और कुष्ट जैसे रोगों से पीड़ित हो, भीख मांगने के अलावा उनके पास जीने का कोई उपाय भी नहीं हो लेकिन वह सहानुभूति और मानवीयता से संपन्न है। "वे भिखारी जरूर थे पर उनके अंदर मानवता थी, दूसरे के लिए दुख-दर्द था,अपने साथियों के प्रति हमदर्दी थी। अपनत्व था। एक-दूसरे के लिए वह समर्पित थे।[10]

जुगनी ने अन्वर की मृत्यु से दुखी होकर रेलवे स्टेशन से जाते वक्त पंडित जी ने अपनी चाय की दुकान में उसको काम दिया। उसको खाने पीने के अलावा दो रुपये भी मिलने लगा, इसके बाद अप्सरा टॉकीज के ठेकेदार संतोष सिंह उसको उनकी कैंटीन पर सौ रुपए महीने के व्यवस्थे पर उन्हें काम पर रखा। जब वो लखनऊ आने पर हिजड़ा लोगों ने जबरदस्ती से उसे अपने पास रखा और पप्पू

नामक गुंडे से वह अपमानित भी हो गई जिस स्थिति में भी एक दयालु व्यक्ति पायल को पहचान लिया। उन्होंने उसको कुछ ऑरकस्ट्रा वाले से परिचय कराया। यहाँ से पायल आकाशवाणी, दूरदर्शन और आर्केस्ट्रा के बहुत सारे कार्यक्रम में व्यस्त होने लगा, और अच्छे खासे कमाने लगा।

7.हिजड़ा होने का दर्द और अस्मिता की पहचान : हिजड़ा लोग समाज से उपेक्षित और पीड़ित वर्ग है। हिजड़ा बच्चे को अपनी कुल महिमा पर पड़े धब्बे की तरह समझते है,और जीवन भर इस तिरस्कार का दर्द से वह जीते रहते हैं। तीसरे लिंग के प्रति भय, लज्जा, क्रोध, हिंसा, पूर्वाग्रह, भेदभाव आदि नकारात्मक भावों के सम्मिश्रण से बना यह 'ट्रांस्फोबिया' तीसरे लिंग के जीवन को नरक बना देता है।"[12] जब पायल किन्नरों के पास आने पर वह जबरदस्ती से उसको उन लोगों के साथ जोड़ने का प्रयास किया और उसे समझाते है प्रस्तुत पंक्तियाँ हिजड़ा होने के दर्द को स्पष्ट करती है। हिजड़ा जीवन का एहसास कितना दर्दनात्मक है, यह पायल के शब्दों से व्यक्त है- "हे ईश्वर, ऐसा कौन सा पाप मैंने किया जो तूने मुझे इस जीवन में हिजड़ा रूप दिया।"[13] यह हिजड़ा लोग पायल को उसकी डेरे पर ले जाती और गुरु माई के आदेशानुसार उनके रीति रिवाज़ों को सिखाने की कोशिश करती। लेकिन पायल अपने लिए एक अलग अस्तित्व बनाने की इच्छा किया वो अपने आप से पूछती है की, क्या एक व्यक्ति अपने जीवन में अपनी इच्छा के अनुसार स्वतंत्रता से जी नहीं सकता? किन्तु भूख-प्यास के कारण पायल अनचाहे मन से उन लोगों के साथ ताली बजाकर बधाई देते जीवनयापन करने को तैयार हो जाती है। एक बार पप्पू नामक गुंडे ने पायल को अपमानित करने की कोशिश की, लेकिन पायल ने उनकी गाल पर झापड़ दी। परंतु इसके बदले पप्पू ने पायल को मारते मारते अधमरा कर छोड़ दिया। इस गुंडे से प्राप्त अपमान उस के लिए असहनीय था। अपने शरीर पर जितनी चोटों पड़ीं उससे ज्यादा चोट उनकी मन-मस्तिष्क पर पड़ी। और उसकी आत्मा में पड़ी। सबसे बड़ी चोट उसकी बेइज्जती की है, इसलिए उसने पप्पू से बदला लेने का निश्चय किया।

पायल अपनी ज़िंदगी की सारी मुजीबतों को पार कर लिाा, वह एक अच्छी डान्सर बन गई और आकाशवाणी, दूरदर्शन और ऑरकस्ट्रा के कार्यक्रम में व्यस्त होकर अपनी अस्मिता की पहचान ली। इसके बीच उसके प्रेमी अशोक सोनकर की सहायता से पायल ने पप्पू को एक सबक सिखाया। उसके अस्तित्व पर उड़ाये सवाल को पायल ने पप्पू को मारते मारते जवाब दिया। लेकिन अशोक का अनावश्यक आधिपत्य और उसके कार्यक्षेत्र में उनके हस्तक्षेप से पायल परेशान होने लगी, उसने इस रिश्ते को विराम दिया। उसका मन किन्नर समाज की और लगा लिया। उसके कुछ ईमानदार किन्नर लोग अक़्सर पायल से मिला करते थे। पायल ने उनके बीच इज्जत कमाया,और कई किन्नर पायल को अपना गुरु मान लेते हैं। पायल धीरे धीरे उसके किन्नर अस्तित्व को पूर्ण रूप से स्वीकार कर लेती है। वह उच्चतम न्यायालय द्वारा किन्नर वर्ग के उत्थान के लिए किए गई निर्णय पर भरोसा रखते हुए अपने किन्नर वर्ग के भविष्य पर उम्मीद भी रखता है।

निष्कर्ष : महेंद्र भीष्म का दूसरा उपन्यास 'मैं पायल' समाज से उपेक्षित और उत्पीड़ित किन्नरों के जीवन संघर्ष की जीवंत कहानी है। इस जीवनीपरक उपन्यास में पायल के जीवन के सारे पहलुओं को लेखक ने अभिव्यक्त किया है। समाज में सम्मान के साथ जीने का हक हर व्यक्ति को होता है, लेकिन किन्नर वर्ग को अपने परिवार और समाज से अलग होकर अछूतों की तरह जीना पड़ता है। लेकिन माननीय उच्चतम न्यायालय के द्वारा किन्नर समाज के उत्थान के लिए 15 अप्रैल 2014 को एक ऐतिहासिक निर्णय लिया, जिसमें ट्रांसजेंडर समुदाय को तृतीय लिंग के रूप में स्वीकृती दी गयी और उन्हें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्तर

पर उत्थान करने की अधिकार भी मिला। पायल सिंह भी इसी उम्मीद में है, समाज की मुख्य धारा में आने का मार्ग अब उनके सामने खुला है।

'मैं पायल' उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकर महेंद्र भीष्म ने समाज में होने वाले किन्नर जीवन की त्रासदी, विस्थापन, अमानवीय व्यवहार, नैतिक मूल्यों का विघटन, असुरक्षित नारी जीवन, भूख और गरीबी जैसी विषयों को बड़ी संवेदनात्मक ढंग से प्रस्तुत करते हुए समाजिक दृष्टिकोण पर बदलाव लाने की कोशिश की। किन्नरों के प्रति प्रचलित उपेक्षा, तिरस्कार एवं सामाजिक बहिष्कार का भाव को दूर करने के प्रयास में मैं पायल उपन्यास की लेखकीय सफलता में इसका स्थान महत्वपूर्ण है।

संदर्भग्रंथ सूची

1. कबीर विमर्शः लेसबियन,गे,बाई-सेक्सुअल,ट्रांसजेंडर - के.वनजा, वाणी प्रकाशन-2021, पृष्ट 29
2. मैं पायल -महेंद्र भीष्म ,अमन प्रकाशन,कानपुर -2016, (भूमिका से), पृष्ट 10
3. मैं पायल - पृष्ट 15
4. वही पृष्ट 26
5. वही पृष्ट 36
6. वही पृष्ट 38
7. वही पृष्ट 39
8. वही पृष्ट 55
9. वही पृष्ट 59
10. वही पृष्ट 64
11. थर्ड जेंडर : कथा आलोचना -सं. डॉ. एम. फ़िरोज़ खान, अनुसंधान पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर-2017, पृष्ठ 52
12. मैं पायल - पृष्ट 82

शोध छात्र

स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग

संत थॉमस महा विद्यालय,पाला

कविता

आइए हम इस लत से मुक्ति पाएँ

डॉ जिनो पी वरुगीस

अब हम स्क्रीन टाईम में खो जाते हैं
सोशल मीडिया की दुनिया में डूब जाते हैं
लाइक्स, कमेंट्स ओर शेयर्स की दौड़ में
है हम
अपना समय, अपना मन
और अपना जीवन नष्ट कर देते हैं
हमारे दोस्त, हमारे परिवार और हमारे
समाज हमसे दूर होते जाते हैं
लेकिन हमें इसका कोई एहसास नहीं होता
बंधन टूट रहे हैं, अलगाव और अकेलापन
बढ़ रहा है।
हमारी अँखें, हमारे काम
और हमारा दिमाग सोशल मीडिया के
चक्र व्यूह
में फंस जाते हैं।
आइए हम इस लत से मुक्ति पाएँ
आइए हम अपना समय, अपना मन
और अपना जीवन वापस पाएँ
आइए हम अपने दोस्तों, अपने परिवार,
और अपने समाज के साथ जुड़ें
आइए हम अपनी अमूल्य ज़िंदगी को
सार्थक बनाएँ
और छोड़ दें स्क्रीन की रोशनी
बढ़ा दें जीवन की रोशनी।

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिंदी विभाग, मार थोमा कॉलेज

चंकत्तरा, मलप्पुरम

अध्यापन पेशे की आदर्श शख्सियत : डॉ वी के हरिहरन उण्णित्तान

डॉ एन सुरेश

(पूर्व प्रकाशित से आगे)

प्रो वी के हरिहरन उण्णित्तान अपनी प्राथमिक कक्षाओं की पढ़ाई से लेकर डॉक्टरेट उपाधि हासिल करने तक के अध्ययन काल में बहुत ही अध्ययनशील, होशियार, अक्लमंद, तेज़, होनहार, हौसलेमंद, निष्ठावान, अनुशीलित, अनुशासित और अव्वल रहे थे। स्नातक स्तर पर उनके मुख्य विषय गणित और भौतिकी थे। लेकिन द्वितीय भाषा हिंदी उच्चतम श्रेणी में उत्तीर्ण होने से उनकी उच्च शिक्षा संबंधी उम्मीदों की गति हिंदी भाषा और साहित्य की दिशा में बदल गई। वहाँ भी स्नातकोत्तर हिंदी परीक्षा में वे अन्य हिंदी स्नातक विद्यार्थियों के मुकाबले अव्वल दर्जे में उच्चतम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

सन् 1939 जून में केरल राज्य के पत्तनंतिट्टा जिले के ओमल्लूर नामक छोटे गाँव में, चिट्टेटत्तु अथवा पाट्टुपुरत्तु कुञ्ञुकोच्चुण्णि और वाणियिटत्तु कुञ्ञुकुट्टि अम्मा दंपति के संतान के रूप में उनका जन्म हुआ। प्राथमिक शिक्षा पत्तनंतिट्टा के सरकारी विद्यालयों, स्नातक स्तर की शिक्षा वहीं के कैतलिकेट कॉलेज, और स्नातकोत्तर शिक्षा एऱणाकुलम जिले के प्रसिद्ध महाराजास कॉलेज में संपन्न हुआ।

केरल विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग में आधुनिक भाषाविज्ञान के विख्यात प्रोफेसर डॉ प्रबोधचंद्रन नायर के मार्ग निर्देशन में उन्होंने पी एच डी की उपाधि हेतु अनुसंधान किया और 'A Linguistic and Stylistic study of jainendra Kumar's Tyagapatra' शीर्षक शोध प्रबंध पर पी एच डी की उपाधि हासिल की। वाकई यह शोध-प्रबंध इतने नूतन, गहन, वैज्ञानिक एवं बौद्धिक स्तर के अध्ययन विश्लेषण का नतीजा है। भाषावैज्ञानिक अध्ययन और खोज के क्षेत्र में यह उण्णित्तान जी की अमूल्य देन है।

स्नातकोत्तर परीक्षा में उत्तम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के बाद कोल्लम में स्थित श्रीनारायण ट्रस्ट के अधीनस्थ महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य के लिए उनकी नियुक्ति हुई और तकरीबन तीस साल की सेवा के बाद श्री शंकरा विश्वविद्यालय में 'रीडर' के पद पर रहने का अवसर भी प्राप्त हुआ।

आपकी पत्नी का नाम ललितांबिका है , जो अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधिधारी है। इस दंपति के दो लड़के हैं। दोनों एक से बढ़कर एक होशियार एवं चुस्त। बड़े लड़के का नाम हरि किरण है और छोटे का नाम हरिकिशोर। दोनों शादी-शुदा है और सेवारत भी।

एक काबिल, कामयाब और समर्पित अध्यापक होने के साथ साथ वे एक लेखक के रूप में भी अपनी सिद्धहस्तता साबित कर चुके हैं। मलयालम और हिंदी भाषाओं में उनकी मौलिक, व्याख्यात्मक और अनूदित रचनाएँ उपलब्ध हैं। मौलिक रचनाओं में हिंदी में प्रकाशित 'अलक्षित झाँकियाँ' शीर्षक किताब आपके कई उच्चस्तरीय शोधपरक लेखों का संग्रह है। इसके अलावा

'वाक्यवुम क्रिययुम मलयालत्तिल' (व्याकरण), 'मलयाल चिंतकळ्', 'व्याख्यानवुम विमर्शनवुम', 'वाक्यपदीयम : ब्रह्मकाण्डम्'(विवरण), श्रीनारायणगुरु कृत 'आत्मोपदेश शतकम' की व्याख्या मलयालम भाषा में रचित एवं प्रकाशित रचनाएँ हैं। 'वाक्यवुम क्रिययुम मलयालत्तिल' शीर्षक ग्रंथ आधुनिक भाषावैज्ञानिक सिद्धांतों के बुनियाद पर चर्चित उच्च स्तरीय व्याकरण ग्रंथ है।

अनूदित रचनाओं में जयशंकर प्रसाद कृत हिंदी काव्य 'आँसू' का 'कण्णुनीर' नाम से, निराला कृत कविताओं से चुनी हुई कविताओं का मलयालम अनुवाद 'रागवुम विरागवुम नाम से, मैथिलीशरण गुप्त के हिंदी काव्य 'पंचवटी' का 'पंचवटी' नाम से, सूरदास के 'भ्रमरगीत' में से चुने हुए पदों का मलयालम अनुवाद 'भ्रमरगीतम' शीर्षक से, कबीरदास के हिंदी दोहों (चुनिंद मौक्तिकम' नाम से, तुलसीदास के 'रमचरितमानस' 'रामचरितमानसम' नाम से अनुवाद प्रकाशित है।

इसी प्रकार मलयालम से हिंदी में अनूदित रचनाओं में मलयालम के महाकवि कुमारन आशान कृत 'चिंताविष्टयाय सीता' नामक खंड काव्य का 'सीता' नाम से, मलयालम के और महाकवि अक्कित्तम द्वारा रचित कविताओं में से चुनी हुई कविताओं का 'बीसवीं सदी का इतिहास तथा अन्य कविताएँ' नाम से, श्रीनारायणगुरु कृत 'आत्मोपदेश शतकम' नामक उच्चकोटि के दार्शनिक कथा का 'आत्मोपदेश शतक' नाम से व्याख्या सहित, तकषि की कहानियाँ' नाम से अनुवाद प्रकाशित है।

महाकवि जयशंकर प्रसाद के लिखे हुए 'कामायनी' नामक हिंदी महाकाव्य का 'कामायनी' शीर्षक पर ही किया गया मलयालम अनुवाद डॉ उण्णित्तान जी की ओर से अनुवाद साहित्य के लिए बहुत बड़ी देन है। विभिन्न भारतीय दर्शनों, विशेषकर कश्मीरी शैव दार्शनिक चितंन से उद्भूत प्रत्यभिज्ञा दर्शन की बुनियाद पर निर्मित अनोखा महाकाव्य है 'कामयनी' जिस में बैद्धिकता का भी समावेश है। इन तत्वों को बिना जाने-पहचाने किया जानेवाला 'कामायनी' महाकाव्य का अध्ययन, अध्यापन, या फिर अनुवादकार्य भी अधूरा ही रहेगा। हालाँकि उण्णित्तान जी ने महाकाव्य से जुड़े सभी दार्शनिक, बौद्धिक, काव्यशास्त्रीय, सौंदर्य शास्त्रीय जैसे पहलुओं के अध्ययन-मनन करने और फिर लक्ष्य भाषा मलयालम में आवश्यक सममूल्य तत्वों को खोज निकालने के उपरांत ही अनुवाद कार्य को संपन्न किया है। लिहाज़ा 'कामायनी' महाकाव्य का प्रो उण्णित्तान द्वारा किया गया मलयालम अनुवाद एकदम अचूक, शुद्ध-सिद्ध होता है।

भूतपूर्व प्रोफसर, हिंदी विभाग,
केरल विश्वविद्यालय
मोबाइल : 9349439544

आत्मकथा

देवयानम्

अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना

मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा

चौदहवाँ देवपद - कलालोक

(पूर्वप्रकाशित से आगे)

स्वामी विवेकानंद 1892 में केरल में आये थे। तब वे कोटुंगल्लूर राजमहल में गए थे। ऐसा सुना गया है कि उस समय उन्होंने राजमहल की महिलाओं के साथ संस्कृत भाषा में बातें की थीं। इससे यह सूचित होता है कि वहाँ के अंतःपुर की नारियाँ भी कितनी विदुषियाँ थीं। स्वामी विवेकानंद के पैरों के स्पर्श से पवित्र इस भूमि में अर्थात् कोटुंगल्लूर के शृंगपुर नामक स्थान में बाद में "विवेकानंद वेदिक विशन (Vivekanand vedic vision) की स्थापना हुई थी। स्वामी जी के सिद्धांतों से अभिभूत डॉ लक्ष्मीकुमारी ने इस संस्था के निर्माण और संचालन का दायित्व अपने कंधों पर ले लिया था।

कोटुंगल्लूर के मंदिरों के महत्व के बारे में श्री वी टी इंदुचूडन ने दो प्रामाणिक ग्रंथ रचे हैं। वे हैं - "दि सीक्रट चेंबर" (The Secret Chamber) और "गोल्डन टवर" (Golden Tower) कोटुंगल्लूर नगर के पास ही मतिलकं नामक गाँव है जो बड़ा ऐतिहासिक महत्व रखता है। बड़े बड़े इतिहासज्ञ वहाँ आकर अनुसंधान एवं उत्खनन करते हैं और दूसरा एक महत्वपूर्ण मंदिर है तिरुवंचिक्कुलम का जो कि नगर से कुछ ही दूर पर है। वहाँ शिव जी की पूजा-अर्चना होती है। केरल का सर्वप्रथम मसजिद भी कोटुंगल्लूर में स्थापित हो गया था जिसका भी इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

गुरु गोपालकृष्ण की 'जीवित रेखा' नामक जीवनी की भूमिका मैंने लिखी थी। इस प्रकार कोटुंगल्लूर से संबंधित बहुत-सी बातें मेरे स्मृति पट पर अब भी प्रोज्ज्वलित रहती हैं।

पंद्रहवाँ देवपद - बंधुर तिरुवनंतपुरम

स्यानंदूरपुरम् किल प्रविशतां दूरागतां नृणाम्
आनंदेन समोf स्तिनैव भुवनेत्वानंद भरोf परः
ब्रह्मानंदपरचेयोगिमनसाज्ञेयंन तुल्यायत
स्तस्यानंदरेस्य हंत समतां केनहवाब्रूमहे।।

("स्यानंदूरपुर वर्णन प्रबंधम" - श्री स्वाति तिरुनाल महाराजा)

1996 मार्च के इकतीसवीं तारीख को केरल विश्वविद्यालय की अपनी नौकरी से मैं निवृत्त हो गया था; लेकिन केरल कलामण्डलम और 'कुंचन स्मारक' - इन दोनों संस्थाओं के अध्यक्ष का काम लगातार करता रहता था। अपनी नौकरी से निवृत्त होने के पहले महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग का अधिकारी (Dean, Fine Arts) विश्वविद्यालय की प्रबंध समिति का अंग, अनुसंधान विभाग की समिति का अध्यक्ष इत्यादि गंभीर दायित्वपूर्ण उन्नत पद के काम भी मैं संभालता था।

1996 मार्च याने फालगुन का स्वाति नक्षत्र मेरी साठवीं वर्षगाँठ था। गाँव जाकर अपनी माँ, बहिन आदि पारिवारिक अंगों के साथ यह वर्षगाँठ मनाने की मेरी इच्छा थी। लेकिन मेरे प्रिय विद्यार्थी लोगों ने कोट्टयम में अपने गुरु की वर्षगाँठ मनाने की सारी तैयारियाँ की थीं। उनमें प्रमुख थे श्री के एल सामुवलकुट्टी और इ एन केरलवर्मा। कोट्टयम के सार्वजनिक पुस्तकालय में गंभीर समारोह आयोजित किया गया था। अपने गुरु श्री के पी नारायण

पिषारडी ने समारोह का उद्घाटन किया था और मुझे आशीर्वाद दिया था। डॉ ओ एम अनुजन, डी सी किषक्केमुरी, एम के माधवन नायर, श्रीमती भारती शिवजी, कलामण्डलम रामनकुट्टी नायर आदि मेरे अनेक प्रिय व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे। शामको भारती शिवजी का नृत्य हुआ था और रात को श्री कलामण्डलम रामनकुट्टी नायर ने अपने साथियों के साथ कथकली भी प्रस्तुत की थी। उस दिन की यादगार के रूप में अपने विद्यार्थियों ने 'देवयानम' नामक एक पुस्तक भी प्रकाशित की थी। उसमें केरल के उन्नत शीर्ष कलाकारों के लेख समाहृत किए गए थे और अपने प्रिय शिष्य डॉ सामुवल का भी एक लेख था जो मेरे जीवन-चरित्र पर प्रकाश डालता है।

जब मैं विश्वविद्यालय का अध्यापक था तब अपने को भारत सरकार के सांस्कृतिक विभाग की कोई वरिष्ठ छात्रवृत्ति (senior fellowship) मिली थी। नाट्यकला संबंधी तीन विभाग (Three Theatres) के अनुसंधान-अनुशीलन के लिए यह छात्रवृत्ति दी गई थी। वे इस प्रकार थे - धार्मिक अनुष्ठान से संबंधित (Ritualistic), शास्त्रीय नाट्यकला (classic) और लोकगीत एवं लोकनृत्य संबंधी नाट्यकला (Folk music and dance) मैंने छात्रवृत्ति ग्रहण कर काम तो किया था; लेकिन मैं पुस्तक का समर्पण नहीं कर सका था। ऐसा करने का नियम भी तो नहीं था। अतः मैंने इन तीन नाट्यकलाओं के संबंध में अपने अध्ययन का एक विस्तृत विवरण मात्र समर्पित किया था। बाद में 'कवि शंकराचार्य' (Sree Sankara the Poet) नामक अनुसंधान विषयक ग्रंथ मैंने प्रकाशित किया था जिसके लिए मुंबई के सर सोराबजी से अपने को 'टाटा फेलोशिप' की उपलब्धि हुई थी। इसके लिए पद्मविभूषण डॉ वल्यत्तान की प्रेरणा जो हुई थी; यह विशेष स्मरण करने योग्य है। भारत सरकार के सांस्कृतिक विभाग की ओर से मुझे दुबारा एक और वरिष्ठ छात्रवृत्ति दी गई थी। तब मैंने रस सिद्धांत पर प्रबंध तैयार किया था और वह 'रस' नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया था। अंतर्राष्ट्रीय द्राविड़ भाषा विज्ञान केंद्र (ISDL) से मुझे एक सीनियर फेलोशिप मिला था 1989 में उस समय मेरे अनुसंधान का विषय था - "दक्षिण भारत के नृत्य तथा संगीत पर संस्कृत का प्रभावः एक अध्ययन' (Dance and Music of South India - A study in relation to Sanskrit tradition) उसके बाद मैंने 'शृंगारप्रकाशम' नामक बृहद् ग्रंथ का मलयालम भाषा की लिपि में भाषांतर किया था और विशद अध्ययन के साथ उसकी भूमिका भी तैयार की थी। केरल भाषा इन्स्टिट्यूट ने उसका प्रकाशन किया था। इस ग्रंथ का मूल रूप बिलकुल उपलब्ध था। इसलिए यह काम तो मेरे लिए अत्यंत प्रमुख एवं गर्व का विषय है। भाषा इन्स्टिट्यूट ने पहले मेरे 'श्री स्वाति तिरुनाल : जीवनी और कृतियाँ" नामक पुस्तक का प्रकाशन किया था। श्री मतंगमुनि का अनुपम ग्रंथ है 'बृहद्देशि'। उसकी व्याख्या मैंने तैयार की थी जो केरल संगीत नाटक अकादमी ने प्रकाशित किया था। श्रीमती टी. सुधा और जयश्री ने मिल कर 1996 तक की मेरी सारी कृतियों को एकत्रित कर 'डॉ वी एस शर्मा की रचनाएँ' नाम से ग्रंथ सूचि (Bibliography) तैयार की थी जिसे केरल विश्वविद्यालय की ग्रंथशाला ने प्रकाशित की थी। 'लावण्यदर्शनम' नामक मेरी पुस्तक भी विश्वविद्यालय ने प्रकाशित की थी जो कि महाकवि वल्लत्तोल की स्मारक वक्तृताओं का संग्रह है।

(क्रमशः)

आत्मकथा

ज़िंदगी : एक लोलक

मूल : श्रीकुमारन तंपी **अनुवाद : डॉ.पी.जे.शिवकुमार**

(पूर्वप्रकाशित से आगे)

"भवानी, यह तेरे ओप्पन्नोन (भाई) के अभिमान की समस्या है। वेलक्कुळं को खुदवाना है तो इस ज़मीन को बेचना चाहिए। अगर मैं जिंदा रहूँगा तो इस तरह के दस ज़मीन तुझे खरीदकर दूँगा। तेरी बेटी को मैं लंदन में भेजकर पढ़ाऊँगा।" मेरी दादी जी ने कहा - "इस घर में मेरे साथ दस या ग्यारह वर्ष की उम्र में शादी के लिए तैयार होनेवाली लड़कियाँ थीं। मेरी बेटी की तो उम्र अठारह बीत चुकी। तू देश की भलाई करता रहना। अगर मेरा कुछ हो जाय तो भवानी पर क्या बीतेगी? सारे रिश्तेदार शत्रु बन गए।

"माँ बेफ़िक्र रहें। मेरी बहन से शादी करने के लिए एक राजकुमार आयेंगे। मैं लाऊँगा। क्या माँ जानती हो, मैं व्यापार में प्रवेश करनेवाला हूँ। बहन के बँटवारे के भाग के मकान में मैंने एक शॉपिंङ कॉम्प्लक्स शुरू करने का निश्चय किया है। नीचे बाई ओर स्टेशनरी की दूकान... दाई और किराने की दूकान... ऊपरी मंजिल पर कपडों की दूकान, आयुर्वेद औषधियाँ और अंग्रेज़ी औषधियाँ और होमियो औषधियाँ एक ही दूकान में मिले तो कैसा रहेगा...? मेरी माँ भवानीक्कुट्टी तंकच्ची ये सब सुनकर आनंदोत्साहित होकर खड़ी रहीं।

जीवन को अधिक देखनेवाली दादी कुंजुक्कुट्टी तंकच्ची बेटी का भविष्य आपत्ति में होगा समझकर फूटफूटकर रोने लगीं।

"मुझे संपत्ती से ज्यादा महत्व मेरा ओप्पन्नोन है, इस प्रकार कहकर माँ ने दादी के विरोध की उपेक्षा करके एक एकड़ से अधिक की पनंतिट्टा ज़मीन बेचने के दस्तावेज़ में हस्ताक्षर किए। इस तरह वेलायुध भगवान का वेलक्कुळं शुद्ध बन गया।

वेलक्कुळं की चाँदी की सीढ़ियों पर
पैरों की चूड़ी, हाथ के कंकण झनक उठे
चाँद सा सुंदर मुख खिल उठे जब
हज़ारों दीप प्रतिबिंबित हुए उसमें। - ये पंक्तियाँ लिखते समय भी हरिप्पाटु के गेर्ल्स स्कूल से लगी पनंतिट्टा ज़मीन के दृश्य मन के तह की प्रदर्शनशाला में व्यक्त हो रहे थे। वह ज़मीन सरकार ने ले ली। आठवीं कक्षा तक का स्कूल अब हरिप्पाट्टु गेर्ल्स हायर सेकेंटरी स्कूल बनकर बड़ा हुआ। एक ज़माने में मेरी माँ की रहनेवाली पनंतिट्टा ज़मीन अब गेर्ल्स हायर सेकंटरी स्कूल का खेलने का मैदान है।

हे दुख, तुम्हें प्रभात वंदन : उन्नीस सौ तीस के दशकों में मेरे चाचाजी पद्मनाभन तंपी श्रीमूलं असेंब्ली में सदस्य बने थे। हरिप्पाट्टु की जनता की सेवा करने और देश की भलाई के लिए अपनी भूमि एवं मेरी माँ की ज़मीन का एक भाग भी बिक चुनने के बाद ही पैरों के नीचे की मिट्टी रिसती जा रही है, यह सत्य

चाचाजी को मालूम पड़ा था। आश्रितवत्सल रूपी तंपी महोदय ने, तब भी अपना शोषण करके पीछा करनेवाले अनुचरों को दूर न रखा।

काँटे को काँटे से ही लेना चाहिए। पुन्नूर तंपियों को नियमोपदेश देनेवाला वकील रामकृष्ण पणिक्कर ने कहा - "इसलिए तंपी महोदय को बिसिनस की ओर मुडना चाहिए।" व्यापार के द्वारा धनवान बने कुछ व्यक्तियों को उन्होंने और अन्य कुछ लोगों ने नमूना के रूप में दिखा भी दिया। लेकिन वे सब परंपरागत व्यापारी थे। व्यापार की कपटता जाननेवाले थे। चित्र खींचने, दाँत निकालने और पैसा खर्च करके जननेता बनने मात्र की समझ रखने वाला वह निरीह व्यक्ति व्यापार में कैसे विजयी हो जायेंगा? फिर भी उन्नीस सौ तैंतीस के दशकों में आज के सूपर मारकेट के समान एक संस्था की कल्पना करने वाले मेरे चाचाजी के बारे में सोचने पर अभिमान भी होने लगता था। स्थानीय लोग दंतमंजन के लिए चावल का जला हुआ छिलका, आम का पत्ता और नीम की टहनी का उपयोग करते समय हरिप्पाट्टु नामक गाँव में रहते हुए, टूथपेस्ट और टूथ पाउडर का निर्माण करने को दंतवैद्य रूपी उन्होंने आवश्यक फॉरमुला भी तैयार की। उसको तंपीस टाइम ऑल टूथ पेस्ट और तंपीस टाइम ऑल टूथ पाउडर के नाम दिए गए।

बँटवारा होने पर बड़ी दादी जी की बड़ी बहन चेल्लम्मा तंकच्ची को भी तंपियों के मकानों में सबसे नवीन 'मेडयिल' नामक घर मिला था। उनके पति वकील नीलकंठा पिल्लै की अतिबुद्धि के सामने स्थानीय प्रमुख कुमारन तंपी और पद्मनाभन तंपी टिक न सके। मेरी बड़ी माँ कार्त्यायनी तंकच्ची सारे भाइयों से उम्र में बड़ी होने के कारण भाइयों के सम्मुख खड़ी होकर बात करने को पारंपरिक तरीके से उनमें पात्रता भी थी। कारण, वे सभी भाइयों की उप्पाप्पा थीं। बड़े भाई से मुख की ओर देखकर बात करने का अधिकार बहनों में नहीं थीं, मेरी माँ समेत सब दरवाज़े की आड में खड़ी होकर सिर्फ आहें ही भर सकती थीं। इस स्थिति का सबसे बडी माँ ने और उनके दामाद वकील नीलकंठ पिल्लै ने अच्छी तरह लाभ उठाया। लंबाई कम होने पर भी अच्छी तरह गोरे, सुंदर कार्त्यायनी तंकच्ची में शासन की निपुणता थी। वे असामान्य धैर्य और आज्ञा शक्ति युक्त स्त्री थीं। अगर मेरे चाचाजी कुछ बात विरोध में कहते हैं तो "अरे, अंबू..... चुप रह, क्या तू सिर भूलकर तेल लगाता है? ऐसा पूछ कर चाचाजी को निशब्द बनाने की क्षमता भी बड़ी बड़ी माँ में थीं।

कोल्लं - आलप्पुषा सड़क के किनारे पर है मेडयिल घर। हरिप्पाट्टु के मुख्य बाज़ार स्थित डाणाप्पडी नामक व्यापार स्थान से 'मेडा' की ओर ज्यादा दूरी नहीं है। (अब यह सडक एन एच 47 है) बिसिनस के लिए उचित स्थान! इसलिए ही अपना व्यापार केंद्र यहाँ शुरू करने के लिए चाचाजी ने निश्चय किया था। उम्र में बहुत अंतर न होते हुए भी रिश्ते से भतीजी चेल्लम्मा तंकच्ची को किराया देने के करार में चाचाजी ने दूकानें खोलीं। नीचे की मंजिल पर किराने औरऑयिल मिल। ऊपरी मंजिल पर स्टेशनरी दूकान और कपड़ों की दूकान। एक छोटा स्थान तैयार करके एक छोटी सी दवाई की दूकान भी शुरू की। चाचाजी का पीछा करनेवाले चाटूकारों को ही दूकानों का दायित्व सौंप दिया गया। चाचाजी दंत डॉक्टर की हैसीयत से प्राक्टीस कर रहे थे। अधिक इनवेस्टमेंट के लिए अनुयायियों के कहने पर चाचाजी ने अपने व्यक्तित्व को गिरवी रखकर निकट के दोस्तों से कर्ज भी लिया। (क्रमशः)

प्रश्नोत्तरी

डॉ. रंजीत रविशैलम

1. 'नई कविता : सीमाएँ और संभावनाएँ' - किस कवि की आलोचनात्मक रचना है?
2. 'आधा गाँव' उपन्यास के रचनाकार कौन है?
3. 'पुश्किन के देश में' किसका यात्रा साहित्य है?
4. शिरोरेखा क्यों हटानी चाहिए - निबंध का रचनाकार कौन है?
5. 'हिंदुस्तान में रोज़मर्रा के काम में अंग्रेज़ी बिल्कुल काम नहीं आती। हिंदी की ज़रूरत पड़ती है' - किसका कथन है?
6. वृंदावनलाल वर्मा को 'वाल्टर स्काट' की उपाधि किसने दी?
7. 'काँटा' किसकी कहानियों का संग्रह है?
8. 'बीज' उपन्यास के रचनाकार कौन है?
9. 'नेपथ्य में हँसी' किसकी ख्यातिप्राप्त कविता है?
10. 'सखी हौं स्याम रंग रंगी' किसकी पंक्ति है?
11. 'वीर पंचरत्न' किसकी ख्यातिप्राप्त रचना है?
12. 'काव्यांग कौमुदी' शास्त्रीय रचना के रचनाकार कौन है?
13. 'देव और बिहारी' किसकी रचना है?
14. 'सिंहावलोकन' किसकी आत्मकथा है?
15. आचार्य भरत ने किसे 'पंचमवेद' कहा?
16. 'कोहबर की शर्त' उपन्यास किसका है?
17. 'हिंदू मग पर पाँव न राखौ। का जो बहुतै हिंदी भाख्य' - पंक्ति किसकी है?
18. पद्धडिया बंध का प्रवर्तक किसे माना जाता है?
19. 'वाल्मीकि ने सर्वप्रथम नर काव्य का प्रवर्तन किया'- किसने कहा?
20. 'घंटा-पंथ' नाटक का रचनाकार कौन है?

उत्तर

1. गिरिजाकुमार माथुर
2. राही मासूम रज़ा
3. महेश दर्पण
4. प्रेमचंद
5. लोठार लुत्से
6. गणेश शंकर विद्यार्थी
7. गिरीशचंद्र श्रीवास्तव
8. अमृतराय
9. राजेश जोशी
10. गदाधर भट्ट
11. लाला भगवानदीन
12. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
13. कृष्ण बिहारी मिश्र
14. यशपाल
15. नाट्यशास्त्र
16. केशवप्रसाद मिश्र
17. नूर मुहम्मद
18. चतुर्मुख
19. रवींद्रनाथ ठागोर
20. राधेश्याम कथावाचक

उच्च रैंक प्राप्त विजेताओं को आदरणीय राज्यपाल प्रमाण पत्र प्रदान करते हैं।

RNI No. 7942/1966
Date of Publication :15-07-2025
Date of posting : 20th of Every month

KERAL JYOTI

JULY 2025

Vol. No. 62, Issue No.04
Regn. No. KL/TV(S) 381/2025-2027
Price Rs. 40/-

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha approved for School Libraries by the Education Dept., Govt. of Kerala as per notification No. B-3 / 4036/83 SIE dated 20-9-1985
Approved by University of Kerala as per order No. Ac. A II / 1 / 31965 / Std. Journals/2013 / dtd : 27-6-2013

दीक्षांत समारोह की विविध झलकियाँ

केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम-695014 के लिए मंत्री अ.व.डॉ.मधु बी द्वारा प्रकाशित, राष्ट्रवाणी मुद्रणालय केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम-695014 में मुद्रित प्रो.डी.तंकप्पन नायर, डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन व डॉ.रंजीत रविशैलम द्वारा संपादित

Published by the Secretary, Adv. Dr. B. Madhu for Kerala Hindi Prachar Sabha, Tvpm-695014
Printed at Rashtravani Mudranalaya, Kerala Hindi Prachar Sabha, Tvpm-695014 & edited by Prof.D.Thankappan Nair, Dr.M.S.Vinayachandran and Dr.Renjith Ravisailam